यूनियन सृजन

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष 10, अंक - 1, मुंबई, जनवरी-मार्च, 2025

राइज़

RISE निरंतर प्रगति से सम्मिलित उन्नति

खुदरा कारोबार । आय

Retail Business । Income

स्ट्रेस प्रबंधन । सहभागिता

Stress Management । Engagement

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक

Union Bank of India
Good people to bank with

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक
Union Bank of India
Good people to bank with

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि- 09.05.2025
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका
वर्ष 10, अंक - 1, मुंबई, जनवरी-मार्च, 2025

मुख्य संरक्षक

ए. मणिमेखलै,
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संरक्षक

नितेश रंजन
कार्यपालक निदेशक

रामसुब्रमणियन एस
कार्यपालक निदेशक

संजय रुद्र
कार्यपालक निदेशक

पंकज द्विवेदी
कार्यपालक निदेशक

मुख्य संपादक

चन्द्र मोहन मिनोचा
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं)

संपादकीय सलाहकार

गिरीश चंद्र जोशी
महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)

जी. एन. दास
महाप्रबंधक

कार्यकारी संपादक

विवेकानंद
सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.)

संपादक

गायत्री रवि किरण
मुख्य प्रबंधक (रा.भा.)

संपादकीय सहयोग

मोहित सिंह ठाकुर
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)

जागृति उपाध्याय
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)

परिदृश्य

प्रिय यूनियनाइट्स,

सर्वप्रथम मैं आपके सराहनीय कार्य और समर्पण हेतु आप सभी का अभिनंदन करती हूँ । हमने आपके प्रयासों से वित्तीय वर्ष – 2025 की चुनौतियों को पार किया और बैंकिंग उद्योग में अग्रणी बने रहे। मैं सभी पदोन्नति प्राप्त यूनियनाइट्स को हार्दिक बधाई देती हूँ । मुझे विश्वास है कि आप अपनी नई जिम्मेदारियों को बखूबी निभाएंगे और बैंक की प्रगति में सहयोग देंगे। वित्तीय वर्ष 2024-25 की तीसरी तिमाही हेतु ईज़ 7.0 मानकों में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करना बैंक के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

वित्तीय वर्ष 2025 के दौरान बैंक ने ग्राहक सेवा उत्कृष्टता, परिचालनिक दक्षता और कर्मचारी कौशल विकास के लिए पहल की हैं, जिनमें कासा संग्रहण हेतु लीप, 21 रुसू क्षेत्रों में प्रीमियम शाखाओं की स्थापना, ग्राहक सहायता हेतु डिजिटल संपर्क केंद्र, महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करने हेतु नारी शक्ति शाखाओं की स्थापना और एमएसएमई में अपनी उपस्थिति बढ़ाने हेतु एमएसएमई उद्यमिता कानक्लेव का आयोजन किया है, जिसके परिणामस्वरूप कुल कारोबार में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर लगभग 8% वृद्धि हुई है। हमने खुदरा मीयादी जमा और खुदरा ऋण में भी अच्छी वृद्धि दर्ज की है। इस उपलब्धि हेतु मैं फील्ड में कार्यरत सभी स्टाफ सदस्यों की सराहना करती हूँ।

कर्मचारियों में नेतृत्व विकास हेतु हमने एकम तथा यूनियन अद्वित कार्यक्रम का शुभारंभ किया है। "मेरा बैंक मेरा गौरव" संकल्पना पर आधारित बैठकों के माध्यम से हमने संगठनात्मक संस्कृति को सशक्त बनाया है। कारोबार से आगे सोचते हुए हमने बैंकिंग उद्योग में पहली बार मानव संसाधन क्षेत्र के विख्यात व्यक्तियों को एक साथ लाते हुए इग्नाइट 25 कॉनक्लेव का आयोजन किया है। इसके अतिरिक्त जेनरेटिव एआई, साइबर सुरक्षा और फिनटेक पर आधारित आइडिया हैकेथॉन - 2025 का आयोजन किया है।

ग्राहक संपर्क और बैंक के कारोबार विकास की गतिविधियों को आगे बढ़ते हुए इस वर्ष भी कारोबार विकास हेतु खुदरा ऋण, एमएसएमई और कासा क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। बाजार में बैंक की उपस्थिति को बढ़ाने और संगठनात्मक नेटवर्क को सुव्यवस्थित करने हेतु 01 अप्रैल, 2025 से बैंक के 4 नए अंचल कार्यालय, 6 नए क्षेत्रीय कार्यालय खोले गए हैं तथा क्षेत्रों / शाखाओं का पुनर्गठन किया गया है। वित्तीय वर्ष के प्रारंभ से ही उचित परिचालनिक व्यवस्था एवं प्रशासनिक आयोजना और वांछित लक्ष्य की दिशा में संकल्पपूर्ण प्रयास किए जाने हेतु वर्टिकल प्रमुख/ अंचल प्रमुख / क्षेत्र प्रमुख और अन्य कार्यपालकों की पदस्थी की जा चुकी है।

कारोबार आयोजना के साथ-साथ दैनिक परिचालनिक अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए अनुपालन सुनिश्चित करना, आवधिक समीक्षा के माध्यम से अच्छे कार्यनिष्पादन हेतु प्रोत्साहन और बेहतर कार्य हेतु मार्गदर्शन और सुधार के लिए निरंतर प्रयास किए जाने चाहिए। अनुपालन से संबंधित प्रत्येक मद को पूर्ण गंभीरता से लिया जाना अपेक्षित है। विनियामक दिशा-निर्देशों का अनुपालन और रिपोर्टिंग के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता है। मैं सभी स्टाफ सदस्यों से आग्रह करती हूँ कि नीतिगत दिशा-निर्देशों का सख्ती से अनुपालन सुनिश्चित करें, समय से अपेक्षित रिपोर्ट प्रस्तुत करें और रिकॉर्ड के रख-रखाव पर विशेष ध्यान दें।

मैं आशा करती हूँ कि हम सब मिलकर अपने सामूहिक प्रयास, दृढ़ संकल्प और परिश्रम से सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे। मैं आपके समर्पण और प्रतिबद्धता के लिए पुन: आप सभी का अभिनंदन करती हूँ । आईए, इस वर्ष हम सब मिलकर यूनियन बैंक की उत्कृष्टता का परचम लहराएं । मेरा बैंक मेरा गौरव !

शुभकामनाओं सहित,

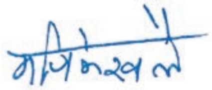

ए. मणिमेखलै,
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

अवलोकन

प्रिय यूनियनाइट्स,

यूनियन सृजन के मार्च, 2025 के माध्यम से आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि नए वित्तीय वर्ष में यूनियनाइट्स बैंक की विकास गति को बढ़ाने के लिए तत्पर हैं।

यूनियन बैंक ने नवाचार और ग्राहक केंद्रितता के उच्च मानकों को स्थापित करते हुए बैंकिंग उद्योग में अपने लिए गौरव का स्थान प्राप्त किया है। आप सब जानते हैं कि ईज़ – 7 के अंतर्गत बैंक ने अपने कार्यनिष्पादन की उत्कृष्टता को प्रदर्शित कर वित्तीय वर्ष 2025 की तृतीय तिमाही में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। हमने 2 प्रमुख थीम में प्रथम स्थान (यथा – विकसित भारत हेतु बैंकिंग तथा जोखिम / धोखधड़ी प्रबंधन एवं वसूली) तथा दो थीम में द्वितीय स्थान (यथा – नवीन युग की प्रौद्योगिकी अपनाना तथा उभरती प्राथमिकताओं के लिए कर्मचारियों को तैयार करना) प्राप्त किया है।

हमें कार्यनिष्पादन के साथ-साथ अनुपालन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। यह न केवल विनियामक के दृष्टिकोण से आवश्यक है बल्कि बैंक के दीर्घकालिक सफलता के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनुपालन और जोखिम प्रबंधन की संस्कृति को अपनाकर हम बैंक के हितों की रक्षा कर पाएंगे। एक स्वस्थ अनुपालन संस्कृति के अंतर्गत कर्मचारी निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन करते हुए ग्राहकों और बैंक के हितों के अनुरूप सही निर्णय लेते हैं। ऐसी संस्कृति नियामकों, हितधारकों और जनता में विश्वास पैदा करती है, जिससे बैंकिंग उद्योग की निरंतर वृद्धि और स्थिरता सुनिश्चित होती है। प्रथम तिमाही में विनियामक रिपोर्टिंग और संविधिक लेखा परीक्षा के दृष्टिगत यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

नए वित्तीय वर्ष में 4 नए अंचल कार्यालय और 6 नए क्षेत्रीय कार्यालयों के साथ बैंक अपने विस्तृत नेटवर्क को और सुव्यवस्थित बना रहा है। इन नए प्रशासनिक कार्यालयों के माध्यम से बैंक की शाखा नेटवर्क के परिचालनिक निगरानी में सुगमता आएगी और इन क्षेत्रों में बैंक उपस्थिति भी सुदृढ़ होगी। बैंक की छवि में बढ़ोत्तरी और विस्तार के लिए फील्ड स्टाफ द्वारा कार्य किया जाना अपेक्षित है। मुझे विश्वास है कि इन नए कार्यालयों के कार्यक्षेत्र में यूनियन बैंक के कारोबार में तेजी से वृद्धि होगी।

यूनियन बैंक ने सदैव ग्राहक को प्राथमिकता दी है और अपने ग्राहकों को बेहतरीन सेवा उपलब्ध करना बैंक का विज़न है। ग्राहकों के साथ सुदृढ़ एवं स्थायी संबंध स्थापित करना और ग्राहकों के लिए उपयुक्त सेवाएं प्रदान करने हेतु बैंक प्रतिबद्ध है। हर वर्ष हम इसी प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए अपने कार्य और कार्यशैली का परिशीलन करते हुए सुव्यवस्थित कार्यप्रणाली के साथ आगे बढ़ते हैं। इस वर्ष हेतु निर्धारित थीम 'राइज़' हमारी कार्यप्रणाली को दर्शाता है। खुदरा कारोबार, आय, स्ट्रेस प्रबंधन तथा सहभागिता के आधार पर कारोबारी लक्ष्य प्राप्त करना और ग्राहक सेवा उत्कृष्टता हासिल करना इस वर्ष की कार्ययोजना है।

मुझे खुशी है कि यूनियन सृजन के इस अंक के माध्यम से बैंकिंग से संबंधित विभिन्न विषयों के लेख प्रकाशित किए गए हैं। बैंक के कर्मचारियों द्वारा बैंकिंग से जुड़े सभी पहलुओं की जानकारी रखना और अपने कार्यक्षेत्र से संबंधित मामलों की गहन समझ प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है। मैं इस अंक के लेखकों और यूनियन सृजन के संपादकीय मंडल को शुभकामनाएं देता हूँ और आशा करता हूँ कि गृह पत्रिका में रोचक सामग्री का समावेश इसी प्रकार जारी रहेगा।

शुभकामनाओं सहित

(नितेश रंजन)
कार्यपालक निदेशक

अवलोकन

प्रिय यूनियनाइट्स,

यूनियन सृजन के मार्च, 2025 के माध्यम से आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। मुझे उम्मीद है कि नया वित्तीय वर्ष बैंक और स्टाफ दोनों की प्रगति, समृद्धि और सफलता के लिए अच्छा साबित होगा। यूनियन सृजन में वैविध्यपूर्ण और जानकारी युक्त लेख प्रकाशित करने हेतु मैं इस अंक के लेखक और संपादकीय टीम की सराहना करता हूँ ।

जैसा कि आपको विदित है, हम हर वर्ष एक थीम को अपनी कार्ययोजना के केंद्र में रख कर कार्य करते हैं। इस वर्ष भी बैंक ने एक थीम का चयन किया है 'राइज़' जिसका शाब्दिक अर्थ है उन्नति। इस दिशा में 'राइज़' थीम के अंतर्गत विभिन्न पहलुओं पर ध्यान दिया जाएगा। इस थीम के 4 प्रमुख उप लक्ष्य हैं- खुदरा कारोबार, आय, स्ट्रेस प्रबंधन और सहभागिता। खुदरा कारोबार से बैंक के ग्राहक आधार और पहुंच में वृद्धि होती है। साथ ही स्थिर राजस्व के वैविध्यपूर्ण स्रोत उपलब्ध होते हैं। खुदरा कारोबार पर ध्यान केंद्रित करके, बैंक वफ़ादार ग्राहक आधार बना सकता है, स्थिर राजस्व उत्पन्न कर सकता है और क्रॉस-सेलिंग तथा अपसेलिंग अवसरों के माध्यम से विकास की राह पर आगे बढ़ सकता है। वैविध्यपूर्ण ग्राहक आधार से प्राप्त ग्राहक अंतर्दृष्टि से बैंक डेटा आधारित उचित निर्णय लेने और बेहतर उत्पाद तैयार करने में सक्षम बन पाएगा।

आय में वृद्धि हेतु हमें ब्याजेतर आय पर ध्यान देने की आवश्यकता है । इस प्रयोजन के लिए हमें अपने ग्राहकों की आवश्यकताओं को पहचान कर उनके लिए उपयुक्त सेवाएं और उत्पादों का सुझाव देना होगा। इस प्रकार तृतीय पक्ष उत्पादों से अर्जित आय का सकारात्मक प्रभाव बैंक की लाभप्रदता पर पड़ता है। उच्च प्रतिफल युक्त अग्रिमों के संग्रहण से बैंक की आस्तिगुणवत्ता में सुधार के साथ-साथ ऋण पोर्टफोलियो भी मज़बूत होगा। नए खातों के संग्रहण, ऋण मंजूरी तथा ऋण संवितरण में टर्नअराउंड टाइम को कम करते हुए हम ग्राहक आधार में वृद्धि तथा ग्राहक संतुष्टि भी हासिल कर पाएंगे।

आस्तियों की गुणवत्ता बनाए रखने हेतु अनर्जक आस्तियों में कमी सुनिश्चित करना भी अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए ऋण पोर्टफोलियो को सुदृढ़ करना, दबावग्रस्त आस्तियों की निगरानी तथा वसूली हेतु कारगर प्रयास बहुत ही ज़रूरी है। ऋण प्रस्तावों के प्रोसेसिंग में सावधानी, संवितरित निधियों का सही उपयोग, यूनिट निरीक्षण आदि उपायों को अपनाते हुए ऋण खातों को मानक बनाए रखना चाहिए। एसएमए सूची में आने वाले खातों के संबंध में लगातार फॉलो-अप करते हुए उन्हें मानक श्रेणी में लाने का प्रयास किया जाना चाहिए। अनर्जक आस्तियों की वसूली के लिए हर संभव प्रयास करते हुए बैंक के हितों की रक्षा सुनिश्चित करनी होगा।

उपर्युक्त सभी कार्य स्टाफ की सहभागिता से ही संभव हो पाएंगे। मुझे विश्वास है कि हर एक यूनियनाइट अपने कार्य के प्रति समर्पण, लक्ष्य प्राप्ति का संकल्प और बैंक की उन्नति के प्रति प्रतिबद्ध है। स्टाफ सदस्यों के व्यक्तिगत कल्याण और व्यावसायिक दक्षता में बढ़ोत्तरी हेतु बैंक ने कई पहल किए हैं और यह सिलसिला जारी रहेगा। साथ ही ग्राहकों के हितों की रक्षा करते हुए उन्हें उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने के लिए भी बैंक तत्पर है। नए वित्तीय वर्ष में कर्मचारी सहभागिता और ग्राहक सहभागिता हेतु बैंक कार्यप्रणाली विकसित कर रहा है।

मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप अपने दैनिक कार्य के साथ-साथ अपने विकास, बैंक की उन्नति और ग्राहक सेवा उत्कृष्टता के लिए प्रभावशाली ढंग से कार्य करें।

शुभकामनाओं सहित,

(रामसुब्रमणियन. एस.)
कार्यपालक निदेशक

अवलोकन

प्रिय यूनियनाइट्स,

यूनियन सृजन के मार्च, 2025 अंक के माध्यम से अपने विचार आप सभी के साथ साझा करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। सर्वप्रथम, मैं पदोन्नति प्राप्त यूनियनाइट्स को हार्दिक बधाई देता हूँ । साथ ही मैं सभी यूनियनाइट्स को एक सफल और खुशहाल वित्तीय वर्ष हेतु शुभकामनाएं देता हूँ।

आप सभी जानते हैं कि कारोबार वृद्धि बैंक के लिए सर्वोपरि है। खुदरा ऋण संवर्ग में वृद्धि देखी गई है, तथापि यह वृद्धि खुदरा ऋण के हर श्रेणी में संभव नहीं हो पाई है। हमें प्रयास करना होगा कि हम खुदरा ऋण के अंतर्गत पात्रता के अनुसार और अपने विवेकाधीन शक्तियों से अधिक से अधिक ऋण प्रदान करें। हमें करोबार विकास हेतु हर संभव प्रयास करना होगा। साथ ही अपने दैनिक कार्य में नवाचार करते हुए बेहतर कार्यनिष्पादन करना होगा। हमने यूनियन ग्रीन होम, ग्रीन वेहिकल तथा यूनियन रूफटॉप सोलर योजनाओं का शुभारंभ किया है और हरित उत्पाद हेतु अपनी प्रतिबद्धता दर्शाई है।

किसानों को आवश्यक वित्तपोषण प्रदान करते हुए बैंक कृषि को सहायता प्रदान करता है, जिससे समग्र अर्थव्यवस्था के विकास की गति में तेजी आती है। यह बैंक के लिए प्रमुख क्षेत्रों में से एक है और रैम ऋण का बहुत बड़ा हिस्सा है। बैंक की समावेशी वृद्धि के लिए कृषि ऋण महत्वपूर्ण है। पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष कृषि ऋण संवर्ग में प्रगामी प्रगति हेतु बैंक ने 'एग्री राइज़ 3.5 के- मिशन पॉजिटिव ड्राइव' प्रारंभ किया है। इस अभियान का उद्देश्य कृषि कारोबार में रु.3500 करोड़ की प्रगामी वृद्धि है। इस अभियान से लीड प्राप्त करने और इन्हें बहुमूल्य कारोबार में परिवर्तित करने में भी सहायता मिलेगी।

वित्तीय वर्ष 2025 के दौरान हम नवाचार तथा संगठित प्रयासों से नया करोबार जुटाने और अपने बैंक के मार्केट शेयर को बढ़ाने में कामयाब हुए हैं। वर्तमान वित्तीय वर्ष में बैंकिंग में कई परिवर्तन होने की संभावना है। प्रौद्योगिकी में अभूतपूर्व प्रगति, ग्राहकों की बढ़ती अपेक्षाएं, विनियामक दिशा-निर्देशों का अनुपालन, कारोबार के बदलते ट्रेंड, पर्यावरण और वैश्विक परिस्थितियों का प्रभाव जैसे तत्वों का बैंकिंग कारोबार पर काफी प्रभाव रहता है। तथापि हमें विचलित हुए बिना अपने कारोबारी लक्ष्य प्राप्त करने हेतु कार्य करना होगा। प्रत्येक यूनियनाइट को अपने केआरए के अनुरूप कार्य करते हुए कारोबारी लक्ष्य प्राप्त करने हेतु अपनी कार्यनीति स्वयं बनाने और उस पर अमल करने की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि वित्तीय वर्ष हेतु निर्धारित कारोबारी लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आप सभी समर्पित हैं और इसके लिए अपना पूर्ण सहयोग देंगे।

बैंक उभरती प्रवृत्तियों के लिए कर्मचारियों को तैयार करने और प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें नए कार्य हेतु सक्षम बनाने में विश्वास रखता है। बैंक के कर्मचारियों को भविष्य के अग्रणी के रूप में तैयार करने हेतु नेतृत्व विकास कार्यक्रम 'यूनियन अद्वित' का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत मुख्य प्रबंधक एवं उच्चतर पदों पर पदस्थ अधिकारियों को उद्योग की कृत्रिम बुद्धिमत्ता, संवाद कौशल, विपणन, डिजाइन थिंकिंग आदि महत्वपूर्ण कारोबार पहलुओं के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास, टीम निर्माण आदि सॉफ्ट स्किल्स का भी प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

बैंक ने अपने स्टाफ सदस्यों के शारीरिक एवं मानसिक खुशहाली हेतु आवश्यक समर्थन प्रदान करने के उद्देश्य से यूनियन स्वर के अंतर्गत 1 टू 1 तथा हैबिल्ड जैसी संस्थाओं की ऑनबोर्डिंग की है। इस पहल के अंतर्गत कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य भी स्वास्थ्य संबंधी परामर्श सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं और दैनिक आधार पर योगाभ्यास की सुविधा भी प्राप्त कर सकते हैं। बैंक अपने सेवानिवृत्त स्टाफ को भी स्वास्थ्य संबंधी सहायता प्रदान करता है। बैंक का मानना है कि स्वस्थ कार्यबल से ही एक स्वस्थ संगठन का निर्माण होता है।

मैं पुन: आप सभी से आग्रह करता हूँ कि दैनिक आधार पर संस्था के विकास हेतु प्रयत्नशील रहें और इस वर्ष उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन दर्ज करें।

शुभकामनाओं सहित,

संजय रुद्र

(संजय रुद्र)
कार्यपालक निदेशक

अवलोकन

प्रिय यूनियनाइट्स,

'यूनियन सृजन' के इस नवीन अंक के माध्यम से आप सभी से पुनः संवाद स्थापित करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। यह अंक बैंक के संगठनात्मक मूल्यों, विचारों, अनुभवों और रचनात्मक ऊर्जा का प्रतिबिंब है, जो न केवल ज्ञानवर्धक है, बल्कि हमारे भीतर प्रेरणा और नवीन दृष्टिकोण का संचार भी करता है। मैं इस अंक के लेखकों और संपादक मंडल का अभिनंदन करता हूँ ।

वर्तमान समय तीव्र परिवर्तन और नवाचारों का है, जहाँ बैंकिंग केवल आर्थिक सेवा नहीं रही, बल्कि यह सामाजिक और तकनीकी उत्तरदायित्व की भूमिका निभा रही है। उन्नत प्रौद्योगिकी के साथ-साथ हम ऐसे कई पहलुओं को भी देख रहे हैं जो ग्राहकों की सुरक्षा, विश्वास और पारदर्शिता से जुड़े हुए हैं। डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रयोग के साथ जहां एक ओर नवाचार के द्वार खुले हैं, वहीं दूसरी ओर सावधानी और जागरूकता की आवश्यकता भी बढ़ी है — विशेषकर अब जब ग्राहकों को डीपफेक, डार्कनेट, डिजिटल अरेस्ट जैसे छलपूर्ण डिजिटल गतिविधियों से बचाव की आवश्यकता है।

बैंक ग्राहक सेवा उत्कृष्टता के साथ-साथ ग्राहक जागरूकता के प्रति भी सजग है। अत: समय-समय पर ग्राहकों को इस प्रकार की धोखाधड़ीपूर्ण संदेश / कॉल से बचने और सावधान रहने के लिए बैंक की ओर से संदेश भेजे जाते हैं। साइबर सुरक्षा नियम सभी कर्मचारियों पर लागू होते हैं। बैंक के सभी कर्मचारियों को साइबर सुरक्षा के संबंध में जानकारी होनी चाहिए। इसी उद्देश्य से साइबर सुरक्षा से संबंधित जानकारी स्टाफ को ईमेल और ऑडियो संदेश के रूप में प्रेषित की जाती है।। मैं सभी स्टाफ सदस्यों से आग्रह करता हूँ कि साइबर सुरक्षा को गंभीरता से लें और बैंक के डिजिटल प्रोटोकॉल का अनुपालन सुनिश्चित करें।

ग्राहक आधार में विस्तार के अंतर्गत खुदरा ऋण पर ध्यान देने की आवश्यकता है, जिससे समाज के विभिन्न वर्गों को आर्थिक विकास, कारोबार आदि प्रयोजनों के लिए वित्तपोषण प्राप्त हो पाएगा। जिम्मेदार ऋण विस्तार सुनिश्चित करने और जोखिमों को कम करने के लिए, ऋण प्रोसेसिंग और निगरानी के लिए जारी दिशानिर्देशों का अनुपालन बहुत ज़रूरी है, यथा क्रेडिट स्कोरिंग, वित्तीय विवरण विश्लेषण, उधारकर्ताओं की साख और ऋण हेतु पात्रता का मूल्यांकन करना शामिल है। विवेकपूर्ण ऋण प्रथाओं और नियमित निगरानी के माध्यम से ऋण जोखिमों की पहचान, आकलन और शमन पर ध्यान देने से संबंधित कार्य विनियामक अनिवार्यता ही नहीं बल्कि आस्ति गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु सार्थक उपाय हैं। उधारकर्ताओं की गतिविधियों तथा खातों की नियमित समीक्षा, डीफ़ाल्ट के शुरुआती संकेतों का पता लगाना और संभावित नुकसान को कम करने के लिए तुरंत कार्रवाई करना ऋण निगरानी के महत्वपूर्ण पहलू हैं। भुगतान इतिहास और ऋण उपयोग सहित सटीक और अद्यतित ऋण जानकारी बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है। अंततः, प्रभावी ऋण प्रोसेसिंग और निगरानी बैंक को एक स्वस्थ ऋण पोर्टफोलियो बनाए रखने में सक्षम बनाती है, जिससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है और साथ ही डिफ़ॉल्ट और वित्तीय अस्थिरता के जोखिम को कम किया जा सकता है।

मुझे आशा है कि सभी स्टाफ सदस्य बैंक के दैनिक कार्य में दिशा-निर्देशों और सर्वोत्तम प्रथाओं का पालन करके एक स्थिर और समृद्ध वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में सहयोग देंगे। आइए, हम कार्यनिष्पादन में उत्कृष्टता प्रदर्शित करते हुए अपने बैंक की प्रगामी प्रगति का मार्ग प्रशस्त करें।

शुभकामनाओं सहित,

(पंकज द्विवेदी)
कार्यपालक निदेशक

संपादकीय

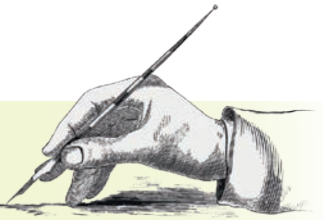

प्रिय पाठकगण,

हम अपने पाठकों को वैविध्यपूर्ण एवं अद्यतन जानकारी उपलब्ध कराने की प्रतिबद्धता को जारी रखते हुए वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु 'यूनियन सृजन' के प्रथम अंक के साथ आपके सम्मुख पुन: प्रस्तुत हुए हैं।

सामान्य अंक के रूप में तैयार किए गए इस अंक में राजभाषा तथा बैंकिंग से संबंधित विविध आयामों पर विचार किया गया है। राजभाषा सृजन खंड के अंतर्गत हिंदी के महत्व की चर्चा की गई है। कार्यान्वयन सृजन खंड के अंतर्गत पाठकों को मानव संसाधन से जुड़ी बैंकिंग शब्दावली से परिचित कराने का प्रयास किया गया है। बैंकिंग से जुड़े लेखों में संगामी लेखा परीक्षा और भारतीय अर्थव्यवस्था पर टैरिफ का प्रभाव लेख शामिल किए गए हैं। कृषि और उद्योग में ड्रोन का उपयोग लेख के माध्यम से प्रौद्योगिक प्रगति की झलक मिलती है तो साइबर सुरक्षा जागरूकता तथा डार्क पैटर्न लेख तेज़ी से बढ़ती प्रौद्योगिकी और इससे उत्पन्न नकारात्मक प्रवृत्तियों के प्रति जागरूकता बढ़ाते हैं । साथ ही बैंक द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित राजभाषा से जुड़ी गतिविधियों की तस्वीरें बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति बयाँ करते हैं।

पत्रिका के इस अंक में भाषा, साहित्य, संस्कृति और विरासत से जुड़ी रचनाएँ शामिल हैं, जो हमारी पहचान और संवेदनशीलता को उजागर करती हैं। लेखन, यात्रा अनुभव, ऐतिहासिक स्थलों की स्मृतियाँ, जीवन की गहराइयों को छूती कविताएँ — ये सब हमें मनोरंजन के साथ-साथ आत्मचिंतन और सामाजिक बंधन की अनुभूति कराते हैं। इस अंक के साहित्य खंड में पाठक पद्मश्री मालती जोशी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय प्राप्त करेंगे। 'मैराथन' में वर्णित अविस्मरणीय घटना को पढ़कर पाठक लेखक के साथ जीवन की दौड़ के अनुभव साझा करेंगे। 'रज पर्व' लेख में पाठकों को ओडिशा के समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर की झलक मिलेगी।

प्रत्येक अंक के माध्यम से हम अपने पाठकों को विभिन्न दर्शनीय स्थलों की यात्रा कराते हैं। इस परिपाटी को जारी रखते हुए लोहागढ़ किला, अंडमान निकोबार द्वीप समूह तथा तमिलनाडु के कुछ प्रमुख क्षेत्रों का यात्रा वृत्तांत इस अंक में शामिल किए गए हैं। आज के भगदड़ भरी जीवन में तनाव प्रबंधन एवं मानसिक जागरूकता के उपाय के रूप में 'डायरी' लेखन का सहारा लिया जा सकता है, जिसका परिचय इस अंक में शामिल है।

'यूनियन सृजन' केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि प्रत्येक यूनियनाइट के लिए स्वयं को व्यक्त करने का एक मुखरित मंच है। स्टाफ सदस्य इसमें प्रकाशित लेख, कविता, संस्मरण या विचार के माध्यम से न केवल अपनी रचनात्मकता को उजागर करते हैं, बल्कि अपनी भावनाओं, अनुभवों और दृष्टिकोण को पूरे संगठन के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। यह प्रक्रिया आत्मविश्वास बढ़ाने के साथ-साथ लेखन कौशल, विश्लेषण क्षमता और संवाद शैली को भी निखारती है। साथ ही, यह सम्मान और प्रेरणा का स्रोत बनती है तथा सामूहिक पहचान और जुड़ाव की भावना को भी प्रबल करती है। हम अपने पाठकों से अनुरोध करते हैं कि इस मंच को और अधिक जीवंत बनाएं — आप भी अपने विचार साझा करें और संगठनात्मक संस्कृति निर्माण में भागीदारी करें। इस दिशा में 'यूनियन सृजन' में प्रेरणा, नवाचार, समावेशिता और संस्कृति के तत्वों के समावेश से इसकी अविरल सृजनात्मक प्रवाह को आगे बढ़ाने हेतु लेख, कविता, यात्रा वृत्तांत आदि के रूप में अपना सहयोग प्रदान करें।

हम 'यूनियन सृजन' के लेखकवर्ग को उनके योगदान हेतु धन्यवाद देते हैं। संपादकीय सलाहकारों के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं, उनके सतत मार्गदर्शन से हम गृह पत्रिका की साज-सज्जा और कलेवर को आकर्षक बनाने में सफल हो पाते हैं। हमें विश्वास है कि 'यूनियन सृजन' का यह अंक आपको पसंद आएगा। 'यूनियन सृजन' की धरोहर को समृद्ध बनाने की दिशा में आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीया

गायत्री रवि किरण

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक
Union Bank of India
Good people to bank with

यूनियन सृजन
प्रकाशन तिथि- 09.05.2025
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका
वर्ष 10, अंक - 1, मुंबई, जनवरी-मार्च, 2025

अनुक्रमणिका

हिंदी का महत्व	विजय बिष्ट	1
मानव संसाधन विभाग की शब्दावली	मयंक शर्मा	3
भारतीय अर्थव्यवस्था पर टैरिफ का प्रभाव	अंकुर नरुला	5
डार्क पैटर्न: क्या आप भी एक शिकार हैं?	नेहा गौर	8
कविता - दहलीज़	अभीनंदन श्रीवास्तव	10
कृषि और उद्योग क्षेत्र में ड्रोन तकनीक का उपयोग	अभिषेक कुमार चौबे	11
कविता - चतुर मशीन भोला इंसान	नेहा	12
साइबर सुरक्षा जागरूकता	मनु	13
वैश्वीकरण का भारतीय कला, संस्कृति और विरासत पर प्रभाव	अभिजीत ताकवाले	15
रज पर्व: नारीत्व, प्रकृति और उत्सव का अनोखा संगम	आदित्य प्रसाद दास	17
महिला विशेष कार्यशाला		19
विश्व हिंदी दिवस -2025		21
नराकास पुरस्कार		23
पद्म श्री – मालती जोशी	उपासना सिरसैया	25
मेरी यात्रा: एक आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अनुभव	दीपिका मालवीय	28
कविता - भाषा: मानव की पहचान	शुभम गुप्ता सम्भल	28
लोहागढ़ किला: अजेय किले की गौरवगाथा	के शक्ति प्रकाश	31
कविता - जुनून	टंकेश्वर खाँ	32
अंडमान निकोबार द्वीप समूह	अखिलेश कुमार सिन्हा	33
तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला		35
पुस्तक समीक्षा – द होम एंड द वर्ल्ड	मनप्रीत सिंह	36
डायरी	आशिष रंजन	38
कविता - फिर से बचपन	कुलदीप पाठक	39
मैराथन	शांतनु कुमार	40
गर्मियों में स्वास्थ्य और सुरक्षात्मक उपाय	अभिमन्यु रथ	42
कविता - जीवन	कुणाल कुमार सिंह	43
राजभाषा समाचार		44
आपकी नज़र में		49

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग, मानव संसाधन विभाग
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित
ई-मेल: union.srijan@unionbankofindia.bank | gayathri.ravikiran@unionbankofindia.bank
Tel.: 022-41829288 | Mob.: 9849615496

Printed and Published by Gayathri Ravi Kiran on behalf of Union Bank of India, Printed at Printrade Issues (INDIA) Pvt. Ltd., Plot No. EL-179, TTC Industrial Area, Electronic Zone, Mahape, Dist. Thane - 400 710, Maharashtra and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai-400 021.

यूनियन सृजन में प्रकाशित विचार लेखक के अपने हैं. प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

हिंदी का महत्व

हिंदी भारतीय संस्कृति में एक विशेष स्थान रखती है, यह सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है और देश की विविधता के जीवंत ताने-बाने में एक आवश्यक धागा है। यह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता की आत्मा है। भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी है। यह भारत की राजभाषा और प्रमुख संपर्क भाषा के रूप में जानी जाती है। भारतीय जनगणना (2011) के अनुसार, लगभग 44% जनसंख्या हिंदी को अपनी मातृभाषा के रूप में बोलते हैं। इसके अलावा, यह कई लोगों द्वारा दूसरी या तीसरी भाषा के रूप में भी बोली और समझी जाती है।

हिंदी भाषा का इतिहास भारत की सांस्कृतिक और भाषाई धरोहर का प्रतीक है। यह भाषा संस्कृत से विकसित हुई और भारतीय आर्य भाषाओं की एक प्रमुख शाखा है। हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत 14 सितंबर 1949 को दिया गया। इसे भारत की राजभाषा घोषित किया गया, जो कि भारतीय प्रशासन और संवाद का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इस ऐतिहासिक निर्णय के तहत हिंदी को देवनागरी लिपि में और अंकों के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को अपनाया गया।

हिंदी भाषा का महत्व भारत और विश्व दोनों में विशिष्ट है। यह न केवल एक संवाद का माध्यम है, बल्कि भारतीय संस्कृति, परंपरा और एकता की पहचान भी है। यहाँ हिंदी भाषा के महत्व को विभिन्न पहलुओं से समझा जा सकता है:

1. **संस्कृति का प्रतिनिधित्व:**

   हिंदी भारतीय संस्कृति और परंपरा का प्रतिबिंब है। यह हमारी कहानियों, साहित्य, त्यौहारों और रीति-रिवाजों को व्यक्त करने का माध्यम है। हिंदी सैकड़ों भाषाओं और बोलियों वाले देश में एक एकीकृत भाषा के रूप में कार्य करती है। हिंदी भाषा ने भारत के गौरवशाली इतिहास और परंपराओं को संरक्षित किया है। तुलसीदास की रामचरितमानस और प्रेमचंद की कहानियां आज भी भारतीय समाज के मूल्यों और संघर्षों को प्रतिबिंबित करती हैं। हिंदी लोकगीत, कहावतें, और कविताएँ भारत की विविधता, मान्यताओं और रीति-रिवाजों को व्यक्त करती हैं। यह भाषा ग्रामीण और शहरी संस्कृति दोनों को एक सूत्र में बांधती है। हिंदी भाषा में मौजूद उपदेशात्मक कहानियाँ और कविताएँ जैसे पंचतंत्र और कवि बिहारी के दोहे, समाज को नैतिक और सांस्कृतिक शिक्षा देने का कार्य करती हैं।

2. **राष्ट्रीय एकता का प्रतीक:**

   हिंदी देश के विभिन्न हिस्सों को एकजुट करने वाली भाषा है। यह भारत की विविधताओं भरी संस्कृति और भाषाई परंपराओं के बीच एक ऐसा माध्यम है, जो विभिन्न समुदायों और क्षेत्रों को आपस में जोड़ती है। भारत के विभिन्न राज्यों में हिंदी एक आम संवाद की भाषा है, जो भिन्न-भिन्न मातृभाषाओं वाले लोगों को संवाद स्थापित करने में मदद करती है। हिंदी साहित्य, संगीत, सिनेमा, और नाट्य कला पूरे देश में लोकप्रिय हैं। ये माध्यम न केवल हिंदी बोलने वालों को बल्कि अन्य भाषाओं के लोगों को भी जोड़ते हैं। संविधान द्वारा हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया गया है, जो इसे राष्ट्रीय स्तर पर एक महत्वपूर्ण पहचान प्रदान करता है। इससे प्रशासनिक स्तर पर एकता बनाए रखने में भी सहायता मिलती है। हिंदी भाषा में वह मिठास और सरलता है, जो लोगों के दिलों को जोड़ने में सक्षम है। यह केवल भाषा नहीं, बल्कि एक भावना है जो सभी को जोड़ती है।

3. **संचार का साधन:**

   हिंदी भाषा संचार का एक सशक्त और व्यापक साधन है, जो समाज, संस्कृति, और विविध समुदायों के बीच संवाद स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। यह भाषा सरलता, भावुकता, और व्यापकता के गुणों से परिपूर्ण है, जो इसे एक प्रभावशाली माध्यम बनाते हैं। हिंदी व्यापारिक लेन-देन और सरकारी कामकाज में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सरकारी नोटिस, दस्तावेज़, और कानून हिंदी में उपलब्ध होते हैं, जो इसे प्रशासन का आधार बनाते हैं। यह भाषा अपनी काव्यात्मक और अभिव्यंजक प्रकृति के लिए जानी जाती है, जो इसे सिनेमा, संगीत या साहित्य के माध्यम से भावनात्मक कहानी कहने के लिए एक पसंदीदा माध्यम बनाती है।

4. **साहित्य और कला:**

   हिंदी साहित्य ने विश्व को अद्वितीय कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास और नाटक दिए हैं। हिंदी ने तुलसीदास, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, और हरिवंश राय बच्चन जैसे दिग्गजों द्वारा कविता, उपन्यास और नाटकों सहित साहित्य की एक समृद्ध परंपरा को जन्म दिया है। यह साहित्य भारतीय समाज के लोकाचार, संघर्ष और आकांक्षाओं को दर्शाता है।

5. **आर्थिक और सामाजिक योगदान:**

   हिंदी का व्यापार, फिल्म, और अन्य उद्योगों में बड़ा योगदान है। हिंदी फिल्म उद्योग (बॉलीवुड), टेलीविज़न, और डिजिटल मीडिया ने वैश्विक स्तर पर भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूती दी है। हिंदी सिनेमा और संगीत न केवल घरेलू बल्कि अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी लोकप्रिय हैं। हिंदी भारत के बड़े बाजारों और व्यापारिक समुदायों की

प्रमुख भाषा है। विज्ञापन, ब्रांडिंग, और मार्केटिंग में हिंदी का प्रयोग कंपनियों को ग्राहकों तक अपनी पहुंच बढ़ाने में मदद करता है।

अंतरराष्ट्रीय मंच पर हिंदी भाषा

हिंदी भाषा न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और इतिहास की वाहक भी है। इसे वैश्विक पहचान दिलाने में भारतीय प्रवासी समुदाय, सरकार और विभिन्न संस्थाओं की बड़ी भूमिका रही है। हिंदी साहित्य ने अपने अनोखे रंग और गहराई के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी विशेष पहचान बनाई है। इसकी ऐतिहासिक समृद्धि, विविधता, और मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति ने इसे विश्वभर में सराहा है। यहाँ हिंदी की वैश्विक पहचान के कुछ प्रमुख पहलू दिए गए हैं:

1. **विश्व में हिंदी बोलने वाले लोग:**

   हिंदी दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। भारत में लगभग 43-44% जनसंख्या हिंदी को अपनी मातृभाषा के रूप में बोलते हैं। इसके अलावा, यह दूसरी और तीसरी भाषा के रूप में भी लाखों लोगों द्वारा समझी और बोली जाती है। भारत के बाहर, नेपाल, मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी, गुयाना और ट्रिनिडाड एवं टोबैगो जैसे देशों में भी हिंदी बोली जाती है। फिजी और मॉरीशस में भारतीय मूल के लोगों ने हिंदी भाषा को पीढ़ियों से जिंदा रखा है। "फिजियन हिंदी" और "मॉरीशियन हिंदी" वहां की संस्कृति का हिस्सा बन चुकी हैं।

2. **संयुक्त राष्ट्र में हिंदी का प्रयोग:**

   हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर मान्यता दिलाने के लिए भारत सरकार लगातार प्रयास कर रही भारत के कई राजनयिक और नेता, जैसे प्रधानमंत्री और अन्य उच्च अधिकारी, संयुक्त राष्ट्र की महासभा (यूएनजीए) जैसे मंचों पर हिंदी में भाषण देते हैं। इससे हिंदी को एक अंतरराष्ट्रीय पहचान और सम्मान मिलता है। संयुक्त राष्ट्र ने अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर हिंदी पृष्ठों को शामिल किया है। इससे हिंदी भाषी लोगों को संयुक्त राष्ट्र की कार्यप्रणाली और उद्देश्यों को उनकी मातृभाषा में समझने का अवसर मिलता है।

3. **महान साहित्यकारों के योगदान:**

   मुंशी प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, हरिवंश राय बच्चन और जयशंकर प्रसाद जैसे हिंदी साहित्यकारों की कृतियाँ अन्य भाषाओं में अनुदित होकर विश्व भर में पढ़ी गई हैं। उनकी रचनाओं ने भारतीय संस्कृति और समाज के विविध पक्षों को अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर और पहचान की अभिव्यक्ति है। यह हमारे विचारों, मूल्यों और परंपराओं को संजोए हुए है। हिंदी का संरक्षण और संवर्धन करना न केवल हमारी जिम्मेदारी है, बल्कि यह हमारी अगली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य सांस्कृतिक उपहार भी है। वैश्वीकरण और तकनीकी युग के दबाव में, हिंदी के प्रति हमारा लगाव और इसे दैनिक जीवन में अपनाना इसका भविष्य सुनिश्चित करेगा।

विजय बिष्ट
जेडएलसी, गुरुग्राम

दिनांक 17.02.2025 को जयपुर में मध्य, पश्चिम एवं उत्तरी क्षेत्रों का संयुक्त राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया. इस अवसर पर यूनियन बैंक ऑफ इंडिया क्षे. का., बड़ौदा को वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए 'ख' क्षेत्र में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. माननीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राव एवं माननीय मुख्यमंत्री राजस्थान श्री भजनलाल शर्मा से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री अंकुर सर्राफ, क्षेत्र प्रमुख, बड़ौदा एवं श्री सत्येंद्र कुमार, वरिष्ठ प्रबन्धक(राभा).

मानव संसाधन विभाग की शब्दावली

मानव संसाधन विभाग किसी भी संगठन का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो संगठन के उद्देश्यों और कर्मचारियों की आवश्यकताओं के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। इस विभाग का मुख्य कार्य कर्मचारियों के चयन, प्रशिक्षण, विकास और उनके कल्याण से जुड़ा होता है।

मानव संसाधन विभाग भर्ती प्रक्रिया से लेकर कर्मचारियों की कार्यक्षमता को बेहतर बनाने, उन्हें प्रेरित करने, प्रशिक्षण प्रदान करने संगठन के लक्ष्यों को पूरा करने में सुक्ष्म बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विभाग कर्मचारियों के कार्यनिष्पादन का मूल्यांकन करता है और उनके व्यक्तिगत एवं पेशेवर विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है।

इसके अतिरिक्त, मानव संसाधन विभाग वेतन, भत्ते और अन्य लाभों का प्रबंधन करता है, साथ ही कानूनी अनुपालन सुनिश्चित करता है। यह विभाग संगठन में सकारात्मक कार्य संस्कृति का निर्माण करता है और कर्मचारियों की शिकायतों या विवादों को हल करता है।

मानव संसाधन विभाग संगठन के सुचारू संचालन और दीर्घकालिक सफलता का आधार है। यह न केवल कर्मचारियों की उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है, बल्कि संगठन को एक सशक्त और प्रेरित कार्यबल प्रदान करता है।

हमारे बैंक में एक मजबूत और प्रगतिशील मानव संसाधन नीति है और बैंक ने एक पारदर्शी, उद्देश्यपूर्ण, और विश्वसनीय कार्यनिष्पादन प्रबंधन प्रणाली अपनाई है जो करियर प्रगति और प्रशिक्षण आवश्यकताओं के साथ एकीकृत है।

मानव संसाधन विभाग में बहुधा प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या यहाँ प्रस्तुत है:

दैनिक कार्य में प्रयोग हेतु शब्दावली

Administration	प्रशासन
Allowance	भत्ता
Appointment	नियुक्ति
Appraisal	मूल्यांकन
Arrear	बकाया
Bipartite	द्विपक्षीय
Circular	परिपत्र
Compensation	मुआवजा/प्रतिकर/क्षतिपूर्ति
Compliance	संवैधानिक अनुपालन
Confidential	गोपनीय

Conflict Resolution	संघर्ष समाधान
Development	विकास
Discipline	अनुशासन
Division	प्रभाग
Employee Assistance	कर्मचारी सहायता
Employee Benefits	कर्मचारी लाभ
Employee Engagement	कर्मचारी सहभागिता
Employee Grievance	कर्मचारी शिकायत
Employee Motivation	कर्मचारी प्रेरणा
Employee Welfare	कर्मचारी कल्याण

Employer	नियोक्ता
Empowerment	सशक्तिकरण
Ethics	नैतिकता
Full time	पूर्णकालिक
Human Capital	मानव पूंजी
Implementation	कार्यान्वयन
Incentive	प्रोत्साहन
Interview	साक्षात्कार
Interview Process	साक्षात्कार प्रक्रिया
Job Description	कार्य विवरण
Job Satisfaction	कार्य संतुष्टि
Leadership	नेतृत्व
Leave	अवकाश
Legal Compliance	कानूनी अनुपालन
Management	प्रबंधन
Misconduct	कदाचार
Motivation	प्रेरणा
Objection	आपत्ति
Officer	अधिकारी
Opportunity	अवसर
Organisation	संगठन
Organizational Structure	संगठनात्मक संरचना
Performance	कार्य निष्पादन
Performance Appraisal	कार्यनिष्पादन मूल्यांकन
Performance Management	कार्यनिष्पादन प्रबंधन
Planning	आयोजना
Policy	नीति
Posting	पदस्थापन/तैनाती
Probation	परिवीक्षा
Productivity	उत्पादकता
Program	कार्यक्रम

Progressive	प्रगतिशील
Promotion	पदोन्नति
Proposal	प्रस्ताव
Recruitment	भर्ती
Remote Work	रिमोट वर्क
Resignation	त्यागपत्र
Retention	प्रतिधारण
Retirement	सेवानिवृत्ति
Salary	वेतन
Selection	चयन
Settlement	समझौता
Skill	कौशल
Strategy	कार्यनीति
Suspension	निलंबन
Team Building	टीम निर्माण
Time Management	समय प्रबंधन
Training	प्रशिक्षण
Transfer	स्थानांतरण
Vacancy	रिक्ति
Welfare program	कल्याण कार्यक्रम
Work Culture	कार्य संस्कृति
Work Plan	कार्य योजना
Workforce	कार्यबल
Workforce Planning	कार्यबल आयोजना
Workmen	कामगार

मयंक शर्मा
कें. का., मुंबई

भारतीय अर्थव्यवस्था पर टैरिफ का प्रभाव

वैश्वीकरण के इस दौर में अंतरराष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक नीतियाँ लगातार बदलती रहती हैं। नीति निर्माता देशों के बीच व्यापारिक सम्बन्धों में सुधार, प्रतिस्पर्धा और सामंजस्य बनाए रखने के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता हैं। इन विधियों में एक प्रमुख विधि है- टैरिफ। भारत, जो पिछले कुछ दशकों में तेज़ी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गया है, पर टैरिफ नीतियों का महत्वपूर्ण प्रभाव देखा जा सकता है। आइए टैरिफ के विभिन्न पहलुओं, उसके लाभ और चुनौतियों पर चर्चा करें और यह समझने का प्रयास करें कि ये नीतियाँ भारतीय अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित करती हैं।

टैरिफ: परिभाषा और महत्व

टैरिफ वह शुल्क है, जो किसी देश की सरकार विदेशी माल के आयात पर लगाती है। इसका मुख्य उद्देश्य घरेलू उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से सुरक्षा प्रदान करना, राजस्व अर्जित करना और व्यापारिक संतुलन बनाए रखना होता है।

- **घरेलू सुरक्षा:** टैरिफ से विदेशी उत्पाद महंगे हो जाते हैं, जिससे घरेलू उद्योग अपने उत्पादों को विकसित कर सकते हैं और उन्हें बाज़ार में प्रतिस्पर्धी बने रहने का अवसर मिलता है।
- **राजस्व संग्रह:** टैरिफ एक ऐसा राजस्व स्रोत है, जिसका खर्च विभिन्न विकास कार्यों, आधारभूत संरचना और अन्य सरकारी परियोजनाओं में किया जा सकता है।
- **व्यापारिक संतुलन:** आयात पर टैरिफ लगाने से आयात नियंत्रित रहता है और इससे देश के व्यापारिक घाटे की समस्या में कमी लाई जा सकती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में टैरिफ का ऐतिहासिक परिदृश्य

स्वतंत्रता के बाद भारत ने अपनी आर्थिक नीति को आत्मनिर्भर बनाने और घरेलू उद्योगों के विकास पर बल दिया। विदेशी प्रतिस्पर्धा को रोकने के लिए एवं घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए उस समय आयात-प्रतिबंधित नीतियाँ अपनाई गईं। हालांकि, समय के साथ वैश्वीकरण और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के विस्तार ने इन नीतियों में संशोधन की आवश्यकता पैदा कर दी।

आज भारत जहां एक ओर घरेलू उद्योगों को संरक्षण दे रहा है तो दूसरी ओर विदेशी निवेश तथा प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ अपनी टैरिफ नीति में संतुलन बनाए रखने का प्रयास भी कर रहा है। नीति निर्माता इस संतुलन को सही दिशा में रखने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं, जिससे भारतीय बाज़ार वैश्विक मानकों के अनुरूप ढल सके।

घरेलू उद्योगों पर टैरिफ का प्रभाव

1. **संरक्षण और प्रतिस्पर्धात्मकता:** उच्च टैरिफ से विदेशी उत्पादों की कीमतें बढ़ जाती हैं, जिससे घरेलू उद्योगों को बेहतर उत्पाद बनाने और प्रतिस्पर्धा में बने रहने का मौका मिलता है। उदाहरण के लिए, स्टील, टेक्सटाइल और कृषि उत्पादों के क्षेत्र में टैरिफ ने घरेलू उद्योगों को सुरक्षा प्रदान की है।
   - घरेलू उद्योगों का विकास: संरक्षणात्मक टैरिफ नीति के कारण घरेलू उत्पादन बढ़ा है और रोज़गार के नए अवसर पैदा हुए हैं।
   - नवाचार में प्रोत्साहन: यदि केवल घरेलू उद्योगों को सुरक्षा प्रदान की जाए और प्रतिस्पर्धा का दबाव न हो, तो नवाचार में कमी आ सकती है। उद्योग की निरंतर प्रगति के लिए, टैरिफ नीति का संतुलन आवश्यक है ।
2. **रोज़गार सृजन:** घरेलू उद्योगों के विकास से रोज़गार के अवसर भी बढ़ते हैं। जब विदेशी प्रतिस्पर्धा सीमित होती है, तो स्थानीय उत्पादन में वृद्धि होती है, जिससे उत्पादन-शृंखला में विभिन्न स्तरों पर रोज़गार के अवसर उत्पन्न होते हैं।
   - **प्रत्यक्ष रोज़गार:** कारखानों, संयन्त्रों और उत्पादन इकाइयों में सीधे तौर पर नौकरी के अवसर पैदा होते हैं।
   - **अप्रत्यक्ष रोज़गार:** संबन्धित सेवाओं, जैसे कि परिवहन, लॉजिस्टिक्स, विपणन और तकनीकी सहायता में भी रोज़गार बढ़ता है।

उपभोक्ता और मूल्य स्तर पर टैरिफ का प्रभाव

उपभोक्ताओं पर टैरिफ नीति का बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। ऐसे ही कुछ प्रभाव निम्नलिखित हैं:

- **मूल्य वृद्धि:** जब विदेशी उत्पादों की मांग बढ़ती है, उससे बाज़ार में उत्पादों का विकल्प सीमित हो सकता है।
- **महंगाई का दबाव:** यदि टैरिफ नीति में अत्यधिक वृद्धि होती है, तो इससे महंगाई बढ़ सकती है और मध्यम तथा निम्न वर्ग के उपभोक्ताओं पर आर्थिक बोझ पड़ता है।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार में टैरिफ का प्रभाव

1. **व्यापारिक सम्बन्धों पर असर:** टैरिफ केवल घरेलू नीतियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसका अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक सम्बन्धों पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है।

   - **व्यापारिक विवाद:** यदि कोई देश अत्यधिक टैरिफ लगाता है, तो उसके व्यापारिक साझेदार भी प्रत्युत्तर स्वरूप टैरिफ लगा सकते हैं, जिससे व्यापारिक युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।
   - **निर्यात पर प्रभाव:** विदेशी बाज़ारों में भारतीय उत्पादों की प्रतिस्पर्धा में बाधा आ सकती है, जिससे निर्यात पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।
   - **वैश्विक मूल्य श्रृंखला:** अत्यधिक टैरिफ से वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में रुकावट आती है, जो अंततः सभी देशों की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है।

2. **विदेश नीति**

   संतुलित टैरिफ नीति से विदेशी निवेशकों का आकर्षण बढ़ता है, जबकि अत्यधिक टैरिफ से निवेश पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

   - **निवेश में वृद्धि:** यदि टैरिफ नीति उदार एवं पारदर्शी हो, तो विदेशी कंपनियाँ भारतीय बाज़ार में आसानी से प्रवेश कर सकती हैं और निवेश बढ़ा सकती हैं।
   - **प्रतिस्पर्धात्मक बाज़ार:** विदेशी निवेश से न केवल तकनीकी उन्नयन होता है, बल्कि प्रतिस्पर्धा भी बढ़ती है, जिससे उपभोक्ताओं को बेहतर उत्पाद और सेवाएँ मिलती हैं।

टैरिफ नीति निर्धारण में चुनौतियाँ

1. **संतुलन की आवश्यकता**

   टैरिफ नीति बनाते समय यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि घरेलू उद्योगों की सुरक्षा के साथ-साथ उपभोक्ताओं और अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों का भी ध्यान रखा जाए।

   - अत्यधिक संरक्षणवाद: यदि टैरिफ बहुत उच्च रखे जाएँ, तो इससे घरेलू उद्योगों का नवाचार कम हो सकता है क्योंकि उन्हें विदेशी प्रतिस्पर्धा का दबाव नहीं रहेगा।
   - उपभोक्ता हित: उपभोक्ताओं को उच्च कीमतों का सामना करना पड़ सकता है, जिससे उनकी क्रय शक्ति प्रभावित होती है।

2. **वैश्विक आर्थिक दबाव**

   वैश्विक व्यापारिक परिदृश्य में निरंतर बदलाव और प्रतिस्पर्धा के बीच संतुलन बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

   - टैरिफ विवाद: अंतरराष्ट्रीय मंच पर टैरिफ को लेकर विवाद उत्पन्न होने से भारत के व्यापारिक सम्बन्ध प्रभावित हो सकते हैं।
   - नीतिगत सुधार: समय-समय पर नीति में सुधार करना आवश्यक होता है, जिससे वैश्विक मानकों के अनुरूप आर्थिक रणनीति तैयार की जा सके।

टैरिफ नीति में सुधार के उपाय

भारत सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में टैरिफ नीति में सुधार के लिए कई कदम उठाए हैं। इन सुधारों का उद्देश्य घरेलू उद्योगों की सुरक्षा के साथ-साथ विदेशी निवेश को भी प्रोत्साहित करना है। प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं:

1. **टैरिफ स्लैब में परिवर्तन:** विभिन्न क्षेत्रों के लिए अलग-अलग टैरिफ दर निर्धारित करना, जिससे घरेलू और विदेशी उत्पादों के बीच संतुलन स्थापित हो सके।
2. **विशेष आर्थिक क्षेत्रों का निर्माण:** विशेष आर्थिक क्षेत्रों का निर्माण, जहां पर कम टैरिफ या शून्य टैरिफ नीति अपनाई जा सके और जिससे विदेशी कंपनियाँ आसानी से निवेश कर सकें और घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहन मिले।
3. **नवाचार और तकनीकी उन्नयन पर बल देना:** घरेलू उद्योगों को प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए तकनीकी सुधार करने से और नवाचार में निवेश बढ़ाने से वे वैश्विक मानकों के अनुरूप हो सकेंगे।

टैरिफ नीति के दीर्घकालिक प्रभाव

टैरिफ नीतियों के तात्कालिक आर्थिक प्रभाव के साथ-साथ महत्वपूर्ण दीर्घकालिक परिणाम भी होते हैं।

- निर्यात में वृद्धि: उदार टैरिफ नीति से विदेशी बाज़ारों में भारतीय उत्पादों की प्रतिस्पर्धा बढ़ती है, जिससे निर्यात में वृद्धि होती है।
- आयात निर्भरता में कमी: उच्च टैरिफ से आयात महंगा होने पर घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहन मिलता है और देश आयात पर कम निर्भर रहता है।
- अर्थव्यवस्था में स्थिरता: संतुलित टैरिफ नीति से आर्थिक असंतुलन को नियंत्रित करने में मदद मिलती है, जिससे महंगाई पर नियंत्रण रहता है और निवेश के नए अवसर सृजित होते हैं।

सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से टैरिफ का प्रभाव

टैरिफ नीति का प्रभाव केवल आर्थिक आंकड़ों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसके सामाजिक परिणाम भी होते हैं:

- **रोजगार और जीवन स्तर:** संरक्षणात्मक टैरिफ नीति से घरेलू उद्योगों में रोज़गार बढ़ता है, जिससे मध्यम एवं निम्न वर्ग के लोगों का जीवन स्तर सुधरता है।
- **उपभोक्ता मूल्य और क्रय शक्ति:** यदि टैरिफ अत्यधिक होते हैं, तो उपभोक्ताओं को महंगे विदेशी उत्पादों के स्थान पर केवल महंगे घरेलू उत्पाद खरीदने पड़ते हैं, जिससे उनकी क्रय शक्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- **नवाचार में वृद्धि या कमी:** अत्यधिक संरक्षण से उद्योगों में नवाचार का दबाव कम हो सकता है, जिससे दीर्घकालिक विकास पर असर पड़ता है।

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय टैरिफ नीति

अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में अन्य देश भी टैरिफ नीति के माध्यम से अपने घरेलू बाज़ारों की सुरक्षा करते हैं। अमेरिकी, चीनी और यूरोपीय अर्थव्यवस्थाएँ अपने-अपने हितों को ध्यान में रखते हुए टैरिफ नीतियाँ अपनाती हैं।

- **व्यापारिक युद्ध और विवाद:** अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अत्यधिक टैरिफ लगाने से व्यापारिक विवाद बढ़ते हैं, जिससे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर असर पड़ता है। भारत को भी इन विवादों से सावधान रहते हुए अपनी नीति निर्धारित करनी होगी, ताकि अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक सम्बन्ध मज़बूत रहें।
- **विदेशी निवेश का आकर्षण:** एक संतुलित टैरिफ नीति से भारत विदेशी निवेशकों के लिए एक आकर्षक बाज़ार बन सकता है। इससे तकनीकी हस्तांतरण, उद्योगों का उन्नयन और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि हो सकती है।

चुनौतियाँ और संभावनाएं

चुनौतियाँ:

1. **नीतिगत अस्थिरता:** वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में निरंतर बदलाव के कारण टैरिफ नीति में बार-बार सुधार की आवश्यकता पड़ती है, जिससे नीति में अस्थिरता पैदा हो सकती है।
2. **घरेलू उद्योगों का आलस्य:** अत्यधिक संरक्षण के कारण कभी-कभी घरेलू उद्योगों में प्रतिस्पर्धा और नवाचार का दबाव कम हो जाता है, जिससे दीर्घकालिक विकास प्रभावित हो सकता है।
3. **उपभोक्ता बोझ:** यदि टैरिफ नीति संतुलित न हो तो उपभोक्ता महंगाई का सामना करते हैं, जिससे सामाजिक असंतुलन भी उत्पन्न होता है।

संभावनाएं

1. **आर्थिक आत्मनिर्भरता:** संतुलित टैरिफ नीति से घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहन मिलता है, जिससे आयात पर निर्भरता कम हो सकती है और देश आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकता है।
2. **वैश्विक प्रतिस्पर्धा:** सही दिशा में अपनाई गई नीतियाँ विदेशी व्यापार को आकर्षित कर सकती हैं, जिससे तकनीकी उन्नयन और नवाचार में वृद्धि हो सकती है।
3. **सामाजिक समृद्धि:** जब घरेलू उद्योगों में विकास होता है और रोज़गार के अवसर बढ़ते हैं, तो सामाजिक समृद्धि और जीवन स्तर में सुधार संभव है।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर टैरिफ का प्रभाव बहुआयामी है। एक ओर टैरिफ नीति घरेलू उद्योगों को सुरक्षा प्रदान करके रोज़गार सृजन और आर्थिक विकास में योगदान देती है, वहीं दूसरी ओर, अत्यधिक टैरिफ उपभोक्ताओं पर बोझ डालते हैं और अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न कर सकते हैं। संतुलित और पारदर्शी टैरिफ नीति का निर्माण करते समय नीति निर्धारकों को न केवल घरेलू उद्योगों की सुरक्षा का ध्यान रखना होगा, अपितु उपभोक्ता हित, नवाचार, और वैश्विक व्यापारिक संबन्धों पर भी विचार करना होगा।

टैरिफ नीतियाँ केवल आयात-निर्यात के आंकड़ों को प्रभावित नहीं करतीं, अपितु देश की आर्थिक संरचना, सामाजिक कल्याण, और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत के भविष्य में आर्थिक आत्मनिर्भरता और संतुलित विकास के लक्ष्य को हासिल करने के लिए टैरिफ नीति में निरंतर सुधार एवं संतुलन बनाए रखना होगा।

यदि नीति निर्माता घरेलू उद्योगों की सुरक्षा, उपभोक्ता हित और वैश्विक व्यापारिक सम्बन्धों के बीच संतुलन बना सकें, तो टैरिफ नीति भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए वरदान साबित हो सकती है।

अंकुर नरुला
कें. का., मुंबई

डार्क पैटर्न: क्या आप भी एक शिकार हैं?

क्या आपने कभी कोई ऑनलाइन सेवा लेने के दौरान खुद को भ्रमित पाया है? क्या आपने कभी गलती से कोई सेवा सब्सक्राइब कर ली जिसे आप लेना नहीं चाहते थे? या फिर कोई ई-कॉमर्स वेबसाइट आपको बार-बार ऐसे ऑफ़र दिखाती है जिससे आप अनजाने में कुछ खरीद लें? अगर ऐसा हुआ है, तो आप "डार्क पैटर्न" का शिकार हो सकते हैं। डार्क पैटर्न एक प्रकार की डिजाइन रणनीति होती है जिसका उद्देश्य उपयोगकर्ताओं को अनजाने में ऐसे निर्णय लेने के लिए प्रेरित करना होता है जो उनके हित में नहीं होते।

डार्क पैटर्न क्या है: डार्क पैटर्न डिज़ाइन की ऐसी तकनीकें होती हैं जो उपयोगकर्ता के मनोविज्ञान को प्रभावित कर उन्हें ऐसा निर्णय लेने के लिए बाध्य करती हैं जिससे कंपनी या सेवा प्रदाता को लाभ होता है। यह रणनीति ऑनलाइन प्लेटफार्म, मोबाइल ऐप्स, वेबसाइटों और डिजिटल सेवाओं में आमतौर पर देखी जाती है। इनका उपयोग अक्सर ग्राहकों को ज्यादा डेटा साझा करने, अवांछित सब्सक्रिप्शन लेने, महंगी सेवाएं खरीदने, या विज्ञापन देखने के लिए प्रेरित करने में किया जाता है। इसके विभिन्न प्रकार है जिसे हम इस तरह से देख सकते हैं:

1. **छुपे हुए विज्ञापन:** कई बार वेबसाइटें विज्ञापन को इस प्रकार प्रस्तुत करती हैं कि वे कंटेंट का हिस्सा लगे। उदाहरण के लिए, न्यूज़ वेबसाइटों पर अक्सर "स्पोंसर्ड कंटेन्ट" के रूप में विज्ञापन दिखाए जाते हैं, जो असली समाचार जैसे ही लगते हैं। उपयोगकर्ता इसे वास्तविक जानकारी समझकर उस पर क्लिक कर देते हैं, जिससे विज्ञापनदाता को लाभ होता है। कभी-कभी ये विज्ञापन इस तरह डिज़ाइन किए जाते हैं कि वे डाउनलोड बटन की तरह दिखें, जिससे उपयोगकर्ता अनजाने में गलत फाइल डाउनलोड कर लेता है
2. **अनिवार्य निरंतरता:** कई डिजिटल सेवाएँ उपयोगकर्ताओं को प्रारंभिक रूप से निःशुल्क परीक्षण ऑफर करती हैं, लेकिन परीक्षण अवधि समाप्त होने के बाद बिना स्पष्ट चेतावनी के भुगतान शुरू कर देती हैं। उपयोगकर्ता को पता ही नहीं चलता कि उसकी सदस्यता चालू हो गई है, और जब वह इसे रोकने का प्रयास करता है, तो उसे कई जटिल प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। यह रणनीति वीडियो स्ट्रीमिंग, जिम सदस्यता और सॉफ़्टवेयर सेवाओं में आम तौर पर देखी जाती है।
3. **फँसाने की रणनीति:** यह एक ऐसी रणनीति है जिसमें उपयोगकर्ताओं के लिए किसी सेवा में प्रवेश करना आसान बनाया जाता है, लेकिन उससे बाहर निकलना बेहद कठिन होता है। उदाहरण के लिए, किसी समाचार वेबसाइट की सदस्यता लेना तो आसान होता है, लेकिन उसे रद्द करने के लिए उपयोगकर्ता को कई स्तरों की जटिल प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है, जिसमें बार-बार कन्फर्मेशन मांगना, फोन कॉल पर बात करना या ईमेल भेजना शामिल हो सकता है।
4. **छुपी हुई लागतें:** ऑनलाइन खरीदारी के दौरान उपयोगकर्ता जब अंतिम भुगतान पृष्ठ तक पहुँचता है, तब उसे अचानक अतिरिक्त शुल्क जोड़ दिए जाने का पता चलता है। यह शुल्क डिलीवरी चार्ज, मेंबरशिप फीस, या किसी अन्य अनिवार्य सेवा के रूप में हो सकता है, जिसके बारे में पहले कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी जाती। इससे उपयोगकर्ता मजबूरी में अधिक भुगतान करने पर विवश हो जाता है।
5. **भावनात्मक दबाव:** इस रणनीति के तहत उपयोगकर्ता को किसी कार्रवाई से रोकने के लिए भावनात्मक तरीके अपनाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, जब आप किसी ईमेल सूची से अनसब्सक्राइब करने का प्रयास करते हैं, तो वेबसाइट कहती है, "क्या आप सच में हमें छोड़ना चाहते हैं? हम आपको बहुत याद करेंगे!" या "आप हमें छोड़कर चले गए तो हमारे छोटे व्यवसाय को नुकसान होगा।" यह संदेश उपयोगकर्ता को अपराधबोध का अनुभव कराते हैं, जिससे वह अपने निर्णय को बदलने पर मजबूर हो सकता है।
6. **छुपी हुई वस्तुएँ जोड़ना :** कई ई-कॉमर्स वेबसाइटें उपयोगकर्ता के कार्ट में बिना अनुमति के अतिरिक्त उत्पाद जोड़ देती हैं। यह अतिरिक्त बीमा, एक्सटेंडेड वारंटी, या कुछ अन्य अनावश्यक ऐड-ऑन हो सकते हैं। उपयोगकर्ता अक्सर इन्हें नोटिस नहीं करता और बिना देखे भुगतान कर देता है, जिससे उसे अनावश्यक खर्च उठाना पड़ता है।
7. **भ्रामक भाषा:** कई वेबसाइटें "स्वीकृत करें" और "अस्वीकृत करें" बटनों को इस तरह डिज़ाइन करती हैं कि उपयोगकर्ता गलती से गलत विकल्प चुन ले। उदाहरण के लिए, कुकीज़ स्वीकार करने के लिए बड़ा और हरा बटन हो सकता है, जबकि अस्वीकृत करने का बटन छोटा और भूरे रंग का हो सकता है, जिससे उपयोगकर्ता

गलती से कुकीज़ स्वीकार कर लेता है।

8. **भ्रम पैदा करने वाले विकल्प:** कुछ कंपनियाँ विकल्पों को इस प्रकार प्रस्तुत करती हैं कि उपयोगकर्ता को सही निर्णय लेने में कठिनाई हो। उदाहरण के लिए, किसी सेवा को अपग्रेड करने या जारी रखने के विकल्प स्पष्ट होते हैं, लेकिन उसे रोकने का विकल्प छोटे अक्षरों में लिखा जाता है या जटिल भाषा में प्रस्तुत किया जाता है जिससे उपयोगकर्ता सही निर्णय नहीं ले पाता।

9. **जानबूझकर की गई देरी:** यह रणनीति उपयोगकर्ता को किसी सेवा से बाहर निकलने से रोकने के लिए की जाती है। उदाहरण के लिए, जब आप किसी स्ट्रीमिंग सेवा की सदस्यता रद्द करना चाहते हैं, तो आपको बताया जाता है कि आपको विशेष ऑफर मिल सकता है या आपको फीडबैक देने के लिए कई स्टेप पूरे करने होंगे। यह जानबूझकर किया जाता है ताकि उपयोगकर्ता थककर सदस्यता जारी रखे।

10. **मजबूरी में जानकारी साझा करना:** कई वेबसाइटें और ऐप्स उपयोगकर्ताओं को अनावश्यक व्यक्तिगत जानकारी साझा करने के लिए बाध्य करती हैं। उदाहरण के लिए, एक साधारण ऐप डाउनलोड करने के लिए उपयोगकर्ता से फोन नंबर, ईमेल, स्थान और अन्य व्यक्तिगत विवरण मांगे जाते हैं, जो आवश्यक नहीं होते। इस तरह कंपनियाँ डेटा एकत्र करके इसे विज्ञापनदाताओं को बेचती हैं।

प्रभाव: डार्क पैटर्न सिर्फ उपयोगकर्ताओं के अनुभव को प्रभावित नहीं करते बल्कि उनके वित्तीय और व्यक्तिगत डेटा पर भी असर डाल सकते हैं।

1. **आर्थिक नुकसान** – अनावश्यक सेवाओं और सब्सक्रिप्शनों के कारण उपयोगकर्ता को आर्थिक हानि हो सकती है। कई मामलों में, उपयोगकर्ता को महीनों बाद पता चलता है कि उसकी सदस्यता शुल्क काटा जा रहा है। कई बार, उपयोगकर्ता उन सेवाओं पर अधिक खर्च कर बैठता है जिनकी उसे आवश्यकता ही नहीं थी।

2. **डेटा गोपनीयता का उल्लंघन** – कई बार उपयोगकर्ताओं को अनजाने में अधिक डेटा साझा करने के लिए प्रेरित किया जाता है। उदाहरण के लिए, किसी ऐप या वेबसाइट में बिना सहमति के लोकेशन, संपर्क जानकारी और अन्य व्यक्तिगत डेटा एकत्र कर लिया जाता है। इन डेटा को थर्ड-पार्टी कंपनियों को बेचा जा सकता है, जिससे उपयोगकर्ता की गोपनीयता खतरे में पड़ सकती है।

3. **भरोसे की कमी** – जब उपयोगकर्ता को पता चलता है कि उसे धोखे से कोई निर्णय लेने पर मजबूर किया गया है, तो वह ब्रांड पर भरोसा खो देता है। लंबे समय में, यह कंपनियों की प्रतिष्ठा के लिए भी हानिकारक हो सकता है। ग्राहकों के नकारात्मक अनुभव ब्रांड की विश्वसनीयता को प्रभावित करते हैं और वे अन्य विकल्पों की तलाश करने लगते हैं।

4. **मानसिक तनाव** – बार-बार अनचाही सेवाओं से बचने की कोशिश करने से उपयोगकर्ताओं को मानसिक दबाव महसूस हो सकता है। जब उपयोगकर्ता को बार-बार अनावश्यक मेल, पॉप-अप, और जबरन सदस्यताओं से जूझना पड़ता है, तो यह उसकी डिजिटल यात्रा को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

5. **डिजिटल असुरक्षा** – कुछ डार्क पैटर्न उपयोगकर्ताओं को अनजाने में साइबर खतरों के प्रति संवेदनशील बना सकते हैं। जब उपयोगकर्ता बिना सोचे-समझे किसी बटन पर क्लिक करता है या अपने विवरण साझा करता है, तो वह फिशिंग हमलों, मालवेयर और अन्य साइबर अपराधों का शिकार हो सकता है।

6. **अनुचित उपभोक्ता व्यवहार** – जब उपयोगकर्ताओं को लगातार झूठी सीमित अवधि के ऑफ़र, काउंटडाउन टाइमर, या "अभी खरीदें, बाद में भुगतान करें" जैसी रणनीतियों से उकसाया जाता है, तो वे बिना सोचे-समझे वित्तीय निर्णय लेने पर मजबूर हो सकते हैं, जो दीर्घकालिक रूप से उनके लिए हानिकारक साबित हो सकता है।

इससे बचने के उपाय:

1. **सतर्क रहें** – कोई भी ऑनलाइन लेन-देन करते समय छोटे-छोटे विवरण ध्यान से पढ़ें। छुपे हुए शुल्कों, शर्तों और सदस्यता योजनाओं की समीक्षा करें।

2. **रिव्यू पढ़ें** – किसी सेवा को खरीदने या सब्सक्राइब करने से पहले उसके बारे में समीक्षाएँ पढ़ें। अन्य उपभोक्ताओं के अनुभव से यह समझने में मदद मिलेगी कि कहीं इसमें कोई डार्क पैटर्न तो नहीं छिपा है।

3. **डेटा शेयरिंग सेटिंग्स चेक करें** – अपनी गोपनीयता सेटिंग्स को नियमित रूप से जांचें और आवश्यकतानुसार बदलें। सुनिश्चित करें कि कोई भी ऐप या वेबसाइट बिना आपकी सहमति के आपका डेटा न एकत्र करे।

4. **अनावश्यक मेल और नोटिफिकेशन बंद करें** – अक्सर कंपनियाँ आपको मेल और नोटिफिकेशन के ज़रिए

लुभाने की कोशिश करती हैं, इसलिए अनावश्यक सब्सक्रिप्शन से बचें। यदि कोई वेबसाइट या ऐप आपको बार-बार परेशान कर रही है, तो उसे ब्लॉक या अनसब्सक्राइब करें।

5. **रीफंड और कैंसलेशन पॉलिसी जानें–** किसी भी ऑनलाइन सेवा से जुड़ने से पहले उसकी रीफंड और कैंसलेशन नीति को समझें। सुनिश्चित करें कि कोई भी सेवा आपको अनावश्यक रूप से बंधन में न डाल रही हो।

6. **एड ब्लॉकर्स का उपयोग करें –** विज्ञापन और भ्रामक पॉप-अप से बचने के लिए एड ब्लॉकर का उपयोग करें। इससे आपको अनावश्यक विज्ञापनों पर गलती से क्लिक करने से बचने में मदद मिलेगी।

7. **रिपोर्ट करें –** अगर आपको किसी वेबसाइट पर डार्क पैटर्न का अनुभव होता है, तो इसे संबंधित अधिकारियों या प्लेटफ़ॉर्म पर रिपोर्ट करें। कई उपभोक्ता सुरक्षा संगठन ऐसे मामलों की निगरानी करते हैं और उचित कार्रवाई कर सकते हैं।

8. **वैकल्पिक सेवाओं की खोज करें –** उन प्लेटफार्मों का उपयोग करें जो पारदर्शी और उपयोगकर्ता हितैषी होते हैं। ऐसी कंपनियों का समर्थन करें जो उपयोगकर्ताओं के साथ निष्पक्षता से व्यवहार करती हैं।

9. **दो कारक अधिप्रमाणन अपनाएँ –** यदि कोई वेबसाइट आपके व्यक्तिगत डेटा तक पहुँचने की कोशिश करती है, तो दो कारक अधिप्रमाणन चालू करें ताकि आपकी गोपनीयता बनी रहे।

10. **बचाव तकनीकों की जानकारी रखें–** डार्क पैटर्न से बचने के लिए विभिन्न प्रकार के साइबर सुरक्षा उपायों और डिजिटल अधिकारों की जानकारी रखें।

डार्क पैटर्न डिजिटल दुनिया में उपयोगकर्ताओं को धोखे से गलत निर्णय लेने के लिए मजबूर करने का एक नया तरीका बन गए हैं। हालांकि, जागरूकता और सतर्कता के माध्यम से हम इनसे बच सकते हैं। सिर्फ व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि सरकारों और नियामक संस्थाओं को भी इन भ्रामक प्रथाओं के खिलाफ सख्त कानून और दिशानिर्देश बनाने की आवश्यकता है। उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के बारे में शिक्षित करना और कंपनियों को नैतिक डिजिटल प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। भविष्य में, यदि उपयोगकर्ता जागरूक होंगे और अपने अधिकारों की रक्षा करेंगे, तो कंपनियाँ भी मजबूर होकर अधिक पारदर्शी और उपयोगकर्ता हितैषी डिज़ाइन अपनाएँगी।

नेहा गौर
यू.एल.ए., पवई

दहलीज़

सपनों के एक शहर से अपना नाता तोड़ आई,
कुछ रिश्तों को थामने, कुछ रिश्तों से मुँह मोड़ आई,
मैं दहलीज़ अपनी छोड़ आई!

एक नई किताब होगी, एक नई कहानी होगी,
कुछ ख़्वाबों की कब्र पर, नई दुनिया बसानी होगी,
हदों में रखना होगा अब ख़्वाहिशों के परिंदों को,
होंठों की हँसी के पीछे, आँखों की नमी छिपानी होगी,
जिन हाथों ने सींची थी, बगिया मेरी ज़िंदगी की,
उन्हें काँपता हुआ पीछे छोड़ आई!
मैं दहलीज़ अपनी छोड़ आई!

वो तारे, वो परियाँ, वो आसमान शायद अब ना हों,
माथे पे बेफ़िक्री के निशान शायद अब ना हों,
ख़ुशी आए या ग़म हिस्से में, ख़ामोशी से कुबूल मुझे,
कभी थी जो ज़िन्दगी मेहरबान, शायद अब ना हो,
जो रोज़ मिलवाता था, एक राजकुमारी से मुझे,
वो झूठा आईना मैं आज तोड़ आई!
मैं दहलीज़ अपनी छोड़ आई!

मैं तेरा सम्मान ना डूबने दूँगी, तुम फ़िक्र ना करना,
तेरे संस्कारों का स्तम्भ ना टूटने दूँगी, फ़िक्र ना करना,
अपने दिल का एक टुकड़ा, तुमने हवाले कर दिया,
कोई समझे ना समझे, तुम ज़िक्र ना करना,
पास तुम्हारे होऊँगी जब भी याद करोगे मुझे,
इस दिलासे से उनका रिश्ता जोड़ आई!

मैं दहलीज़ अपनी छोड़ आई!

अभिनंदन श्रीवास्तव
क्षे. का., गोवा

कृषि और उद्योग क्षेत्र में ड्रोन तकनीक का उपयोग

21वीं सदी में, तकनीकी नवाचारों ने समाज के काम करने, अर्थव्यवस्थाओं के संचालन और उद्योगों के विकास के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। इन नवाचारों में, ड्रोन तकनीक, जिसे आमतौर पर मानव रहित हवाई वाहन (यूएवी) कहा जाता है, एक परिवर्तनकारी उपकरण के रूप में उभरी है।

सरकारें, उद्योग और किसान तेजी से ड्रोन की संभावनाओं को पहचान रहे हैं, जो उत्पादकता बढ़ाने, परिचालन लागत कम करने और जलवायु परिवर्तन, श्रम की कमी और बाजार प्रतिस्पर्धा जैसी बढ़ती चुनौतियों से निपटने में मदद कर सकते हैं।

कृषि क्षेत्र में ड्रोन तकनीक

कृषि, जो भारत जैसे कई विकासशील देशों की रीढ़ है, एक डिजिटल क्रांति का अनुभव कर रही है। सटीक कृषि—एक ऐसी खेती प्रबंधन अवधारणा है जो फसलों में परिवर्तनशीलता का अवलोकन, माप और प्रतिक्रिया देने पर आधारित है—ने ड्रोन में एक मूल्यवान सहयोगी पाया है। कृषि में यूएवी का उपयोग पारंपरिक खेती के तरीकों को डेटा-आधारित, तकनीक-प्रेरित प्रथाओं में बदल रहा है।

मल्टीस्पेक्ट्रल और थर्मल कैमरों से लैस ड्रोन किसानों को उनके खेतों की उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाली हवाई छवियाँ प्रदान करते हैं। इन छवियों का विश्लेषण करके, किसान फसल के स्वास्थ्य का आकलन कर सकते हैं, कीटों या रोगों से प्रभावित क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं और पोषक तत्वों की कमी का पता लगा सकते हैं।

ड्रोन ने उर्वरक, कीटनाशक और शाकनाशी के छिड़काव में क्रांति ला दी है। पारंपरिक विधियों के विपरीत, जो अक्सर अत्यधिक या अपर्याप्त छिड़काव का कारण बनती हैं, ड्रोन सटीक स्प्रेइंग सुनिश्चित करते हैं और केवल प्रभावित क्षेत्रों को ही लक्षित करते हैं। इससे रसायनों की खपत कम होती है, पर्यावरणीय गिरावट कम होती है और किसानों की लागत में भी कमी आती है।

भारत में, सरकार का कृषि यंत्रीकरण पर उप-कार्य मिशन (एसएएमएएम) कृषि रसायनों के छिड़काव के लिए ड्रोन अपनाने को प्रोत्साहित करता है, जो संवहनीय कृषि लक्ष्यों के अनुरूप है। बुवाई से पहले, ड्रोन हवाई सर्वेक्षण कर सकते हैं और खेतों के विस्तृत 3डी मानचित्र तैयार कर सकते हैं। ये सर्वेक्षण किसानों को मिट्टी की स्थिति, नमी के स्तर और खेत की स्थलाकृति का विश्लेषण करने में मदद करते हैं। डेटा के आधार पर, किसान सिंचाई प्रणाली, जल निकासी व्यवस्था और बुवाई के पैटर्न की योजना बना सकते हैं ताकि संसाधनों का अधिकतम उपयोग और फसल प्रदर्शन सुनिश्चित किया जा सके।

कृषि में जल की कमी एक गंभीर समस्या है। किसान सिंचाई कार्यक्रमों का अनुकूलन हेतु थर्मल सेंसर से लैस ड्रोन उन क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं जहां जल तनाव है। सूखे और जलभराव वाले क्षेत्रों का पता लगाकर ड्रोन यह सुनिश्चित करने में मदद करते हैं कि पानी का कुशलतापूर्वक उपयोग हो और फसल का स्वास्थ्य भी बेहतर हो। कुछ आधुनिक ड्रोन सीधे मिट्टी में बीज पॉड्स डालने में सक्षम हैं, जो वनीकरण परियोजनाओं और कठिन इलाकों के लिए एक नवाचार है। हालांकि कई देशों में यह अभी प्रयोगात्मक चरण में है, लेकिन ड्रोन-आधारित बीजरोपण वनीकरण और आवरण फसलों के लिए आशाजनक समाधान हो सकता है। बड़े खेतों में ड्रोन का उपयोग पशुधन की निगरानी, जानवरों की गतिविधियों को ट्रैक करने और स्वास्थ्य समस्याओं या बाड़ की टूट-फूट का पता लगाने के लिए किया जा सकता है। इससे श्रमिकों की आवश्यकता कम होती है और फार्म की सुरक्षा में सुधार होता है।

कृषि में ड्रोन तकनीक के लाभ

उर्वरक, कीटनाशक और जल जैसे इनपुट का कुशल उपयोग परिचालन लागत को कम करता है। लक्षित रसायनों का प्रयोग रनऑफ, मिट्टी क्षरण और प्रदूषण को कम करता है। किसान संभावित खतरों जैसे कि कीट प्रकोप या पोषक तत्वों की कमी का समय रहते पता लगाकर प्रतिक्रिया दे सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में श्रम की कमी को देखते हुए ड्रोन मैनुअल श्रम पर निर्भरता कम करते हैं।

औद्योगिक क्षेत्र में ड्रोन तकनीक

कृषि से परे, औद्योगिक क्षेत्र ने ड्रोन तकनीक को अपनाकर संचालन को सुव्यवस्थित करने, सुरक्षा बढ़ाने और डेटा-संचालित निर्णय लेने में सुधार किया है। विनिर्माण से लेकर निर्माण और ऊर्जा तक, ड्रोन आधुनिक उद्योग में अपरिहार्य उपकरण बनते जा रहे हैं। बड़े-बड़े बुनियादी ढांचे वाले उद्योग—जैसे कि बिजली संयंत्र, तेल रिफाइनरी, पाइपलाइन और पवन फार्म—निरीक्षण के लिए बड़े पैमाने पर ड्रोन पर निर्भर हैं। पारंपरिक निरीक्षण विधियों में अक्सर संचालन को रोकना पड़ता है, क्रेनों की आवश्यकता होती है या खतरनाक क्षेत्रों में काम करने वालों के जीवन को जोखिम में डालना पड़ता है। खनन संचालन में, ड्रोन का उपयोग साइटों की मैपिंग और सर्वेक्षण, स्टॉकपाइल माप और सुरक्षा निरीक्षण के लिए किया जाता है। रीयल-टाइम डेटा संग्रह से खदान की योजना, संसाधन आकलन और पर्यावरणीय प्रभावों जैसे भूमि क्षरण और धूल प्रदूषण की निगरानी में सुधार होता है।

लॉजिस्टिक्स कंपनियां बड़े गोदामों में इन्वेंट्री प्रबंधन के लिए तेजी से ड्रोन तैनात कर रही हैं। बारकोड स्कैनर और आरएफआईडी रीडर से लैस ड्रोन मैनुअल श्रम की तुलना

में तेज़ी से स्टॉक जांच कर सकते हैं, जिससे सटीकता में सुधार होता है और समय की बचत होती है। एमाजॉन और डीएचएल जैसी कंपनियां दूरदराज के क्षेत्रों में उपभोक्ताओं तक सीधे सामान पहुंचाने के लिए ड्रोन-आधारित डिलीवरी सिस्टम का भी परीक्षण कर रही हैं।

निर्माण में, ड्रोन का उपयोग 3डी साइट मानचित्र बनाने, परियोजना की प्रगति की निगरानी और सुरक्षा निरीक्षण करने के लिए किया जाता है। सटीक हवाई सर्वेक्षण इंजीनियरों और परियोजना प्रबंधकों को बेहतर योजना बनाने, डिज़ाइन में विसंगतियों का पता लगाने और पुन: कार्य से जुड़ी लागत को कम करने की अनुमति देते हैं। रियल एस्टेट क्षेत्र में, ड्रोन संभावित खरीदारों को संपत्तियों के इमर्सिव हवाई दृश्य प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें बेहतर निर्णय लेने में मदद मिलती है।

पाइपलाइनों की निगरानी, रिसाव का पता लगाने और ऑफशोर रिग्स जैसी जगहों पर, जहां मानव पहुंच कठिन होती है का आकलन करने में ड्रोन आवश्यक उपकरण बन गए हैं। रीयल-टाइम डेटा प्रदान करके, ड्रोन विनाशकारी दुर्घटनाओं को रोकने, पर्यावरणीय खतरों को कम करने और संचालन को सुचारू बनाए रखने में मदद करते हैं। आपदा संभावित क्षेत्रों में स्थित उद्योगों—जैसे कि रासायनिक कारखाने या परमाणु संयंत्र—आपात स्थितियों के दौरान ड्रोन से लाभान्वित होते हैं। यूएवी खतरनाक क्षेत्रों में प्रवेश कर सकते हैं, लाइव फुटेज भेज सकते हैं और विस्फोट या भूकंप जैसी घटनाओं के बाद नुकसान का आकलन कर सकते हैं, जिससे त्वरित और प्रभावी संकट प्रबंधन में सहायता मिलती है।

उद्योग में ड्रोन तकनीक के लाभ

ड्रोन खतरनाक परिस्थितियों में मानव श्रमिकों की आवश्यकता को कम करते हैं। तेज़ सर्वेक्षण और निरीक्षण परियोजना समय-सीमा में तेजी लाते हैं। डाउनटाइम, श्रम लागत और सामग्री की बर्बादी को कम करना लाभप्रदता में सुधार करता है। महत्वपूर्ण जानकारी तक त्वरित पहुंच निर्णय लेने में सुधार करती है। ड्रोन उत्सर्जन, अपशिष्ट और पारिस्थितिकीय प्रभावों की निगरानी करके उद्योगों को पर्यावरण नियमों का पालन करने में मदद करते हैं।

सरकारी पहल और नीतिगत ढांचा

ड्रोन तकनीक के महत्व को पहचानते हुए, भारत ने ड्रोन नियम, 2021 लागू किए, जिसका उद्देश्य एक उदार नियामक ढांचा बनाना है। ड्रोन और ड्रोन घटकों के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना और "किसान ड्रोन" पहल का उद्देश्य देश में ड्रोन निर्माण और अपनाने को बढ़ावा देना है।

इसके अतिरिक्त, नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीडीसीए) द्वारा विकसित "डिजिटल स्काई" प्लेटफॉर्म ड्रोन पंजीकरण को सुव्यवस्थित करता है और एयरस्पेस मैप्स के साथ अनुपालन में सहायता करता है।

ड्रोन की पूरी क्षमता तभी साकार होगी जब मौजूदा चुनौतियों का समाधान किया जाएगा, जिम्मेदार उपयोग सुनिश्चित किया जाएगा और कौशल विकास को बढ़ावा दिया जाएगा। ऐसा करने से ड्रोन भारत के आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण और तकनीकी नवाचार में वैश्विक नेता बनने की महत्वाकांक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

जैसे-जैसे आकाश में ये यांत्रिक चमत्कार बढ़ रहे हैं, यह स्पष्ट है कि ड्रोन तकनीक अब कोई दूर का सपना नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य का अभिन्न हिस्सा बन गई है।

अभिषेक कुमार चौबे
क्षे. का., पुणे मेट्रो

चतुर मशीन और भोला इंसान

भारत भूमि पर आई मशीन.
बन गई बुद्धिमान हसीन.
चाय से लेकर चंद्रयान तक.
करने लगी समाधान सबका.

गांव में पंडित, शहर में ज्ञानी.
अब तो ए.आई. ही है महारानी.
खेतों में हल चलाने वाला.
गूगल पर नक्शा देखने वाला.

बेटा बोले, "माँ रोटी देना".
ए.आई. बोले, "कृपया कमांड दो न".
बूढ़ा दादा चिट्ठी लिखता.
बच्चा चैटबॉट से हंसता, खिलखिलाता.

कभी हिंदी बोले, कभी अंग्रेजी.
करती बातें बड़ी तेजी.
पर गरीब का दुःख समझ न पाए.
बस चतुराई के गुण ही गुण गाए.

ए.आई. का युग है आया.
पर क्या इंसान ने खुद को पाया.
या बस रह गए बटन दबाने वाले.
सोचो, हम हैं मालिक या बस मतवाले.

नेहा
एन.पी.सी. पटना

साइबर सुरक्षा जागरूकता

साइबर सुरक्षा क्या है

साइबर सुरक्षा का अर्थ है डेटा, नेटवर्क, प्रोग्राम और अन्य जानकारी को अनधिकृत या अनपेक्षित पहुंच, विनाश या परिवर्तन से बचाना। प्रौद्योगिकी का तेजी से विकास और अधिकांश जनता के लिए इंटरनेट की उपलब्धता साइबर-अपराध के मार्ग को विस्तृत करती है। इस युग में जहां कंप्यूटर का उपयोग आम हो गया है वहां साइबर सुरक्षा एक प्रमुख चिंता का विषय है। इंटरनेट की बढ़ती पहुंच के साथ, भारत के विकास के लिए साइबर सुरक्षा सर्वोपरि है। प्रौद्योगिकी के विकास और अधिकांश जनता के लिए इंटरनेट की उपलब्धता के साथ, साइबर अपराधों का मार्ग भी बढ़ गया है।

मैलवेयर, स्पाईवेयर, रैंसमवेयर, धोखाधड़ी, फ़िशिंग आदि विभिन्न प्रकार के वायरस हैं जिनका उपयोग साइबर हमलों में किया जाता है। हैकर्स किसी के कंप्यूटर सिस्टम तक आसानी से पहुंच प्राप्त करते हैं, यदि उस कंप्यूटर का उपयोगकर्ता संक्रमित वेब पेजों, लिंक्स, दुर्भावनापूर्ण वेबसाइटों पर क्लिक करता है, या अनजाने में एक खतरनाक प्रोग्राम डाउनलोड करता है। साइबर सुरक्षा कुछ कठिन और जघन्य अपराधों जैसे ब्लैकमेलिंग, दूसरे खातों के माध्यम से धोखाधड़ी लेनदेन, व्यक्तिगत जानकारी के रिसाव को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

साइबर सुरक्षा क्यों है जरूरी

किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत जानकारी, वित्तीय लेनदेन के लिए एक बड़ा जोखिम है। इसका उपयोग व्यक्तिगत लाभ जैसे ब्लैकमेलिंग और धोखाधड़ी लेनदेन के लिए किया जा सकता है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग ने साइबर सुरक्षा को और भी महत्वपूर्ण बना दिया है। बैंक को खतरे को कम करने के लिए और अधिक उन्नत सुरक्षा प्रणाली की आवश्यकता है और उपयोगकर्ताओं (ग्राहकों) को डेटा की सुरक्षा के बारे में सतर्क एवं जागरूक करना है। साथ ही बेहतर साइबर सुरक्षा कानूनों का सख्ती से पालन करने की आवश्यकता है जैसे राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति 2013 डेटा गोपनीयता के लिए नवीनतम एससी निर्देश, सूचना प्रौद्योगिकी (संशोधन) अधिनियम 2008 एवं 2023 को राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा की जरूरतों को पूरा करने के लिए एवं "सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000" पारित किया गया जिसके अंतर्गत साइबर हमलों से निपटने के प्रबंध किए गए हैं । भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया दल (सीईआरटी-इन) साइबर सुरक्षा घटना प्रतिक्रिया के लिए एक राष्ट्रीय एजेंसी के रूप में कार्य करता है।

साइबर सुरक्षा समाधान - बैंक कर्मचारियों में जागरूकता एवं प्रसार के नए आयाम

साइबर सुरक्षा की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए खुद को समर्पित करने की आवश्यकता है और इस प्रक्रिया में पहला कदम संगठन-व्यापी साइबर-जागरूकता को बढ़ावा देना है। बैंक अपने कर्मचारियों को अवगत कराएं कि साइबर सुरक्षा सिर्फ बैंक के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि यह उनके द्वारा इंटरनेट, सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग और रोज़मर्रा के लेन-देन के लिए भी आवश्यक है।

1. **सुरक्षा जागरूकता की संस्कृति का निर्माण करें** - हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे कर्मचारी सुरक्षा जागरूकता संस्कृति बनाने और बनाए रखने के महत्व को समझते हैं। हमें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि बैंक के भीतर प्रत्येक कर्मचारी साइबर सुरक्षा के महत्व और डेटा उल्लंघन के दूरगामी प्रभाव को समझता है। मानव त्रुटि साइबर हमले का पहला कारण बनी हुई है और साइबर अपराधी लक्षित हमले को शुरू करने के लिए साइबर सुरक्षा जागरूकता की कमी का फायदा उठाने के लिए तत्पर हैं। एक व्यापक सुरक्षा रणनीति का विकास संवेदनशील डेटा की रक्षा करेगा, खतरों को कम करेगा और यह सुनिश्चित करेगा कि संगठन की प्रतिष्ठा बरकरार रहे। बैंक प्रबंधन द्वारा कर्मचारियों की बैठकों में साइबर-जागरूकता के प्रति ज़ोर दिया जाना चाहिए।

2. **अनुकूल प्रतिस्पर्धा बनाएं** - विभागों या टीमों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का निर्माण करें और यह घोषणा करें कि जो विभाग सबसे अच्छा साइबर सुरक्षा नियमों का पालन करेगा, उसको पुरस्कृत किया जाएगा।

3. **सार्वजनिक जिम्मेदारी का एहसास-** हमें कर्मचारियों में यह भावना का विकास करना चाहिए कि साइबर सुरक्षा सिर्फ आईटी/ सीआईएसओ का कार्य नहीं बल्कि यह सभी विभाग के कर्मचारियों की ज़िम्मेदारी है । साइबर सुरक्षा को बनाएं रखने में सबकी भूमिका है । बेहतर साइबर-जागरूकता को बढ़ावा देने में मानव संसाधन से लेकर वित्त और विपणन तक सभी विभागों की समान भूमिका है।

4. **सुरक्षा जागरूकता प्रशिक्षण** - प्रभावी सुरक्षा जागरूकता प्रशिक्षण कर्मचारियों को साइबर सुरक्षा खतरों की बढ़ती सीमा की पहचान करने और उचित प्रतिक्रिया देने के तरीके के बारे

में प्रशिक्षण देने के लिए आवश्यक है। संगठन के हर स्तर पर सभी कर्मचारियों को यह प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनके पास हमले की पहचान करने के लिए आवश्यक कौशल है। साइबर सुरक्षा जागरूकता प्रशिक्षण आकर्षक और सूचनात्मक होना चाहिए ताकि कर्मचारियों द्वारा अपनी आवश्यकतओं को समझना सुनिश्चित किया जा सके.

साइबर सुरक्षा समाधान - ग्राहकों में जागरूकता एवं प्रसार के नए आयाम

आज की दुनिया मोबाइल-केंद्रित अल्ट्रा-कनेक्टिविटी की है। हालाँकि, इसका दूसरा पहलू इंटरनेट और इससे जुड़ी सभी चीजों द्वारा उत्पन्न साइबर जोखिम भी है। अतः ग्राहकों को साइबर अपराध से जुड़े जोखिम के बारे में अवगत कराएं और साइबर सुरक्षा के प्रति सजग करें।

1. **ग्राहकों को साइबर अपराध के मूल रूप से अवगत कराएं -** सुरक्षा की एक मजबूत संस्कृति बनाने के लिए बैंक को अपने कर्मचारियों के साथ साथ, ग्राहकों को प्रशिक्षित करना जरूरी है। ग्राहकों को साइबर खतरों के बारे में शिक्षित करने से, ग्राहक के साथ मजबूत संबंध बनाने में भी मदद मिलती है। ग्राहकों को निम्नलिखित सुरक्षा जागरूकता विषयों से अवगत कराएं, जिनमें शामिल हैं:
   - फ़िशिंग और सोशल इंजीनियरिंग - मैलवेयर की सबसे आम डिलीवरी विधि और अकाउंट क्रेडेंशियल से समझौता करना सोशल इंजीनियरिंग है। विभिन्न प्रकार के सोशल इंजीनियरिंग हमलों पर शिक्षा प्रदान करना और हमले के जोखिम को कम करने के लिए कौन से नियंत्रण अपनाए जा सकते हैं, जो जोखिम को काफी कम कर सकते हैं इसके बारे में शिक्षित करना, इस श्रेणी का एक महत्वपूर्ण बिंदु है।
   - पासवर्ड सहित एक्सेस नियंत्रण - ग्राहकों को उनके द्वारा एक्सेस किए जाने वाले सिस्टम के भीतर और उन पर मजबूत प्रमाणीकरण तंत्र के महत्व के बारे में शिक्षित करें। जब पासवर्ड की बात आती है तो लंबाई बनाम जटिलता के महत्व पर जोर दें और ग्राहकों को जब भी संभव हो बहु-कारक प्रमाणीकरण (एमएफए) लागू करने के लिए प्रोत्साहित करें।
   - मोबाइल डिवाइस सुरक्षा - मजबूत पासवर्ड, बायोमेट्रिक (फिंगरप्रिंट और फेशियल रिकग्निशन) प्रमाणीकरण, एन्क्रिप्शन, एंटी-मैलवेयर प्रोग्राम और वाई-फाई कनेक्टिविटी सहित मोबाइल उपकरणों के लिए सुरक्षा नियंत्रण के बारे में ग्राहकों को शिक्षित करें।
   - मैलवेयर जागरूकता - रैनसमवेयर, ट्रोजन, स्पाईवेयर आदि सहित दुर्भावनापूर्ण सॉफ़्टवेयर से बचाव के बारे में ग्राहकों को शिक्षित करें।
   - एंटी-वायरस और फायरवॉल का महत्व - फायरवॉल के महत्व और एंटी-वायरस या एंटी-मैलवेयर जैसे दुर्भावनापूर्ण प्रोग्राम डिटेक्शन प्रोग्राम के उपयोग पर जोर दें।

2. **अपने ग्राहकों को प्रशिक्षित करें -** अपने ग्राहकों को प्रशिक्षित करने के सबसे लोकप्रिय और प्रभावी तरीके निम्न हैं:
   - ग्राहकों को साइबर अपराध से जुड़े जोखिम के बारे में पत्राचार और ईमेल के माध्यम से अवगत कराएं।
   - अपनी व्यावसायिक वेबसाइट और अपने सोशल मीडिया चैनलों (लिंक्डइन, फेसबुक, इंस्टाग्राम,यूट्यूब,व्हाट्सप्प आदि) पर साइबर सुरक्षा संसाधनों या समाचारों को पोस्ट करना।
   - खाता खोलते समय साइबर सुरक्षा संसाधन, नियंत्रण सुझाव (जैसे मजबूत पासवर्ड बनाना), या स्व-लेखापरीक्षा प्रदान करना।
   - ब्रांच या ऑफिस परिसर में ग्राहक सूचना पटल पर साइबर सुरक्षा संसाधनों या समाचारों को स्थापित करना।
   - नेटबैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और एसएमएस बैंकिंग के माध्यम से जागरूकता प्रदान करना ।
   - एटीएम, किओस्क और नेडू जैसे स्वचलित उपकरणो के माध्यम से जागरूकता प्रदान करना ।

ग्राहकों की साइबर सुरक्षा शिक्षा, वित्तीय संस्थानों के लिए एक आवश्यकता है और यह आपके साइबर सुरक्षा जोखिम को कम करने में भी एक आवश्यक घटक है। अतः याद रखें कि साइबर जागरूकता एक यात्रा है, जिसे आप भूल नहीं सकते हैं। जिस तरह आपके बैंक की सुरक्षा लगातार बदल रही है और विकसित हो रही है, उसी तरह आपके जागरूकता के प्रयास भी होने चाहिए। अपनी प्रक्रियाओं और नीतियों में कमियों, बाधाओं और कमजोरियों की तलाश करें। साईबर सुरक्षा आवश्यकता नहीं अनिवार्यता है।

मनु
डीआईटी, पवई

वैश्वीकरण का भारतीय कला, संस्कृति और विरासत पर प्रभाव

वैश्वीकरण, देशों के बीच आपसी जुड़ाव और परस्पर निर्भरता की प्रक्रिया, आज के समय में समाजों को आकार देने वाली सबसे प्रभावशाली ताकतों में से एक बन गई है. यह वस्तुओं, सेवाओं, प्रौद्योगिकी, सूचना और सांस्कृतिक मूल्यों का राष्ट्रीय सीमाओं के पार मुक्त प्रवाह सुनिश्चित करता है. जहां वैश्वीकरण ने आर्थिक समृद्धि और नवाचार को बढ़ावा दिया है, वहीं इसका एक राष्ट्र के अमूर्त पहलुओं — अर्थात् उसकी कला, संस्कृति और विरासत — पर गहरा और बहुआयामी प्रभाव पड़ा है.

भारत, जो विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है और विविध परंपराओं, कलाओं और सांस्कृतिक प्रथाओं का एक समृद्ध भंडार रखता है, वैश्वीकरण की ताकतों के तहत महत्वपूर्ण रूप से परिवर्तित हुआ है. विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों का संगम स्थल और सदियों पुरानी विरासत का केंद्र होने के नाते, भारतीय समाज एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहां परंपरा और आधुनिकता का मिलन हो रहा है. यह लेख वैश्वीकरण के भारतीय कला, संस्कृति और विरासत पर प्रभाव के विभिन्न पहलुओं की पड़ताल करता है, जो इसके सकारात्मक प्रभावों और इसके द्वारा उत्पन्न चुनौतियों दोनों को उजागर करता है.

वैश्वीकरण और भारतीय कला : भारतीय कला — जिसमें दृश्य कला, शिल्प, नृत्य रूप, संगीत, रंगमंच और सिनेमा शामिल हैं — इतिहास का संरक्षणकर्ता भी रही है और निरंतर विकसित होने वाली एक इकाई भी. भारतीय कला पर वैश्वीकरण के प्रभाव को कई प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है: वैश्वीकरण ने भारतीय कला रूपों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलाई है. भारतीय कलाकार, चित्रकार, मूर्तिकार और कारीगर अब विश्व की प्रतिष्ठित प्रदर्शनियों और दीर्घाओं में प्रदर्शित किए जा रहे हैं. भरतनाट्यम, कथक और ओडिसी जैसे शास्त्रीय भारतीय नृत्य रूपों के साथ-साथ हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत परंपराओं ने भी अंतरराष्ट्रीय दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया है. आधुनिक भारतीय चित्रकार जैसे एम.एफ. हुसैन और समकालीन कलाकार जैसे सुभोध गुप्ता को वैश्विक स्तर पर सराहना मिली है.

वैश्वीकरण से उत्पन्न प्रमुख सांस्कृतिक घटनाओं में से एक है "फ्यूजन" या सम्मिश्रण. वैश्विक कला शैलियों और तकनीकों के संपर्क ने भारतीय कलाकारों को पारंपरिक रूपांकनों को आधुनिक सौंदर्यशास्त्र के साथ मिलाने और प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया है. पारंपरिक भारतीय कला का पश्चिमी या आधुनिक तत्वों के साथ मेल भारतीय और वैश्विक दोनों दर्शकों को आकर्षित करने वाले संकर (हाइब्रिड) कला रूपों का निर्माण कर रहा है. उदाहरण के लिए, भारतीय सिनेमा — जिसे लोकप्रिय रूप से बॉलीवुड कहा जाता है — ने पश्चिमी कथा तकनीकों, छायांकन और संगीत प्रवृत्तियों को अपनाया है, जिससे ऐसी फिल्में बनी हैं जो भारतीय सीमाओं से परे दर्शकों के साथ भी जुड़ती हैं.

वैश्वीकरण ने पारंपरिक भारतीय हस्तशिल्प और लोक कला में नई रुचि उत्पन्न की है. बनारसी और कांजीवरम साड़ियों, मधुबनी पेंटिंग्स और राजस्थान तथा कश्मीर जैसे क्षेत्रों के हस्तशिल्पों की अंतरराष्ट्रीय मांग ने कारीगरों को आर्थिक प्रोत्साहन प्रदान किया है. हालांकि, वैश्विक बाजारों के लिए कला का व्यावसायीकरण कभी-कभी पारंपरिक तकनीकों और आध्यात्मिक महत्व में कमी ला देता है और इसे बड़े पैमाने पर उत्पादन और व्यावसायिक आकर्षण की ओर धकेल देता है.डिजिटल प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन गैलरी भारतीय कलाकारों के लिए अपने कार्यों को अंतरराष्ट्रीय दर्शकों तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण माध्यम बन गए हैं. वर्चुअल प्रदर्शनियों, सोशल मीडिया और ई-कॉमर्स के उपयोग से दूरदराज के क्षेत्रों के कलाकार भी वैश्विक ग्राहकों तक पहुंच पा रहे हैं. यह डिजिटल परिवर्तन भारतीय कला तक पहुंच को लोकतांत्रिक बना रहा है और क्रॉस-कल्चरल एक्सचेंज और सहयोग को बढ़ावा दे रहा है.

वैश्वीकरण और भारतीय संस्कृति: भारत की संस्कृति भाषाओं, धर्मों, अनुष्ठानों, त्योहारों, व्यंजनों और सामाजिक प्रथाओं का एक जटिल मिश्रण है. वैश्वीकरण ने इन सभी पहलुओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है और सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक प्रथाओं को पुनः परिभाषित किया है. वैश्वीकरण ने एक ऐसे वातावरण को प्रोत्साहित किया है जहां भारतीय परंपराएं वैश्विक रीति-रिवाजों का संगम होता है. यह सांस्कृतिक सम्मिश्रण विशेष रूप से भारत के शहरी मध्य वर्ग की जीवनशैली में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहां पश्चिमी प्रथाओं को पारंपरिक मूल्यों के साथ मिलाकर अपनाया जाता है. पश्चिमी परिधान शैली, फास्ट फूड श्रृंखलाएं और पॉप संस्कृति अब भारतीय त्योहारों, भोजन और अनुष्ठानों के साथ सह-अस्तित्व में हैं. विविध सांस्कृतिक प्रभावों का यह सह-अस्तित्व दृष्टिकोणों का विस्तार करता है और मुंबई, दिल्ली और बेंगलूरु जैसे महानगरों में एक बहुसांस्कृतिक संस्कृति का निर्माण करता है.

वैश्विक विचारधाराओं और मूल्य प्रणालियों के प्रवाह के साथ, सामाजिक दृष्टिकोण में धीरे-धीरे परिवर्तन हुआ है, विशेष रूप से लैंगिक भूमिकाओं, व्यक्तिवाद और पारिवारिक संरचनाओं के संबंध में. पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली धीरे-धीरे शहरी क्षेत्रों में एकल परिवारों द्वारा प्रतिस्थापित की जा रही है.

वैश्वीकरण की भाषा के रूप में अंग्रेजी शिक्षा, व्यवसाय और मीडिया में संचार का प्रमुख माध्यम बन गई है. जबकि क्षेत्रीय भाषाओं के अस्तित्व को मज़बूत करने हेतु नए माध्यम विकसित हो रही हैं. तथापि विशेष रूप से युवाओं के बीच स्थानीय बोलियों और भाषाओं के घटते उपयोग को लेकर चिंता

बढ़ रही है. वैश्विक मीडिया सामग्री, जैसे हॉलीवुड फिल्में, अंतरराष्ट्रीय समाचार और पश्चिमी संगीत, पारंपरिक भारतीय मनोरंजन और साहित्य के साथ प्रतिस्पर्धा कर रही है और स्वाद और पसंद को प्रभावित कर रही है. कई भारतीय त्यौहार, अपनी पारंपरिक भावना को बनाए रखते हुए, अब आधुनिक तत्वों को भी अपना चुके हैं. दीवाली, होली और नवरात्रि जैसे त्योहार अब अक्सर कॉर्पोरेट प्रयोजन, व्यावसायीकरण और मीडिया कवरेज के साथ मनाए जाते हैं. इससे एक तरफ भारतीय त्यौहारों की वैश्विक लोकप्रियता बढ़ी है, वहीं इसके कारण इन उत्सवों की आध्यात्मिक गहराई में कमी और सांस्कृतिक प्रथाओं के व्यावसायीकरण को लेकर भी चिंता उत्पन्न हुई है.

वैश्वीकरण और भारतीय विरासत: भारत की विरासत, जिसमें स्मारक, ऐतिहासिक स्थल, दर्शन और अमूर्त सांस्कृतिक प्रथाएं शामिल हैं, इसके ऐतिहासिक उत्तराधिकार की गवाही देती है. इस विरासत पर वैश्वीकरण का प्रभाव दोहरा रहा है — एक ओर यह इसके संरक्षण में मदद कर रहा है और दूसरी ओर इसके क्षरण में भी योगदान दे रहा है. यूनेस्को जैसी वैश्विक संस्थाओं ने भारत की सांस्कृतिक विरासत को पहचानने और संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. ताजमहल, हम्पी और जयपुर का ऐतिहासिक दीवारों से घिरा शहर जैसे कई भारतीय स्थलों को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है. वैश्विक जागरूकता और पर्यटन में वृद्धि ने प्राचीन स्मारकों और मंदिरों के पुनरुद्धार और संरक्षण में निवेश को प्रोत्साहित किया है. इसके अतिरिक्त, अंतरराष्ट्रीय फंडिंग और सहयोग ने संकटग्रस्त सांस्कृतिक प्रथाओं और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों के संरक्षण के प्रयासों में मदद की है.

वैश्वीकरण ने सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा दिया है, जिसमें दुनिया भर से यात्री भारत की विरासत का अनुभव करने के लिए आते हैं. वाराणसी, जयपुर, खजुराहो और हम्पी जैसे शहर विरासत पर्यटन के प्रमुख केंद्र बन गए हैं. इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ मिला है और कारीगरों, मार्गदर्शकों और अन्य हितधारकों के लिए आजीविका के अवसर पैदा हुए हैं. हालांकि, अनियंत्रित पर्यटन के कारण कभी-कभी भीड़-भाड़, प्रदूषण और व्यावसायिक शोषण के चलते स्मारकों और पवित्र स्थलों का क्षरण हो जाता है.

वैश्वीकरण के अनपेक्षित परिणामों में से एक है सांस्कृतिक एकरूपीकरण, जहां स्थानीय परंपराएं वैश्विक प्रवृत्तियों के अधीन हो जाती हैं. पश्चिमी उपभोक्ता संस्कृति, फास्ट फूड शृंखलाओं और वैश्विक मनोरंजन उद्योगों के उदय से पारंपरिक जीवनशैली का धीरे-धीरे क्षरण हो सकता है, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में. उदाहरण के लिए, लोककथाओं, पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान और क्षेत्रीय कला रूपों जैसी स्वदेशी प्रथाएं कम हो सकती हैं क्योंकि युवा पीढ़ी आधुनिक जीवनशैली और वैश्विक मूल्यों की ओर आकर्षित होती है. वैश्वीकरण से प्रेरित तीव्र शहरीकरण ने विरासत स्थलों और पारंपरिक समुदायों के विस्थापन को जन्म दिया है. शहरों के विस्तार से अक्सर ऐतिहासिक स्थलों और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण परिदृश्यों पर अतिक्रमण हो जाता है. कुछ मामलों में, आधुनिकीकरण परियोजनाओं के कारण पुराने मोहल्लों और बाजारों को ध्वस्त कर दिया गया है, जो सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थे. इस भौतिक क्षरण के साथ-साथ सामुदायिक पहचान और ऐतिहासिक निरंतरता का भी नुकसान होता है.

वैश्वीकरण और सांस्कृतिक अखंडता के बीच संतुलन: जहां वैश्वीकरण प्रगति के नए अवसर लाता है, वहीं यह आधुनिकता को अपनाने और सांस्कृतिक अखंडता को संरक्षित करने के बीच एक सूक्ष्म संतुलन की भी मांग करता है. कला, संस्कृति और विरासत के संदर्भ में वैश्वीकरण के प्रति भारत की प्रतिक्रिया लचीलेपन और अनुकूलता का परिचायक रही है. इस संतुलन को बनाए रखने के लिए विभिन्न उपायों को अपनाया जा सकता है. स्कूली शिक्षा में सांस्कृतिक अध्ययन और विरासत से संबंधित विषयों को शामिल करना युवाओं में गौरव और जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न कर सकता है. छात्रों को पारंपरिक कला रूपों, भाषाओं और रीति-रिवाजों से परिचित कराना आधुनिक जीवनशैली और पुरातन विरासत के बीच सेतु का कार्य कर सकता है. इससे युवा पीढ़ी में अपनी जड़ों और पहचान के प्रति जुड़ाव बना रहेगा.

स्थानीय कारीगरों, शिल्पकारों और पारंपरिक ज्ञान धारकों को सरकारी नीतियों, अनुदानों और वैश्विक साझेदारियों के माध्यम से समर्थन प्रदान करना आवश्यक है. फेयर ट्रेड (न्यायसंगत व्यापार) पहल और संवहनीय पर्यटन मॉडल ऐसे तंत्र विकसित कर सकते हैं जहां पारंपरिक समुदाय, बिना अपनी सांस्कृतिक प्रामाणिकता को खोए, वैश्वीकरण से लाभान्वित हो सकें.

पांडुलिपियों, मौखिक परंपराओं और ऐतिहासिक अभिलेखों का डिजिटल रूप में संग्रहण सांस्कृतिक ज्ञान को भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने में सहायक हो सकता है. विरासत स्थलों के वर्चुअल टूर, ऑनलाइन प्रदर्शनियां और इंटरैक्टिव प्लेटफॉर्म वैश्विक दर्शकों को आकर्षित कर सकते हैं, साथ ही बड़े पैमाने पर पर्यटन के कारण होने वाले पर्यावरणीय प्रभाव को भी कम कर सकते हैं. भारत की 'सॉफ्ट पावर' उसकी संस्कृति और विरासत को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने में निहित है. अंतरराष्ट्रीय योग दिवस जैसी पहलों और वैश्विक सांस्कृतिक मंचों में भागीदारी के माध्यम से भारत ने सफलतापूर्वक अपनी परंपराओं का प्रचार-प्रसार किया है. सांस्कृतिक कूटनीति अंतर-सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने और एक जुड़ी हुई दुनिया में राष्ट्रीय पहचान को मजबूत करने में सहायक है.

अभिजीत ताकवाले
क्षे. का., पुणे मेट्रो

रज पर्व

नारीत्व, प्रकृति और उत्सव का अनोखा संगम

रज पर्व (उण 'र-ज'), जिसे मिथुन संक्रांति भी कहा जाता है, ओडिशा का एक अनोखा और हर्षोल्लास से भरा हुआ त्योहार है. यह पर्व नारीत्व, प्रजनन क्षमता और कृषि चक्र का उत्सव है, जो प्रकृति और स्त्री शक्ति के प्रति ओडिशा की गहरी श्रद्धा को दर्शाता है. यह विशेष रूप से अविवाहित लड़कियों के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि यह उनके स्त्रीत्व की यात्रा का प्रतीक है.

यह पर्व तीन दिनों तक मनाया जाता है (कभी-कभी चार दिन तक), जिसमें महिलाओं को विश्राम और आनंद का अवसर दिया जाता है. ऐसा माना जाता है कि इन दिनों धरती माता रजस्वला होती हैं और जैसे महिलाएं मासिक धर्म के दौरान आराम करती हैं, वैसे ही भूमि को भी इस दौरान जोतने या किसी अन्य कृषि कार्य से मुक्त रखा जाता है.

रज पर्व केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि समाज में महिलाओं के महत्व, उनके सम्मान और उनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का एक प्रतीक है. यह संयोग ही है कि यह पर्व अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के विचारों से भी जुड़ता है—जहाँ हम नारीत्व का उत्सव मनाते हैं, उनके अधिकारों की बात करते हैं, और उनके योगदान को स्वीकारते हैं. रज पर्व हमें यह सिखाता है कि एक स्त्री का मासिक धर्म उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी सृजनशक्ति का प्रतीक है.

इससे जुड़ी कुछ पौराणिक मान्यताएँ इस प्रकार हैं -

1. भूदेवी और भगवान जगन्नाथ का संबंध: कहा जाता है कि भूदेवी (धरती माता) भगवान जगन्नाथ की पत्नी हैं. इस पर्व के दौरान वे मासिक धर्म से गुजरती हैं, और चौथे दिन वे स्नान करती हैं. चूंकि ओडिशा में भगवान जगन्नाथ की पूजा का विशेष महत्व है, इसलिए यह मान्यता यहाँ की परंपराओं में गहराई से जुड़ी हुई है.

2. मिथुन संक्रांति और मानसून की शुरुआत: रज पर्व मिथुन संक्रांति के साथ आता है, जो यह दर्शाता है कि सूर्य मिथुन राशि में प्रवेश कर रहा है. यह समय कृषि के लिए बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि इसी समय मानसून आता है और धरती को नई उपज के लिए तैयार करता है.

3. देवी पार्वती और नारीत्व का सम्मान: एक अन्य मान्यता के अनुसार, रज पर्व देवी पार्वती की किशोरावस्था से जुड़ा हुआ है. ऐसा माना जाता है कि इन तीन दिनों में उन्होंने अपना पहला मासिक धर्म प्राप्त किया था.

रज पर्व की परंपराएँ और रस्में

रज पर्व चार दिनों तक मनाया जाता है, जिनमें से प्रत्येक दिन का एक विशेष महत्व होता है—

1. पहिली रज (पहला दिन): यह पर्व की शुरुआत होती है. घरों की सफाई की जाती है और महिलाएँ सुबह जल्दी उठकर हल्दी और सुगंधित उबटन से स्नान करती हैं. इस दिन से कृषि कार्यों को पूरी तरह से रोक दिया जाता है.

2. रज संक्रांति (दूसरा दिन, मुख्य दिन): इसे "मिथुन संक्रांति" भी कहा जाता है. इस दिन पूरी तरह से उत्सव का माहौल रहता है. महिलाएँ लाल आलता लगाती हैं, नई साड़ियाँ पहनती हैं, और झूला झूलती हैं.

3. बासी रज (तीसरा दिन): तीसरे दिन भी महिलाओं का विश्राम और आनंद जारी रहता है. खेलकूद, लोकगीत, और पारंपरिक नृत्य इस दिन की खासियत होते हैं.

4. वसुमति स्नान (चौथा दिन): चौथे दिन को "वसुमति गधुआ" कहा जाता है, जिसका अर्थ है "धरती माता का स्नान." इस दिन महिलाएँ सिल-बट्टे को हल्दी, चंदन और फूलों से सजाकर स्नान कराती हैं जिससे धरती को पुनः शुद्ध माना जाता है. इसके बाद खेतों की जुताई फिर से शुरू होती है.

रज पर्व की विशेषताएँ

1. झूले और लोकगीत: रज पर्व के दौरान झूला झूलना इस उत्सव की सबसे रोमांचक और खूबसूरत परंपराओं में से एक है. गाँवों और शहरों में आम, बरगद या पीपल के पेड़ों की शाखाओं पर रस्सी के झूले बाँधे जाते हैं जिन्हें रंगीन कपड़ों और फूलों से सजाया जाता है. लड़कियाँ और महिलाएँ इन झूलों पर बैठकर झूलती हैं और पारंपरिक रज गीत गाती हैं, जो इस पर्व की खुशी और नारीत्व का उत्सव मनाने का प्रतीक होते हैं.

झूला झूलना सिर्फ एक खेल नहीं, बल्कि यह स्वतंत्रता, उमंग और स्त्रियों की ऊर्जा को दर्शाने वाला एक अनोखा अनुभव होता है. यह परंपरा स्त्रियों को समाज की ज़िम्मेदारियों से कुछ समय के लिए मुक्त होकर खुद को आनंदित करने और अपने स्त्रीत्व का जश्न मनाने का अवसर देती है. यह एक तरह से नारी जीवन की चंचलता और सौंदर्य का प्रतीक है, जो प्रकृति के साथ उनका गहरा संबंध भी दर्शाता है.

2. पुची खेल (महिलाओं का पारंपरिक खेल)

इस दौरान लड़कियाँ पुची नामक खेल खेलती हैं. इस खेल में लड़कियाँ ज़मीन पर बैठकर घुटनों को मोड़ते हुए उछलती हैं और अपने शरीर का संतुलन बनाए रखती हैं. यह खेल न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि इसे स्त्रियों की शारीरिक लचीलापन, सहनशक्ति और संतुलन बढ़ाने के लिए भी महत्वपूर्ण माना जाता है. पुची खेल को नारीत्व की शक्ति और स्त्रियों की प्राकृतिक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है, जो जीवन में हर परिस्थिति में सामंजस्य बनाए रखने की क्षमता दर्शाता है.

3. कबड्डी और ग्रामीण खेलकूद

रज पर्व सिर्फ महिलाओं के विश्राम और

आनंद का त्यौहार नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज के लिए उत्साह और ऊर्जा का संचार करता है. इस अवसर पर पुरुष और युवा कबड्डी, कुश्ती, दौड़ और अन्य पारंपरिक ग्रामीण खेलों में भाग लेते हैं. कबड्डी इस पर्व के सबसे लोकप्रिय खेलों में से एक है, जहाँ गाँव के युवा टीम बनाकर शक्ति, धैर्य और रणनीति का प्रदर्शन करते हैं. इन खेलों का आयोजन न केवल मनोरंजन के लिए किया जाता है, बल्कि यह ग्रामीण जीवन में सामूहिकता, भाईचारे और आत्मविश्वास को भी बढ़ावा देता है. खेलों के माध्यम से गाँवों में मेल-मिलाप बढ़ता है और युवा पीढ़ी को अपनी शारीरिक क्षमता और मानसिक दृढ़ता साबित करने का अवसर मिलता है. रज पर्व में ये खेल केवल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि यह जीवन की ऊर्जा और आनंद को समर्पित एक सामूहिक उत्सव का हिस्सा होते हैं, जो पूरे समाज को एकजुट करते हैं.

रज पर्व के विशेष व्यंजन

यह पर्व स्वादिष्ट पारंपरिक व्यंजनों के बिना अधूरा है -

1. पोड़ पीठा: रज पर्व का आनंद पोड़ पीठा के बिना अधूरा माना जाता है. यह ओडिशा का एक पारंपरिक और विशेष पकवान है, जिसे खासतौर पर इस त्यौहार के दौरान बनाया जाता है. 'पोड़' का अर्थ है 'भुना हुआ' और 'पीठा' एक प्रकार का मीठा पारंपरिक केक होता है. इसे चावल के आटे, गुड़, नारियल, काजू, किशमिश और इलायची को मिलाकर तैयार किया जाता है और फिर मिट्टी के चूल्हे या कोयले की धीमी आँच पर सेंककर पकाया जाता है. धीमी आँच पर पकने से इसका बाहरी हिस्सा हल्का कुरकुरा और अंदर से नरम तथा सुगंधित हो जाता है. रज पर्व में पोड़ पीठा न सिर्फ एक व्यंजन होता है, बल्कि यह सामूहिकता, खुशी और परंपरा का प्रतीक भी है. त्यौहार के दौरान महिलाएँ झूला झूलने, लोकगीत गाने और पारंपरिक खेल खेलने के बाद इस मीठे पकवान का स्वाद लेकर त्यौहार की खुशी को और बढ़ा देती हैं. परिवार के सभी सदस्य इसे प्रेमपूर्वक मिलकर खाते हैं, जिससे यह पकवान केवल स्वाद ही नहीं, बल्कि आपसी प्रेम और अपनापन भी बाँधता है.

2. मण्डा पीठा और अरीसा पीठा: यह ओडिशा का एक पारंपरिक व्यंजन है, जो खासतौर पर पूजा, त्यौहारों और विशेष अवसरों पर तैयार किया जाता है. मण्डा पीठा एक तरह का भाप में पकाया हुआ मीठा पीठा (केक) होता है, जिसे चावल के आटे से बनाया जाता है और इसके अंदर गुड़ और नारियल की स्वादिष्ट भरावन भरी जाती है. इसे आकार में गोल बनाया जाता है और फिर धीमी आंच पर स्टीम करके पकाया जाता है, जिससे इसका स्वाद और भी अनोखा हो जाता है.

3. छेना पोड़: रज पर्व के खास व्यंजनों में छेना पोड़ का एक अलग ही स्थान है. इसे ओडिशा की सबसे प्रसिद्ध मिठाइयों में से एक माना जाता है, जिसका अर्थ है "भुना हुआ पनीर". यह स्वादिष्ट मिठाई ताजे छेना (पनीर), गुड़ या चीनी, इलायची, सूखे मेवे और घी से बनाई जाती है. इसे पारंपरिक रूप से मिट्टी के चूल्हे में कोयले की धीमी आँच पर सेंका जाता है, जिससे इसका बाहरी हिस्सा हल्का करारा और भीतर से नरम तथा रसदार बन जाता है. इसकी खासियत इसका कैरमेलाइज्ड स्वाद और स्मोकी फ्लेवर होता है, जो इसे अनोखा बनाता है.

4. रज पान: रज पर्व के दौरान रज पान खाने की एक खास परंपरा होती है, जो इस त्यौहार की मिठास और उल्लास को और भी बढ़ा देती है. यह पारंपरिक बेतल पान (बेलपत्र पान) होता है जिसमें चूना, सुपारी और कभी-कभी मिश्री या गुड़ भरा जाता है. इसे खाने से पाचन तंत्र बेहतर रहता है और भोजन के बाद इसे विशेष रूप से चबाया जाता है. रज पर्व में जब महिलाएँ झूले झूलती हैं, पारंपरिक गीत गाती हैं और खेल-कूद में भाग लेती हैं, तब इस खास पान का स्वाद त्यौहार के आनंद को और भी बढ़ा देता है. इसे खाने का एक सांस्कृतिक महत्व भी है—यह न केवल स्वाद और स्वास्थ्य का संतुलन बनाए रखता है, बल्कि इसे शगुन और शुभता का प्रतीक भी माना जाता है. रज पर्व में इसे खाने का अर्थ त्यौहार की पारंपरिक मिठास को बनाए रखना और खुशी का आनंद लेना होता है.

रज पर्व और महिला सशक्तिकरण: रज पर्व केवल एक धार्मिक त्यौहार नहीं, बल्कि महिलाओं के सम्मान और उनकी प्राकृतिक शक्तियों के प्रति समाज के दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाने का एक जरिया भी है. यह त्यौहार हमें यह सिखाता है कि मासिक धर्म कोई वर्जित विषय नहीं, बल्कि यह स्त्री के सृजनात्मक और प्राकृतिक शक्ति का प्रमाण है. महिला दिवस की तरह, रज पर्व भी यह संदेश देता है कि समाज में स्त्रियों की भूमिका केवल घर तक सीमित नहीं है, बल्कि वे जीवनदायिनी हैं—जैसे धरती माता, जो बीज को अंकुरित करके जीवन देती हैं. आज जब हम महिलाओं के अधिकारों की बात करते हैं, तब यह पर्व और भी प्रासंगिक हो जाता है.

नारीत्व और प्रकृति का उत्सव: रज पर्व केवल ओडिशा का त्यौहार नहीं, बल्कि यह पूरी मानवता के लिए एक संदेश है - नारी को सम्मान दो, प्रकृति को सहेजो और सृजन शक्ति का उत्सव मनाओ. जैसे धरती माता हमें जीवन देती हैं, वैसे ही एक स्त्री भी समाज को नई पीढ़ी देने वाली शक्ति है. इस पर्व को मनाकर हम न केवल अपनी परंपराओं को जीवित रखते हैं, बल्कि समाज में महिलाओं के महत्व को भी स्वीकारते हैं. रज पर्व सिर्फ तीन दिनों का उत्सव नहीं, यह एक विचारधारा है जो नारी का सम्मान, प्रकृति का संरक्षण और जीवन का उत्सव को प्रतिपालित करता है.

आदित्य प्रसाद दास
क्षे. का., वरंगल

महिला विशेष कार्यशाला

अं. का., विशाखपट्टणम

अं. का., विजयवाडा

क्षे. का., आगरा

क्षे. का., अमरावती

क्षे. का., अनंतपुर

क्षे. का., बरेली

क्षे. का., बड़ौदा

क्षे. का., बेंगलूरु (उत्तर)

क्षे. का., भागलपुर

क्षे. का., चंदौली

क्षे. का., धनबाद

क्षे. का., दुर्गापुर

क्षे. का., एर्णाकुलम

क्षे. का., जालंधर

क्षे. का., नागपुर

क्षे. का., ग्रेटर पुणे

क्षे. का., कडपा

क्षे. का., उदयपुर

क्षे. का., कोल्लम

क्षे. का., लुधियाना

क्षे. का., मदुरै

क्षे. का., बोरीवली

क्षे. का., मैसूरु

क्षे. का., पटना

क्षे. का., रायपुर

क्षे. का., रांची

क्षे. का., रायगड़ा

क्षे. का., समस्तीपुर

क्षे. का., सिकंदराबाद

क्षे. का., ठाणे

क्षे. का., तृश्शूर

क्षे. का., तिरुप्पूर

क्षे. का., तिरुवनंतपुरम

क्षे. का., खम्मम

क्षे. का., आणंद

क्षे. का., वाराणसी

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में

अं. का., गांधीनगर

अं. का., वाराणसी

अं. का., विजयवाडा

अं. का., हैदराबाद

अं. का., विशाखपट्टणम

क्षे. का., बरेली

क्षे. का., बड़ौदा

क्षे. का., बेंगलूरु (उत्तर)

क्षे. का., भुवनेश्वर

जेडएलसी, गुरुग्राम

क्षे. का., बेंगलूरु (दक्षिण)

क्षे. का., बोरीवली

क्षे. का., एर्णाकुलम

क्षे. का., हासन

क्षे. का., अनंतपुर

क्षे. का., जालंधर

क्षे. का., कानपुर

क्षे. का., बठिंडा

क्षे. का., जयपुर

आयोजित कार्यक्रम/प्रतियोगिताएँ

क्षे. का., पुणे

क्षे. का., खम्मम

क्षे. का., कोल्लम

क्षे. का., कड़पा

क्षे. का., कोटा

क्षे. का., मैसूरु

क्षे. का., पटना

क्षे. का., सिकंदराबाद

क्षे. का., तृश्शूर

क्षे. का., श्रीकाकुलम

क्षे. का., तिरुवनंतपुरम

क्षे. का., उदयपुर

क्षे. का., अमरावती

क्षे. का., आगरा

क्षे. का., करीमनगर

क्षे. का., नागपुर

क्षे. का., राजमंड्री

क्षे. का., अहमदनगर

नराकास पुरस्कार

नराकास, मंगलूरु द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु अं.का., मंगलूरु को "विशेष पुरस्कार" प्रदान किया गया. दिनांक 05.02.2025 को आयोजित नराकास की 75वीं छमाही बैठक में श्री अनिर्बान कुमार बिश्वास, उप निदेशक (का.), क्षे.का..का. (दक्षिण) से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्रीमती रेणु के. नायर, अंचल प्रमुख तथा श्री के. के. यादव, मुख्य प्रबंधक (रा.भा.).

नराकास, बरेली द्वारा वर्ष 2024 हेतु क्षे. का., बरेली को सर्वोत्कृष्ट पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 22.01.2025 को श्री छबिल कुमार मेहेर, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का. (उत्तर-2) से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री प्रेमप्रकाश उपाध्याय, उप क्षेत्र प्रमुख तथा श्री राधा रमन शर्मा, प्रबंधक (रा.भा).

नराकास, वडोदरा द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु क्षे. का., बड़ौदा को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 27.01.2025 को श्री संजीव कुमार दुबे , विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग) गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री जुगल किशोर रस्तोगी, उप क्षेत्र प्रमुख तथा सुश्री उपासना सिरसैया, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.).

नराकास, ठाणे द्वारा वर्ष 2024 हेतु क्षे. का., मुंबई-ठाणे को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 27.01.2025 को डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का. (पश्चिम) से पुरस्कार प्राप्त करते हुए सुश्री सी एस जननी, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री सुधीर प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा).

नराकास(बैंक व बीमा), कोच्चि द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु क्षे. का., एर्णाकुलम को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 16.01.2025 को श्री टी वी राव, महा प्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक से पुरस्कार प्राप्त हुए श्री टी एस श्याम सुंदर, क्षेत्र प्रमुख तथा सुश्री बिनु टी एस, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.).

नराकास, भुवनेश्वर द्वारा वर्ष 2024 हेतु क्षे. का., भुवनेश्वर को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया.दिनांक 21.01.2025 को डॉ. विचित्रसेन गुप्त, उप निदेशक(का), क्षे.का.का.(पूर्व) और श्री दिनेश परुथी, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री जीतेंद्र कुमार सामल, उप क्षेत्र प्रमुख तथा सुश्री प्रीति साव, प्रबंधक(रा.भा.).

नराकास, तिरुचिरापल्ली द्वारा वर्ष- 2024 हेतु क्षे. का., तिरुचिरापल्ली को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 07.02.2025 को श्री अनिर्बान कुमार बिश्वास, उप निदेशक (का.), क्षे. का.का (दक्षिण) से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्रीमती बी. शारदा देवी, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री जनार्दन कुमार, सहायक प्रबंधक(रा.भा.)

नराकास, अनंतपुर द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु क्षे. का., अनंतपुर को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 30.01.2025 को श्री एम लारेंस, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री जितेंद्र कुमार मिश्रा, क्षेत्र प्रमुख, श्री के. श्रीनिवास, उप क्षेत्र प्रमुख तथा सुश्री किरण साव, सहायक प्रबंधक (रा.भा).

नराकास, सेलम द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु क्षे. का., सेलम को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 30.01.2025 को श्री एस. शिवलिंगम, उपाध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री पी. एम. सेंथिल कुमार, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री आशीष, सहायक प्रबंधक(रा.भा.)

नराकास,पणजी द्वारा वर्ष 2024 हेतु क्षे. का., गोवा को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 09.01.2025 को डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का. (पश्चिम) से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री मोहित आसायच्छ, वरिष्ठ प्रबन्धक तथा श्री अजीत कुमार गोयलस, वरिष्ठ प्रबन्धक(रा.भा.)

नराकास, धनबाद द्वारा राजभाषा सम्मेलन में प्रदर्शनी प्रतियोगिता हेतु क्षे. का., धनबाद को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 19.02.2025 को पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्रीमती दीपमाला लकड़ा, क्षेत्र प्रमुख, श्री उमेश कुमार, उप क्षेत्र प्रमुख तथा श्रीमती शारदा साव, प्रबंधक(रा.भा.).

नराकास मोगा द्वारा क्षे. का., लुधियाना की मोगा मुख्य शाखा को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 04.03.2025 को श्री आशीष, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री बलराम गेरा, मोगा मुख्य शाखा प्रमुख.

नराकास (बैंक एवं बीमा), कानपुर द्वारा क्षे. का., कानपुर की गृह पत्रिका 'यूनियन प्रगति' को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 27.03.2025 को श्री प्रेम चन्द्र चौधरी, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए सुश्री प्रेमा पाल, प्रबंधक (रा.भा.).

पद्म श्री – मालती जोशी

मालती जोशी हिंदी साहित्य का एक बड़ा नाम रहीं। उन्होंने साहित्य की दुनिया में काफी योगदान दिया और साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में भी। यही वजह है कि उन्हें पद्म श्री से भी सम्मानित किया गया। मालती जोशी का जन्म 4 जून, 1934 को औरंगाबाद जो उस समय हैदराबाद रियासत में व वर्तमान महाराष्ट्र राज्य का शहर है, में हुआ था। विवाह से पहले उनका नाम मालती कृष्णराव दिघे था। उनकी चार बहनें और तीन भाई थे। उनके पिता तत्कालीन मध्य प्रांत ग्वालियर में न्यायाधीश थे। छोटे-छोटे कस्बों में उनका तबादला होता रहता था। परिणामस्वरूप बचपन की पढ़ाई में एकरूपता नहीं रही। चौथी तक घर में ही पढ़ाई हुई। पाँचवी में एक स्कूल में नाम दर्ज हुआ जिसमें लड़के भी पढ़ते थे क्योंकि कन्याशाला मात्र चौथी तक थी। उन्होनें वर्ष 1956 में इंदौर के डॉ भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय के होल्कर कॉलेज से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की थी। फिर अपनी लेखनी की शुरुआत की, तो अनगिनत कहानियां और बाल कथाएं लिखीं।

बचपन में मालती जी ने शरतचंद्र को खूब पढ़ा था। इसलिए उनकी लेखनी के शुरुआती दौर में इसकी छाया उनके लेखन में दिखाई देती थी। इस बात पर शुरू-शुरू में उनको बुरा भी लगा फिर उन्होनें सोचा कि अगर शरत बाबू जैसे सर्वकालिक महान लेखक की छाप अगर मेरी कहानियों में दिख रही है तो यह तो गर्व की बात हो सकती है। गांधीजी की मृत्यु पर जब पूरा देश शोकाकुल था, तब उन्होने सबसे पहले कविता लिखी जो काफी सराही गई।

वर्ष 1959 में उनका विवाह सोमनाथ जोशी के साथ हुआ। वे मध्यप्रदेश के सिंचाई विभाग में अधीक्षण यंत्री के पद पर सेवारत थे इसलिए मालती जी को मध्यप्रदेश के कई शहरों में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। उनकी कहानियों को मध्यमवर्गीय परिवारों की दास्तां कहा जा सकता है, क्योंकि वे मानती थी यही उनके अनुभव हैं। परिवार उनकी पहली प्राथमिकता रही है और ससुराल और पीहर में लंबा चौड़ा परिवार होने के कारण पात्र और कथानक के लिए कभी भी भटकना नहीं पड़ा, कहानी लिखते समय कोई व्यक्ति, कोई बात, कोई प्रसंग अनायास याद आने पर वो उनकी कहानी में फिट हो जाता था। उनके पास सिर्फ स्कूल का अनुभव था जब वे अध्यापिका का काम करती थी।

सन 1981 से उनका निवास भोपाल ही रहा। वर्ष 2001 में उनके पति का देहांत हो गया। मालती जी के दो पुत्र हैं – ऋषिकेश

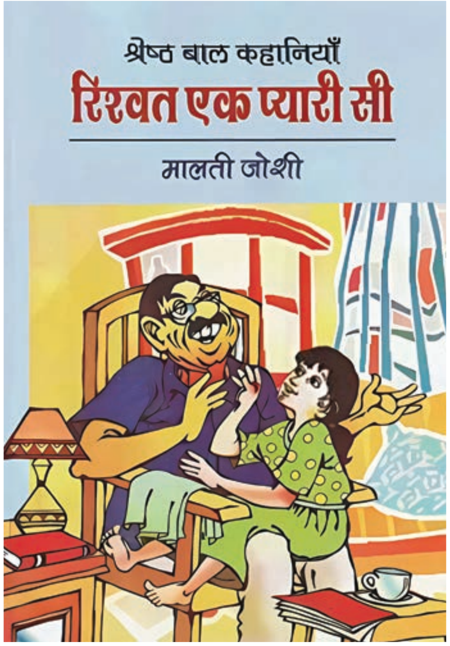

एवं सच्चिदानंद। आदर्श पत्नी, आदर्श माँ और आदर्श गृहिणी की भूमिका निभाते हुए उन्होनें अपने साहित्यिक जीवन को भी निर्बाध रखा।

उनकी विभिन्न रचनाओं की बात करें तो उन्होंने कई कहानियां, बाल कथाएं और उपन्यास लिखे। उनकी रचनाओं की खूबी रही है कि इनमें से अनेक रचनाओं का विभिन्न भारतीय व विदेशी भाषाओं में अनुवाद भी किया जा चुका है। साथ ही उनकी कहानियों को रेडियो और दूरदर्शन का भी हिस्सा बनाया जा चुका है। उनकी कुछ कहानियों पर गुलज़ार ने भी 'किरदार' धारावाहिक में कहानियों को दर्शाया है। साथ ही धारावाहिक 'सात फेरे' का भी निर्माण हुआ है। लोग उन्हें 'मालवा की मीरा' भी कहते थे।

अगर मालती जोशी जी के स्वयं के शब्दों में कहा जाए तो – ''कहानी रेसिपी नहीं, कि कल्पना, हकीकत, कॉमेडी और रोमांस के मसाले डाले जाएँ। कल्पना और हकीकत में, अनुभूति और अभिव्यक्ति में तालमेल से गढ़ी जाती है, यही काबिलियत लेखक को खास बनाती है। गहरी सोच से ही कहानी गढ़ी जा सकती है, जल्दबाज़ी न करें। पहले लंबी कहानियाँ पसंद आती थी, लेकिन आज के दौर में पाठक ऊब जाते हैं, और किताब बंद कर देते हैं। कहानी लिखते समय यह ध्यान रखा जाए कि अंत इतना खास हो कि कई दिनों तक लोगों के दिमाग में रहे। यदि अंत असरदार न हुआ तो लेखक की मेहनत बेकार जाती है।''

मालती जोशी की कहानियों की यह खूबी रही है कि उन्होनें महिलाओं के मुद्दों को संवेदनशील तरीके से बिना चीखे चिल्लाए अपने अंजाम तक पहुंचाया है। उन्होंने अपनी लेखनी में खूबसूरती और सहजता रखी है जिसमें जीवन की दैनिक आपाधापी को सुंदर तरीके से गूँथ दिया है।

मालती जोशी ने अपनी लेखनी के माध्यम से लेखन में एक युवा लड़की के पिता, दहेज व महंगाई जैसे मुद्दों पर विचार किया है और विस्तार से इस बारे में जानकारी दी है। आपके लिए यह जानना भी दिलचस्प होगा कि उन्होंने अपनी लेखनी की शुरुआत गीत लेखन से की थी। उनकी खासियत यह भी रही कि मराठी परिवेश में रहते हुए भी हिंदी भाषा पर खास पकड़ बनाई। उनकी कहानी संग्रहों की कहानियों की बात करें तो 'एक घर सपनों का', 'मध्यांतर मनन भये दस बीस', 'वसीयत का सारांश', 'मोरी रंग दे

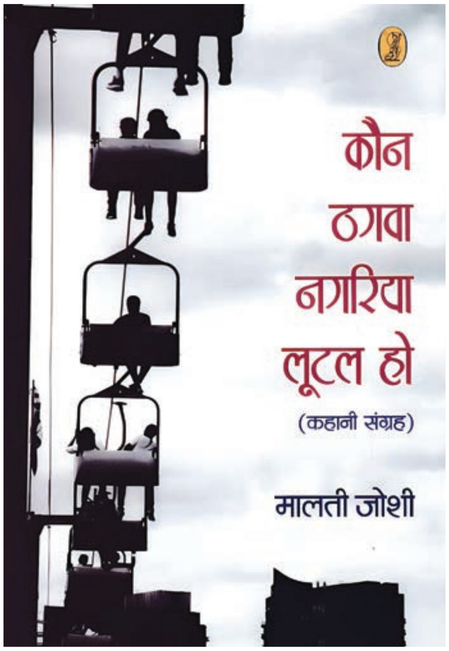

चुनरिया', 'अंतिम आक्षेप एक सार्थक दिन', 'बोल री कठपुतली', 'महकते रिश्ते', 'हाले स्ट्रीट', 'बाबुल का घर', 'शापित शैशव', 'वो तेरा घर ये मेरा घर', 'रहिमन धागा प्रेम का',' पिया पीर न जानी' और 'औरत एक रात है', 'आनंदी', 'विश्वास गाथा', 'एक सार्थक दिन', 'जीने की राह', 'विरासत', 'दादी की घड़ी'(बाल कथाएँ), 'रिश्वत एक प्यारी सी' (बाल कथाएँ), 'चाँद अमावस का', 'छोटा सा मन बड़ा सा दुख', 'समर्पण का सुख', 'अपनापन'(गीत संग्रह), 'मालती जोशी' (संचयिका), 'स्नेह के स्वर' (बाल कथा संग्रह), 'सफ़ेद जहर' (बाल साहित्य), 'हार्ले स्ट्रीट' (व्यंग्य) प्रमुख हैं। वे वर्ष 1969 में बच्चों के लिए लिखने लगी जिसे खूब सराहा गया। इसके बाद सरिता, निहारिका, कादम्बिनी में कहानियाँ छपने लगी। इसके अलावा दैनिक अखबारों के रविवारीय परिशिष्ट में भी कुछ कहानियाँ छपी। 1971 में हिन्दी पत्रिका धर्मयुग में उनकी पहली कहानी प्रकाशित हुई।

वहीं उनके द्वारा लिखे गए उपन्यास की बात करें, तो 'समर्पण का सुख', 'राग विराग', 'ज्वालामुखी के गर्भ में', 'सहचारिणी', 'चांद अमावस का',' पाषाण युग', 'निष्कासन', 'गोपनीय', 'ऋणानुबंध', 'पटाक्षेप' और 'शोभायात्रा' जैसे उपन्यास प्रमुख रहे हैं। उन्होंने अपने लेखन में कई बाल साहित्य भी लिखे हैं, जिनमें 'बेचैन', 'रिश्वत' 'एक प्यासी सी दिल्ली', 'दादी की घड़ी', 'रंग बदलते खरबूजे', 'बड़ा आदमी', और 'वह खुश था', 'जीने की राह' और 'एक कर्ज एक अदायगी' जैसे बाल साहित्य प्रमुख रहे। साथ ही मराठी कथा संग्रह में 'टूटने से जुड़ने तक', 'एक और देवदास', 'पाषाण युग' और 'कुहासे' प्रमुख रहे हैं। उनकी कहानियों की शैली की यह खूबी रही है कि उनकी भाषा सरल और सहज रही है। साथ ही संवेदनशीलता भी झलकती रही है। उनकी खूबी यह भी रही है कि उन्हें अपने किरदारों के जीवन में जरूरत से ज्यादा झांकना पसंद नहीं है। इसलिए वे अपने किरदारों की निजी जिंदगी में झांकने की बिल्कुल कोशिश नहीं करती हैं।

जीवन की छोटी-छोटी अनुभूतियों को, स्मरणीय क्षणों को मैं अपनी कहानियों में पिरोती रहीं हूँ। ये अनुभूतियाँ कभी मेरी अपनी होती है कभी मेरे अपनों की। और इन मेरे अपनों की संख्या और परिधि बहुत विस्तृत है। वैसे भी लेखक के लिए आप पर भाव तो रहता ही नहीं है। अपने आसपास

बिखरे जगत का सुख-दुख उसी का सुख दुख हो जाता है। और शायद इसलिए मेरी अधिकांश कहानियाँ "मैं" के साथ शुरू होती हैं।

गद्य और पद्य दोनों ही विद्याओं में मालती जी की भाषा सरल और सहज होती थी। इसके पीछे कारण यही है कि उनकी कविताओं और कहानियों में बाल एवं स्त्री मनोविज्ञान की गहरी पड़ताल झलकती है। इस पड़ताल में पुरुषों को गुनहगार ठहराने के बजाय व्यवस्थागत दोष उजागर होते हैं। शब्दातीत एवं पटापेक्ष जैसी कहानियों में पुरुषों की भली- सी छवि चित्रित होती है, महिला लेखन में जिसका प्राय: अभाव सा नजर आता है। उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय परिवारों की गहन मानवीय संवेदना के साथ नारी मन के सूक्ष्म स्पंदन में ध्वनित होते हैं। सरल सहज भाषा में आंचलिक शब्दों के साथ अलंकारिक शब्दों का नियोजन भी झलकता है। एक साक्षात्कार में उन्होनें लेखन प्रक्रिया के बारे में चर्चा करते हुए कहा था कि- मैंने कभी किसी और के कथा बीज को आधार नहीं बनाया। कभी कोई चेहरा मन को बांध लेता है, कोई घटना चेतना पर छा जाती है, फिर सब मन में उथल-पुथल होते रहते हैं, कुछ समय बाद कहानी बनकर कागज पर उतर जाते हैं, मैं उन्हें एक सूत्र में पिरो देती हूँ, मेरा श्रेय सिर्फ इतना ही है।

साहित्य के साथ पाक कला, बुनाई और संगीत में उनकी विशेष अभिरुचि रही। मैट्रिक तक संगीत एक विषय के रूप में उनके साथ रहा। उसके बाद रेडियो उनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग बन गया। संगीत के प्रति यह अनुराग उनकी विभिन्न कहानियों जैसे मन न भये दस- बीस, कुहांसे, एक जंगल आदमियों का आदि में देखा जा सकता है।

पुरस्कार और सम्मान

मालती जोशी का रुख पुरस्कारों के प्रति सदैव तटस्थ ही रहा है। वे स्पष्ट रूप से कहती हैं कि पुरस्कारों के लिए लिखित आवेदन करना भीख मांगने जैसा है, इसलिए बेहतर यही होगा सरकार के प्रतिनिधि रचनाकार समकालीन साहित्य को गौर से पढ़ें और फिर चुनाव करें।

मालती जोशी ने अपने जीवनकाल में कई पुरस्कार और सम्मान हासिल किए हैं। उन पुरस्कारों में भारतीय भाषा परिषद के द्वारा 'कोलकाता का रचना' पुरस्कार अहम रहा, जो उन्हें वर्ष 1983 को प्राप्त हुआ।उस समय उक्त संस्था द्वारा पुरस्कृत होने वाली वह पहली महिला साहित्यकार थी। इसके बाद, उन्हें वर्ष 1984 में मराठी पुस्तक 'पाषाण युग' के लिए 'महाराष्ट्र शासन' का पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह उन्हें उनके हिन्दी में रचित हिन्दी लघु उपन्यास पाषाणयुग का हिन्दी अनुवाद के लिए मिला। फिर मध्य प्रदेश के राज्यपाल द्वारा 'अहिंदी भाषी लेखिका' के रूप में भी उन्हें पुरस्कार दिया गया। वर्ष 2006 में मध्यप्रदेश शासन का 'शिखर सम्मान' साहित्य अवदान के लिए दिया गया। उन्हें वर्ष 2009 में प्रभाकर माचवे सम्मान से नवाजा गया। उन्हें वर्ष 2011 में 'ओजस्विनी पुरस्कार' और 'दुष्यंत कुमार साधना पुरस्कार' से भी नवाजा जा चुका है। वर्ष 2013 में मध्यप्रदेश राजभाषा प्रचार समिति का सम्मान प्राप्त हुआ। वर्ष 2016 में कमलेश्वर स्मृति सम्मान भी प्राप्त हुआ। साथ ही वर्ष 2017 में 'मैथिलीशरण गुप्त' जैसे प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मान और वनमाली स्मृति सम्मान' से नवाजा जा चुका है। मालती जोशी को वर्ष 2018 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा 'पद्म श्री' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उन्हें 2018 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।

90 वर्ष की आयु में 15 मई 2024 को नई दिल्ली में उनके आवास पर निधन हो गया। वे अन्नप्रणाली के कैंसर से पीड़ित थीं। सादा जीवन उच्च लेखन वाली इस महिला साहित्यकार की कहानियों को किसी ने न पढ़ा हो, ऐसा होना असंभव ही प्रतीत होता है। ऐसे महान साहित्यकार को खोना खुद में एक बड़ी क्षति है अपितु उनके साहित्य से वे हमेशा पाठकों के हृदय में जीवित रहेंगी।

उपासना सिरसैया
क्षे.का., बड़ौदा

मेरी यात्रा:
एक आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अनुभव

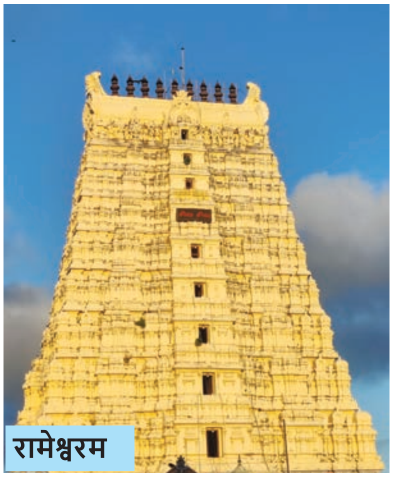
रामेश्वरम

त्रिची

तंजावूर

तमिलनाडु अपनी समृद्ध संस्कृति, ऐतिहासिक धरोहर और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है। एक ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं तो दूसरी ओर गहरे समंदर, विविधता से भरा यह भू-भाग हमेशा ही देशवासियों को लुभाता है और भ्रमण हेतु आकर्षित करता है। कई शहरों में प्राचीन मंदिर, स्मारक और ऐतिहासिक स्थल हैं, जो यहाँ की ऐतिहासिक धरोहर के साथ-साथ भारत के गौरवशाली इतिहास को दर्शाते हैं। अपनी यात्रा के दौरान मैंने यहाँ के कुछ प्रमुख ऐतिहासिक स्थल जैसे रामेश्वरम का श्रीरामनाथस्वामी मंदिर, तंजावूर का बृहदीश्वर मंदिर, मदुरै का मीनाक्षी अम्मन मंदिर और त्रिची का श्रीरंगनाथ स्वामी मंदिर के दर्शन किए। मेरे लिए यह यात्रा एक ऐसा अनुभव था जिसने मेरे जीवन को न केवल एक नए दृष्टिकोण से देखने का मौका दिया बल्कि मुझे अपनी संस्कृति को और भी अच्छी तरह व नजदीक से समझने का अवसर प्रदान किया।

हमने अपनी यात्रा की शुरुआत रामेश्वरम से की, जो कि तमिलनाडु के पंबन द्वीप पर स्थित है। मदुरै से लगभग 175 किलोमीटर की दूरी तय कर सड़क मार्ग से हम रामेश्वरम पहुंचे। मदुरै से रामेश्वरम तक का सफर बहुत ही यादगार रहा, समुद्र किनारे चलते हुए हम प्रसिद्ध पंबन ब्रिज पर पहुंचे। यह भारत के तमिलनाडु राज्य में स्थित एक ऐतिहासिक और इंजीनियरिंग की दृष्टि से महत्वपूर्ण पुल है। यह पुल मन्नार की खाड़ी पर स्थित है और भारत के मुख्य भूमि को पंबन द्वीप (जहां रामेश्वरम स्थित है) से जोड़ता है। इसका निर्माण वर्ष 1914 में पूरा हुआ था। यह भारत का पहला समुद्री पुल है। इसकी सबसे खास बात है कि इसका साझा खुलने वाला हिस्सा (डबल लीफ बैस्कूल), जिसे "शरज़र स्पैन" कहते हैं। यह समुद्री जहाजों के निकलने के लिए ऊपर उठ जाता है।यह पुल कई चक्रवातों, तूफानों और समुद्री ज्वार-भाटों को झेल चुका है, विशेषकर 1964 का रामेश्वरम चक्रवात, जिसमें यह भारी क्षति के बावजूद बच गया। यह इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भारत की एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती है, खासकर 20वीं सदी की शुरुआत में इस तरह का समुद्री पुल बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। ब्रिज के दोनों ओर अथाह समंदर, नीले आकाश को अपने में समेटे दिखाई देता है। वह नज़ारा वाकई अद्भुत था। यह पुल रामेश्वरम, को मुख्य भूमि से जोड़ता है।

रामेश्वरम शहर अपने प्रसिद्ध रामनाथस्वामी मंदिर के लिए जाना जाता है, जो भगवान शिव को समर्पित है। यह मंदिर न केवल 12 ज्योतिर्लिंगों में से, बल्कि हिन्दू धर्म के चार धामों (बद्रीनाथ, द्वारका, पुरी, रामेश्वरम) में से एक है। मान्यता है कि भगवान श्रीराम ने लंका पर चढ़ाई से पहले यहाँ शिवलिंग की स्थापना की थी। मंदिर में दो प्रमुख शिवलिंग हैं – एक स्वयं भगवान श्रीराम द्वारा स्थापित किया गया (रामलिंगम), और दूसरा लंका से हनुमान जी द्वारा लाया गया (विश्वलिंगम)। रामेश्वरम मंदिर द्रविड़ शैली की वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें उन्नत गोपुरम (मुख्य द्वार टावर), सुंदर नक्काशी और विशाल प्रांगण हैं। मंदिर की वास्तुकला बहुत ही अद्वितीय और आकर्षक है। इस मंदिर का गलियारा विश्व के सबसे लंबे मंदिर गलियारों में से एक है। इसकी लंबाई लगभग 1,200 मीटर है और इसमें 1,212 खंभे हैं। इस मंदिर परिसर में कुल 22 पवित्र कुंड (जल स्रोत) हैं, जिन्हें तीर्थ कुंड या स्नान कुंड कहा जाता है। श्रद्धालु इन कुंडों में स्नान करके अपने पापों से मुक्ति पाने की कामना करते हैं। इन कुंडों का जल बहुत शुद्ध और शीतल होता है, और इनका आयुर्वेदिक और आध्यात्मिक महत्व भी माना जाता है।

मान्यता है कि भगवान श्रीराम ने लंका यात्रा से पहले यहाँ शिवलिंग की स्थापना की थी और उन्होंने तथा उनके साथियों ने इन कुंडों में स्नान किया था। मंदिर के चारों ओर कई अन्य मंदिर और स्मारक हैं, जो कि विभिन्न देवी-देवताओं को समर्पित हैं। हमने मंदिर की अद्वितीय और आकर्षक शिल्पकला का आनंद लिया।

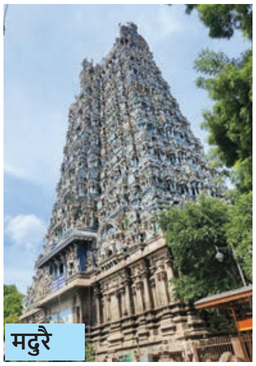
मदुरै

मंदिर के अंदर की सुंदरता और शांति ने हमें बहुत प्रभावित किया।

इसके बाद हम चल पड़े धनुषकोडी की ओर। धनुषकोडी तमिलनाडु राज्य के रामनाथपुरम ज़िले में स्थित है। यह भारत का एक अंतिम छोर है, जहाँ से श्रीलंका केवल लगभग 18-20 किलोमीटर की दूरी पर है। यह स्थान बंगाल की खाड़ी और हिन्द महासागर के संगम पर स्थित है। धनुषकोडी का पौराणिक महत्व रामायण से जुड़ा हुआ है। धनुषकोडी का नाम भगवान राम के धनुष से लिया गया है। यहाँ पर भगवान राम ने लंका पर हमला करने से पहले अपने धनुष को रखा था। रामायण के अनुसार, भगवान श्रीराम ने यहीं से लंका पर चढ़ाई के लिए रामसेतु का निर्माण करवाया था। दिसंबर 1964 में एक विनाशकारी चक्रवात ने पूरे नगर को तबाह कर दिया था। सैकड़ों लोग मारे गए और रेलवे लाइन भी पूरी तरह नष्ट हो गई। इसके बाद सरकार ने इस स्थान को रहने लायक नहीं माना और इसे एक "भूतिया शहर" घोषित कर दिया। वर्तमान में धनुषकोडी एक सुनसान और वीरान इलाका है, परन्तु यह अपने ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता है। यहाँ कुछ अस्थायी दुकानें और मछुआरे जरूर मिलते हैं, पर स्थायी निवास नहीं हैं। धनुषकोडी से समंदर का नज़ारा बहुत ही सुंदर और आकर्षक दिखाई देता है। चारों ओर नीला समंदर मानो कितनी गहराई समेटे हैं। पर्यटक यहाँ सूर्योदय, सूर्यास्त और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने आते हैं। वह अद्भुत नज़ारा आज भी आँखों के सामने प्रत्यक्ष सा लगता है।

हमारी यात्रा का अगला पड़ाव था -रंगनाथ स्वामी मंदिर, त्रिची। यह मंदिर तमिलनाडु के श्रीरंगम (त्रिची/तिरुचिरापल्ली) में कावेरी नदी के द्वीप पर स्थित है और वैष्णव संप्रदाय के 108 दिव्यदेशम में विशेष महत्व रखता है। यह मंदिर भगवान विष्णु के अवतार श्री रंगनाथ स्वामी को समर्पित है जो यहाँ शेषनाग पर शयन करते हुए दर्शन देते हैं। रंगनाथ स्वामी मंदिर का इतिहास 12वीं शताब्दी से जुड़ा हुआ है, इस मंदिर का निर्माण प्रारंभिक काल में चोल, पांड्य, होयसला और विजयनगर राजाओं द्वारा कराया गया था। यह मंदिर कला, संस्कृति और भक्ति का केंद्र रहा है। मंदिर की वास्तुकला अद्वितीय द्रविड़ शैली की है, जिसमें विशाल गोपुरम (प्रवेश द्वार), नक्काशीदार स्तंभ और विस्तृत प्रांगण शामिल हैं। श्री रंगनाथ स्वामी मंदिर का परिसर एशिया के सबसे बड़े मंदिर परिसरों में से एक है। इसमें सात परकोटे और 21 गोपुरम हैं। यहाँ 'वैष्णव मंदिर उत्सवों' की एक लंबी शृंखला होती है, जिनमें 'वैकुंठ एकादशी' प्रमुख है, जब लाखों श्रद्धालु मंदिर में भगवान रंगनाथ के दर्शन के लिए आते हैं। यहाँ की वार्षिक थेर उत्सव (रथ यात्रा) बहुत प्रसिद्ध है, जिसमें भगवान को भव्य रथ पर नगर भ्रमण कराया जाता है। यह मंदिर अपनी वास्तुकला, सुंदर शिल्पकारी और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। मंदिर के साथ जुड़ी कई पौराणिक कथाएं और ऐतिहासिक घटनाएं हैं। रंगनाथ स्वामी मंदिर त्रिची के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। यह मंदिर हिंदू धर्म के अनुयायियों के लिए एक पवित्र और महत्वपूर्ण स्थल है। मंदिर में मैंने कई प्रकार की पूजा अर्चना देखी जोकि बहुत ही आकर्षक थी। मंदिर में रामानुजाचार्य जी का पार्थिव शरीर आज भी है जिसकी नित्य पूजा की जाती है। मंदिर के पुजारी ने हमें बताया कि मंदिर बहुत ही पुराना है और यहाँ पर कई चमत्कारी घटनाएँ हुई हैं। उन्होंने यह भी बताया कि भगवान श्री रंगनाथ स्वामी की मूर्ति बहुत ही शक्तिशाली है और यहाँ पर आने वाले लोगों की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

अब हम चल पड़े तंजावूर की ओर। तंजावूर बृहदीश्वर मंदिर वास्तुकला का एक अद्वितीय नमूना है। यह मंदिर तमिलनाडु के तंजावूर शहर में स्थित एक प्राचीन और प्रसिद्ध हिंदू मंदिर है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और इसे तमिलनाडु के सबसे भव्य शिव मंदिरों में गिना जाता है। इस मंदिर का निर्माण चोल वंश के महान सम्राट राजराज चोल प्रथम ने 11वीं शताब्दी (लगभग 1010 ई.) में करवाया था। मंदिर का निर्माण द्रविड़ वास्तुकला शैली में हुआ है, जिसमें ऊँचे गोपुरम, विस्तृत प्रांगण और सुंदर नक्काशियाँ होती हैं। यह मंदिर लगभग 30.5 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है। मंदिर का मुख्य शिखर लगभग 66 मीटर (216 फीट) ऊँचा है, जो केवल पत्थरों से बिना सीमेंट के बनाया गया है।यह पूरा मंदिर कठोर ग्रेनाइट पत्थर से बना है, जबकि इस क्षेत्र में यह पत्थर स्वाभाविक रूप से नहीं मिलता। इसे दूर-दराज़ से लाया गया था। मंदिर का मुख्य गर्भगृह भगवान शिव के शिवलिंग को समर्पित है, जो कि 13 फीट ऊँचा एक विशाल और अद्भुत शिवलिंग है, और उसके सामने एक ही पत्थर से बनी 6 मीटर लंबी और 3 मीटर ऊँची विशाल नंदी की मूर्ति है, जो भारत की सबसे बड़ी नंदी मूर्तियों में से एक है। मंदिर की अंदरूनी दीवारों पर सुंदर और प्राचीन चित्रकारी की गई है, जो चोल काल की संस्कृति, परंपरा और भक्ति को दर्शाती है। मंदिर के शीर्ष पर स्थित कलश एक ही पत्थर से बना है, जिसका वज़न लगभग 80 टन है। इसे उस ऊँचाई तक पहुँचाना उस समय की बड़ी तकनीकी उपलब्धि थी। यह माना जाता है कि मंदिर के मुख्य गोपुरम की परछाईं नहीं पड़ती है। यह वास्तुकला की एक अद्भुत विशेषता है। कहा जाता है कि यह विशाल मंदिर बिना पारंपरिक नींव के बनाया गया है, फिर भी यह हज़ार वर्षों से मजबूती से खड़ा है। मंदिर के गलियारों में उस समय की संगीत, नृत्य और चित्रकला की झलक मिलती है। इसे "शिव के नटराज रूप" की भक्ति के रूप में देखा जाता है। मंदिर की दीवारों पर राजराज चोल और उनके द्वारा दी गई दान-दक्षिणा, ज़मीनें और अन्य जानकारी तमिल लिपि में खुदी हुई हैं, जो इतिहास की अमूल्य धरोहर है। तंजावूर बृहदीश्वर मंदिर की वास्तुकला बहुत ही अद्वितीय और आकर्षक है। मंदिर के चारों ओर कई अन्य मंदिर और स्मारक हैं, जो कि विभिन्न देवी-देवताओं को समर्पित हैं। तंजावूर बृहदीश्वर मंदिर को 1987 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त हुई थी। इसे "ग्रेट लिविंग चोल टेम्पल्स" में शामिल किया गया है। तंजावूर बृहदीश्वर मंदिर तमिलनाडु के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक है। यहाँ पर हर साल लाखों पर्यटक मंदिर की सुंदरता और महत्व को देखने के लिए आते हैं। हमने मंदिर की ढ़ेर सारी फ़ोटो खिचीं और पारंपरिक भोजन का आनंद लिया। मंदिर के बाहर बहुत सारी दुकानें लगी हुई थी जहां पर लकड़ी के सुंदर-सुंदर खिलौने और सज़ावट की वस्तुएँ उचित दामों में मिल रही थी।

हमारी यात्रा का अंतिम पड़ाव मदुरै का मीनाक्षी अम्मन मंदिर था जो कि भारत के प्रमुख ऐतिहासिक और प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है और देवी मीनाक्षी (भगवान शिव की

पत्नी, पार्वती का रूप) और भगवान सुंदरेश्वर (भगवान शिव) को समर्पित है। मदुरै मीनाक्षी मंदिर का इतिहास बहुत पुराना है। मंदिर का निर्माण 16वीं शताब्दी में मदुरै के राजा तिरुमलाई नायक द्वारा किया गया था। मंदिर द्रविड़ शैली में बना हुआ है। इसके 14 ऊँचे गोपुरम (दरवाज़े/टॉवर) हैं, जिनमें से सबसे ऊँचा लगभग 170 फीट का है। गोपुरम पर की गई नक्काशी और रंग-बिरंगी मूर्तियाँ अद्वितीय हैं। इसमें सुंदर नक्काशी किए हुए 1000 खंभे हैं, जो इसकी कला और स्थापत्य की सुंदरता को दर्शाते हैं। 'पोट्टमाराई कुलम' नामक एक पवित्र तालाब भी मंदिर परिसर में स्थित है। मंदिर के गर्भगृह में माता मीनाक्षी और भगवान सुंदरेश्वर की मूर्तियाँ स्थापित हैं, जो कि बहुत ही सुंदर और आकर्षक हैं। ऐसा माना जाता है कि इस स्थान पर भगवान सुंदरेश्वर (शिव) और देवी मीनाक्षी (पार्वती) का विवाह हुआ था। मैंने वहाँ पर पूजा-अर्चना की और भगवान के दर्शन किए। मंदिर के आसपास का वातावरण बहुत ही शांत और पवित्र है। वहाँ पर कई पेड़-पौधे हैं, जोकि मंदिर की सुंदरता को और भी बढ़ाते हैं। मंदिर का महत्व न केवल धार्मिक है, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थल भी है। मदुरै को "तमिलनाडु का एथेंस" कहा जाता है। यह 2500 साल से भी अधिक पुराना शहर है। यह तमिल संस्कृति, साहित्य और वास्तुकला का प्रमुख केंद्र रहा है। ऐतिहासिक रूप से यह शहर मसालों, वस्त्रों और शिल्पकला के लिए व्यापार का एक बड़ा केंद्र रहा है। मदुरै की मल्लिगई (जैस्मिन/चमेली) की खुशबू और सुंदरता के कारण इसकी मांग पूरे भारत में है। मदुरै शहर पारंपरिक साड़ियों के लिए भी प्रसिद्ध है। यहाँ मिलने वाली साड़ियों में गहरे और चटक रंग जैसे हरा, गुलाबी, पीला, नीला आदि प्रयोग किए जाते है। इन साड़ियों को पारंपरिक करघों पर बुना जाता है। इन साड़ियों के डिज़ाइनों में अक्सर मीनाक्षी मंदिर की वास्तुकला, देवी मीनाक्षी के रूप और पारंपरिक दक्षिण भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। बॉर्डर और पल्लू पर मंदिर की नक्काशी जैसे डिज़ाइन बनाए जाते हैं। इसमें कारीगरों की मेहनत और कला झलकती है। मंदिर के चारों ओर के बाजारों और दुकानों ने हमें बहुत आकर्षित किया। वहाँ से हमने पारंपरिक वस्त्र और साड़ियों की जमकर खरीददारी की।

इस यात्रा के दौरान, हमने तमिलनाडु की सुंदरता, संस्कृति और इतिहास को नजदीक से देखा। लोगों के जीवन दर्शन से लेकर संस्कृति और परंपरा के प्रति उनका रूझान और साथ ही आधुनिक जीवन शैली के साथ तारतम्यता, सबकुछ एक साथ। यह यात्रा बहुत ही यादगार और आकर्षक थी, और हम इसे कभी नहीं भूल पाएंगे। हम नए लोगों से मिले, नए खाने का स्वाद लिया, और नए अनुभव प्राप्त किए। यह यात्रा हमारे जीवन की एक महत्वपूर्ण याद बन गई है। मेरी तमिलनाडु यात्रा एक अविस्मरणीय अनुभव था, जिसने मुझे नए स्थानों की खोज करने का अवसर दिया, विविधताओं के साथ जुड़ने का मौका दिया और मुझे अपने आप को और भी अच्छी तरह से समझने का दायरा दिया।

दीपिका मालवीय
क्षे. का., ग्रेटर पुणे

भाषा: मानव की पहचान

भाषा मानव हित रचना करी, भाषा विविध प्रकार।
बोली से भाषा बनी, ध्वनि संकेत अपार।।

शब्दों में जीवन का सार है, भावनाओं का मेल,
भाषा से ही जुड़ते हैं, दिल और रिश्तों के खेल।।

मानव की पहचान है, उसका भाषा ज्ञान,
बोल-चाल ही बन गया, भाषा का विज्ञान।।

समय-समय होता रहा, भाषा का संस्कार,
शब्द साधना से मिले, भाषा पर अधिकार।।

भाषा ही हर देश की, होती है पहचान,
इसी नाम से जानते, हिन्दी हिन्दस्तान।।

हर भाषा में शब्द का, अलग-अलग व्यवहार,
कभी अर्थ संकुचित, तो कभी विस्तृत संसार।।

अपनी भाषा अपनी लगे, करके देख विचार,
जाति, धर्म और देश का, होवे बेड़ा पार।।

कबीरा, तुलसी, सूर ने, दी भाषा को रोशनी,
इनकी वाणी में बसी, सच्चाई की गोशनी।।

हिन्दी को इनसे मिला, गौरव और सम्मान,
संस्कृति की सजीव धारा, इनसे हुआ विहान।।

भाषा से होती सदा, लेखक की पहचान,
भाषा को पहचान दे, लेखक वही महान।।

लेखन में गर हो प्रेम, संवेदना, एहसास,
भाषा बने अमर तभी, पाए जन-विश्वास।।

हिन्दी का उत्थान हो, सबका यही प्रयास,
भाषा से बढ़ता रहे, अपना गौरव, स्वाभिमान।।

शुभम गुप्ता सम्भल
क्षे. का., बेंगलूरु उत्तर

लोहागढ़ किला: अजेय किले की गौरवगाथा

लोहागढ़ किला, अपने नाम के अनुरूप दृढ़ता से खड़ा रहा और कई ब्रिटिश आक्रमणों को विफल कर दिया। इसने चार बार ब्रिटिश आक्रमणों का सामना किया और लंबे समय तक चली घेराबंदी के बाद भी ब्रिटिश सेना को पीछे हटना पड़ा। यह राज्य के अन्य किलों से बहुत अलग है; इसमें कोई भव्यता नहीं है, लेकिन यह शक्ति और भव्यता का अद्भुत अहसास कराता है। किले के चारों ओर एक खाई बनी हुई है, जिसे पहले पानी से भरा जाता था ताकि दुश्मनों के हमलों को रोका जा सके। रेत से बने परकोटे को मजबूत किलेबंदी से सुसज्जित किया गया था, जिससे दुश्मन की तोपें बेअसर हो गईं।

किले में कुछ रोचक स्मारक हैं, जैसे किशोरी महल, महल खास और कोठी खास। मोती महल और जवाहर बुर्ज तथा फतेह बुर्ज जैसी मीनारें मुगलों और ब्रिटिश सेना पर विजय की स्मृति में बनाई गई थीं। इसके प्रवेश द्वार पर विशाल हाथियों की सुंदर चित्रकारी की गई है।

सूरज मल, जाट शासक बदन सिंह के पुत्र थे। सूरज मल को खेमा करण सूगारिया के भरतपुर राज्य के एक स्थान से विशेष लगाव हो गया था। इस स्थान को प्राप्त करने के लिए, महाराज सूरजमल ने भरतपुर पर आक्रमण किया और इसे अपने अधिकार में ले लिया। इस जगह पर ही भारत के अजेय, **लोहागढ़ किले** का निर्माण किया गया। इस किले की नींव 1733 में रखी गई थी। इस किले को बनाने में आठ वर्ष लगे थे। उस समय युद्धों में बंदूकों और तोपों का उपयोग होने लगा था और किले के वास्तुकारों के सामने चुनौती थी कि इन हमलों से किले को कैसे बचाया जाए। अतः सबसे पहले किले के चारों ओर एक बड़ी खाई खोदी गई और उसमें पानी भर दिया गया। उस दौर में किलों के चारों ओर खाई बनाकर उसमें पानी भरने की परंपरा थी, लेकिन इस किले की खाई को अधिक गहरा बनाया गया। यह खाई 8 से 10 फीट गहरी और 41 मीटर से 72 मीटर चौड़ी थी। खाई खोदने के बाद, इसे पानी से भर दिया गया था जो **सुजान गंगा नहर** के माध्यम से **मोती झील** से लाया गया था। फिर मगरमच्छ लाए गए जो इस पानी में रहते थे। किले की दीवारें 7 मीटर मोटी थीं और बाहरी परत मिट्टी और चूने की थी। पानी से भरी खाई

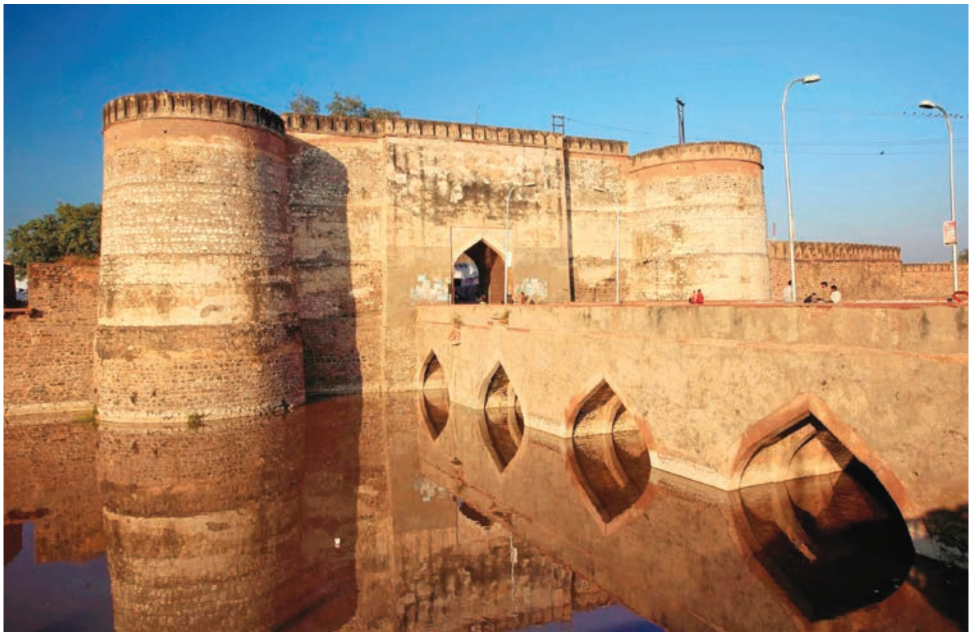

और मगरमच्छों ने शत्रु सेना के हमलों को रोका, जबकि मिट्टी की बाहरी परत तोप और बंदूकों के गोलों को अवशोषित कर लेती थी, जिससे किले की दीवारें क्षतिग्रस्त नहीं होती थीं। इसने 7 मीटर की दीवार को दरार और क्षति से बचाने में मदद की। यह किला 2872 मीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है और इसका आकार आयताकार है। इसमें 34 बुर्ज (मीनारें) हैं, जिनसे किसी भी शत्रु की गतिविधियों पर नजर रखी जा सकती थी और उन पर आक्रमण किया जा सकता था।

इतिहास से जुड़े महत्वपूर्ण प्रसंग

किले से कई कहानियाँ जुड़ी हुई हैं। किले में लोहिया द्वार और अष्टधातु द्वार हैं। इन दोनों दरवाजों को अलाउद्दीन खिलजी 1303 में चित्तौड़गढ़ जीतने के बाद चित्तौड़गढ़ किले से दिल्ली ले गया था।

1763-64 में महाराज सूरजमल और नजीबुद्दौला (रोहिल्ला नेता) के बीच युद्ध हुआ जिसमें महाराज सूरजमल शहीद हो गए। उनके बाद उनके पुत्र महाराज जवाहर सिंह शासक बने और उन्होंने नजीबुद्दौला से अपने पिता की मौत का बदला लेने की कसम खाई। उन्होंने दिल्ली पर आक्रमण किया और लगभग एक महीने की लड़ाई के बाद, उन्होंने लगभग युद्ध जीत लिया। उस समय नजीबुद्दौला ने महाराज जवाहर सिंह से शांति संधि पर सहमत होने का अनुरोध किया। महाराज जवाहर सिंह इसके लिए सहमत हो गए, लेकिन युद्ध पर हुए खर्च के लिए मौद्रिक मुआवजे की मांग की। उन्हें उस समय 60 लाख रुपये का भुगतान किया गया और उन्होंने दिल्ली से दो दरवाजे यानी लोहिया द्वार और अष्टधातु द्वार भी ले लिए और इसे लोहागढ़ किले में स्थापित कर दिया।

युद्ध में विजय के उपलक्ष्य में, महाराज जवाहर सिंह ने **जवाहर बुर्ज** का निर्माण

करवाया। इसके बाद, सभी जाट शासकों के राज्याभिषेक इसी बुर्ज पर किए जाने लगे।

1798 में, **ब्रिटिश किंग जॉर्ज III** ने अपने विश्वसनीय कमांडर **जनरल जेराल्ड लेक** को आयरलैंड में विद्रोह को कुचलने के लिए भेजा। जहां उन्होंने निर्दयता से कार्यवाही कर विद्रोह समाप्त कर दिया था। वह आयरलैंड में कई अत्याचारों और हत्याओं के लिए जिम्मेदार था। चूंकि, ब्रिटिश सरकार आयरलैंड में उनके प्रयासों से प्रभावित थी, इसलिए उन्हें भारत भेजा गया। जेराल्ड लेक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया आर्मी के कमांडर-इन-चीफ बने। 1802 में, उन्हें जनरल के रूप में पदोन्नत किया गया। इस अवधि के दौरान, वे कई लड़ाइयों का हिस्सा थे जिनमें **द्वितीय आंग्ल युद्ध, अलीगढ़ का युद्ध, प्रतापगढ़ का युद्ध** और **लास वारी का युद्ध** प्रमुख है। लास वारी के युद्ध में, ब्रिटिश सेना ने सिंधिया राजवंश के दौलतराव शिंदे की सेना को पूरी तरह से मिटा दिया। 02 जनवरी, 1805 को ब्रिटिश सेना ने भरतपुर पर हमला किया क्योंकि **महाराज रणजीत सिंह** इंदौर के **महाराज यशवंत राव होल्कर** का समर्थन कर रहे थे। महाराज रणजीत सिंह, महाराज जवाहर सिंह के पुत्र थे और वे भरतपुर के शासक थे। 7 जनवरी को अंग्रेजों ने पहला असफल हमला किया। इसके बाद 9 जनवरी को एक और हमला हुआ। ब्रिटिश सेना का नेतृत्व लेफ्टिनेंट मैकलैंड कर रहे थे। इस बार ब्रिटिश सेना किले में घुसने में सफल रही, लेकिन उन्हें बहुत नुकसान उठाना पड़ा और उन्हें पीछे हटना पड़ा। उन्होंने 400 सैनिकों को खो दिया और लेफ्टिनेंट मैकलैंड को भी जानलेवा चोटें आईं। तीसरा हमला 16 जनवरी को हुआ। इस बार गहरी खाइयों में पानी छोड़ कर हमले को बेअसर कर दिया गया। इस बार अंग्रेजों ने लेफ्टिनेंट कॉर्नेल सहित 500 और सैनिकों को खो दिया। 20 फरवरी को एक और असफल हमला हुआ। अगले दिन अंग्रेजों ने अंतिम हमला किया, लेकिन नतीजा वही रहा यानी अंग्रेजों को नुकसान। 22 फरवरी, 1805 को जब आकलन किया गया तो पाया गया कि इन कई प्रयासों में अंग्रेजों ने 3292 सैनिकों को खो दिया था। लगातार हार से हताश होकर जनरल जेराल्ड लेक ने भरतपुर पर हमले रोकने का निर्णय लिया। इस ऐतिहासिक विजय के उपलक्ष्य में, महाराज रणजीत सिंह ने फतेह बुर्ज का निर्माण करवाया।

लोहागढ़ किला आज भी अपनी अभेद्य सुरक्षा प्रणाली और भारतीय शौर्य का प्रमाण है। इसकी अद्‌भुत वास्तुकला और गौरवशाली इतिहास इसे राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक बनाता है। यदि आप राजस्थान की यात्रा कर रहे हैं, तो इस ऐतिहासिक किले को देखने अवश्य जाएं।

के शक्ति प्रकाश
कें. का., मुंबई

जुनून

रब ने बनाया हमें,
खेल रहे हैं यूनियन बैंक से पारी,
दोस्ती का लंबा समय पूरा हुआ,
और बाकी गिनती जारी।
ज़िंदगी की इस जंग में जुनून ही है
जो आगे ले जाता है,
इसे लगन कहो या पागलपन,
जोश कहो या उत्साह,
यही है जो आपको सबसे आगे
ले जाता ।

यह एक आग है अंदर ही अंदर
जो जलती रहती,
आदत बन चुकी है मुमताज़ पाने की।
यह एक प्रेम भी है
दिल को समझाती जो रहती,
एक लगाव भी है जो इतनी बढ़ती कि
दिल की धड़कन तेज हो जाती।

आंखों की गहराई में पहुंचकर प्रश्न करती,
एक तड़प जो बढ़ती रहती,
इससे भी शानदार क्या हो सकता है?
जुनून एक आग है जो जलती रहती,
हर सांस के साथ, हर ख्वाहिश में।

इससे भी अच्छी मंजिल
क्या मिल सकती है?
जुनून एक प्रेम है
जो दिल की धड़कन के साथ
धक-धक करती रहती।

टंकेश्वर खाँ
क्षे. का., ग्रेटर-कोलकाता

अंडमान निकोबार द्वीप समूह
प्राकृतिक सुंदरता का अद्भुत संगम

भारत का बेहद खूबसूरत द्वीप समूह अंडमान निकोबार, टूरिज्म के साथ- साथ प्रकृति प्रेमियों के लिए एक खास जगह है। जीवन की दैनिक व्यस्तताओं के बीच आप ब्रेक लेकर कहीं घूमने का प्लान कर रहे हैं तो इस बार अंडमान निकोबार द्वीप समूह की यात्रा करें, मीलों समुद्र का दृश्य एवं नैसर्गिक प्राकृतिक संदुरता यहाँ भ्रमण करने वाले सैलानियों का सदर मोह लेती है। यदि आप एडवेंचर टूरिज्म के शौकिन हैं या प्रकृति की गोद में मानसिक शांति ढूँढना चाहते हैं तो अंडमान निकोबार जरूर जाइए। यहाँ के सुंदर, साफ सामुद्र तट पर घूमना व समुद्र स्नान आपका दिल जीत लेगा साथ ही यहाँ आप स्कूबा डाइविंग, स्विमिंग, स्कीरंग, पैरास्लाइडिंग बोट राइड, अंडर वाटर वॉकिंग आदि रोमांचक गतिविधियों का भी आनंद उठा सकते हैं।

अंडमान निकोबार भारत का एक केन्द्र शासित प्रदेश है तथा यह बंगाल की खाड़ी के दक्षिण में हिंद महासागर में स्थित है। यह लगभग 572 छोटे बडे द्वीपों को मिलाकर बना है, जिनमें से कुछ ही द्वीपों पर लोग रहते हैं। पोर्टब्लेयर यहाँ की राजधानी है। वर्तमान समय में यह द्वीप समूह भारत के सबसे आकर्षक पर्यटक स्थानों में से एक है, तथा सितंबर से मार्च तक का समय यहां घूमने के लिए उपयुक्त समय है। वर्तमान समय देश के सभी बड़े महानगरों से पोर्टब्लेयर के लिए सीधी फ्लाइट सेवा उपलब्ध है। विशेषकर कोलकाता व चेन्नई से सीधी उड़ान सेवा के द्वारा 2 1/2 घंटे में आप पोर्टब्लेयर पहुँच सकते हैं। कोलकाता तथा चेन्नई से पानी के जहाज से भी पोर्टब्लेयर की यात्रा उपलब्ध है पर यह नियमित नहीं है तथा इस यात्रा में ढाई दिन लगते हैं। अंडमान निकोबार द्वीप समूह की यात्रा 5 से 7 दिनों का बनाने से यहाँ अच्छी तरह से भ्रमण किया जा सकता है। भ्रमण करने योग्य स्थान:

पोर्टब्लेयर : पोर्टब्लेयर को अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी के रूप में जाना जाता है। यह स्थान भारतीय नौसेना का बेस होने के साथ-साथ दक्षिण अंडमान का मुख्यालय भी है। पोर्ट ब्लेयर को भारतीय सेना के आईएनएस जारवा और भारत के सशस्त्र बलों की पहली त्रिकोणीय कमान के रूप में पहचान मिली है। पोर्टब्लेयर अंडमान और निकोबार समूह का प्रवेश द्वार है। पोर्टब्लेयर में ऐतिहासिक वीर सावरकर सेलुलर जेल है। दिन के समय पर्यटकों के लिए यह जेल खुला रहता है तथा गाईड सेवा उपलब्ध है। स्वाधीनता आंदोलन के समय देश के वीर सपूतों के बलिदान तथा अंग्रेजों द्वारा काला-पानी की सजा की जीवंत गवाह सेलुलर जेल, हर सैलानी को जरूर घूमना चाहिए। रात्रि के साथ समय यहाँ लाइट एंड साइड कार्यक्रम के द्वारा वीर सपूतों की गाथा को हम बखूबी जान व समझ सकते हैं, तथा अपने बच्चों को भी जानकारी दे सकते हैं। पोर्ट ब्लेयर में ही 30 सितंबर 1943 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने पहली बार भारतीय धरती पर भारतीय ध्वज फहराया था । प्रधान मंत्री ने

आजाद हिंद सरकार की 75 वीं वर्षगांठ पर 30 सितंबर 2018 को इसके उद्घाटन दिवस पर भारतीय ध्वज फहराया । 150 फीट ऊंचा यह ध्वज स्तंभ गौरवान्ति और ऊंचा खड़ा है तथा भारतीय ध्वज यहाँ शान से लहराता है। ध्वज बिन्द के चारों ओर का वातावरण अत्यंत सुंदर है, एक तरफ खुला समुद्री दृश्य, दूसरी तरफ पेड़ों से सजी साफ सुथरी सड़कें व मनमोहक फूलों से सजा पार्क, सैलानियों को खूब आकर्षित करता है। ध्वज स्तंभ के पास पत्थर की नक्कासी पर स्थापित वर्ष 1943 का चिह्न है जो सभी पर्यटकों को फोटो खींचने के लिए विशेष आर्कषण है। पोट प्लेयर में समुद्रिका नौसेना संग्रहालय, माउंट हैरियट नेशनल पार्क तथा महात्मा गांधी समुद्री राष्ट्रीय उद्यान घूमने लायक स्थान है।

रॉस द्वीप : पोर्ट ब्लेयर से लगभग 2 किलोमीटर पर स्थित रॉस द्वीप अंग्रेजों का प्रशासनिक मुख्यालय था। भारत सरकार ने 2018 में इस द्वीप का नया नामकरण नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप के रूप में किया है। इस द्वीप की सुंदरता और प्राकृतिक दृश्य किसी को भी मोहित कर सकते हैं। बैटरी वाली कार्ट पर यात्रा करते हुए लाइट हाऊस तक पहुंचना एक अविस्मरणिय यात्रा के समान है। रास्ते में प्रकृतिक नजारों के बीच कई हिरण करीब से देखने को मिलेंगे । लाइट हाऊस पर फोटोग्राफी पूरी यात्रा की बेहतरीन फोटो होगी।

नील द्वीप : पोर्ट ब्लेयर का मशहूर नील द्वीप दक्षिण अंडमान प्रशासनिक जिले का प्रमुख हिस्सा है जो बंगाल की खाड़ी में रिटचीस के द्वीप समूह के निकट स्थित है। हैवलॉक द्वीप पर आने वाले पर्यटक प्रायः एक दिन नील द्वीप पर बिताना पसंद करते हैं। नील द्वीप पर तीन रेतीले समुद्र तट भरतपुर, सीतापुर, और लक्ष्मणपुर अपने नैसर्गिक सौंदर्य, नीला समुद्र, सफेद रेतीले तट बहुत आकर्षक है।

जॉली बुओय द्वीप : जॉली बुओय द्वीप महात्मा गांधी राष्ट्रीय उद्यान का एक अहम हिस्सा है। समुद्री तट पर स्थित सफेद मखमली रेत और स्वच्छ समुद्री पानी मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है, तथा सैलानियों के लिए पसंदीदा जगहों में से एक है।

सैंडबार बीच: पोर्टब्लेयर की यात्रा में सैड़बार बीच भी घूमने के लिए बेहतरीन बीच है। सैडंबार बीच दो द्वीपों रॉस और स्मिथ से मिलकर बना है तथा साफ सफेद रेत से सम्पन्न यह एक लम्बा द्वीप है। द्वीप से लगे हरे भरे प्राकृतिक वन इस द्वीप की सुंदरता को खूब बढ़ा देते हैं।

पोर्टब्लेयर स्थानीय एव प्रसिद्ध भोजन : पोर्टब्लेयर अपने खूबसूरत द्वीपों और समुद्री तटों के साथ-साथ समुद्री भोजन के लिए भी खूब जाना जाता है। पोर्टब्लेयर के स्थानीय व्यंजनों में शाकाहारी तथा माँसाहारी दोनों प्रकार के व्यंजन आसानी से उपलब्ध हैं। यहाँ की यात्रा में नारियल पानी तथा इसके फल पर्यटकों को खूब पसंद आते हैं तथा नारियल पानी की ताजगी व उनका मीठापन हर किसी को लुभाते हैं तथा सर्वत्र आसानी से उपलब्ध हैं।

अखिलेश कुमार सिन्हा
अं. का., बेंगलूरु

दिनांक 04.01.2025 को मैसूरु में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा प्रदर्शनी

दक्षिण एवं दक्षिण पश्चिम क्षेत्रों की संयुक्त राजभाषा सम्मेलन में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की राजभाषा प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए माननीय गवर्नर, बिहार, श्री आरिफ मोहम्मद खान, माननीय गृह राज्य मंत्री, कर्नाटक, श्री नित्यानंद राय तथा माननीय सांसद एवं मैसूरु के महाराज श्री यदुवीर कृष्णदत्त चामराज वायडियार. साथ हैं श्री सुनिल वी पाटिल, क्षेत्र प्रमुख, मैसूरु.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की राजभाषा प्रदर्शनी के निरीक्षण हेतु पधारी सुश्री अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का स्वागत करती हुई सुश्री बिनु टी. एस., वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा), क्षे.का. एर्णाकुलम.

केंद्रीय कार्यालय के तत्वावधान में
विभिन्न केंद्रों में आयोजित तीन दिवसीय
कम्प्यूटर आधारित हिंदी कार्यशाला

दिनांक 17.03.2025 से 19.03.2025 स्थान- मुंबई

दिनांक 27.02.2025 से 01.03.2025 स्थान – यूबीकेसी

दिनांक 27.02.2025 से 01.03.2025 स्थान – भुवनेश्वर

दिनांक 27.02.2025 से 01.03.2025 स्थान – गुरुग्राम

दिनांक 27.02.2025 से 01.03.2025 स्थान – हैदराबाद

दिनांक 27.02.2025 से 01.03.2025 स्थान – भोपाल

दिनांक 27.02.2025 से 01.03.2025 स्थान – मंगलूरु

दिनांक 27.02.2025 से 01.03.2025 स्थान – लखनऊ

दिनांक 27.02.2025 से 01.03.2025 स्थान – विशाखपट्टणम

द होम एंड द वर्ल्ड

- लेखक: रवींद्रनाथ टैगोर

"दि होम एंड दि वर्ल्ड" गुरुदेव टैगोर द्वारा लिखा गया एक उत्कृष्ट उपन्यास है, जो प्रेम, राजनीति, राष्ट्रवाद और नैतिकता के जटिल प्रश्नों को संबोधित करता है। यह उपन्यास केवल एक प्रेम कहानी नहीं है, बल्कि यह समाज और व्यक्तिगत जीवन में टकराने वाली विचारधाराओं की गहरी पड़ताल भी करता है। जब मैंने इस उपन्यास को पढ़ना शुरू किया, तो यह एक साधारण कथा लगी, लेकिन जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ी, यह स्पष्ट हो गया कि यह पुस्तक एक बड़े ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भ में लिखी गई है।

इस उपन्यास को पढ़ना एक भावनात्मक और मानसिक यात्रा के समान है, जो हमें एक गृहस्थ जीवन के भीतर के संबंधों और बाहरी दुनिया की राजनीति के टकराव के बीच ले जाती है। यह कहानी न केवल एक महिला की आत्म-खोज है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि कैसे विचारधाराएँ लोगों के जीवन को प्रभावित करती हैं और उनके निर्णयों को आकार देती हैं।

कहानी की पृष्ठभूमि और विषय-वस्तु

यह उपन्यास 20वीं सदी के प्रारंभिक काल में बंगाल की पृष्ठभूमि में लिखा गया है, जब स्वदेशी आंदोलन जोरों पर था और भारतीय समाज दो विचारधाराओं—आधुनिक प्रगतिशीलता और पारंपरिक मूल्यों—के बीच विभाजित था। यह समय था जब भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन धीरे-धीरे अपने चरम पर पहुँच रहा था और ब्रिटिश शासन के खिलाफ आवाजें उठ रही थीं।

इस उपन्यास में तीन मुख्य पात्र हैं— बिमला, निखिल और संदीप । यह उपन्यास इन तीनों पात्रों के दृष्टिकोण से लिखा गया है, जिससे कहानी की गहराई बढ़ जाती है और पाठक को उनके मानसिक द्वंद्व को समझने का अवसर मिलता है।

1. **निखिल –** एक आदर्शवादी व्यक्ति, जो अपने शांतिप्रिय और सहिष्णु स्वभाव के कारण समाज और राजनीति में एक अलग दृष्टिकोण रखता है। वह मानता है कि हिंसा और कट्टरता से कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता और देश की सच्ची सेवा स्नेह और त्याग से होनी चाहिए।
2. **संदीप –** एक उग्र राष्ट्रवादी, जो हर हाल में अपने उद्देश्य की पूर्ति करना चाहता है, चाहे इसके लिए उसे नैतिकता का त्याग ही क्यों न करना पड़े।
3. **बिमला –** एक गृहिणी, जो अपने पति के आदर्शवाद और संदीप के जोशीले राष्ट्रवाद के बीच उलझकर अपनी पहचान खोजने का प्रयास कर रही है।

यह उपन्यास केवल एक व्यक्तिगत त्रिकोण नहीं है, बल्कि यह तीन अलग-अलग विचारधाराओं का टकराव है—निखिल की सहिष्णुता, संदीप की कट्टरता, और बिमला का मानसिक संघर्ष।

बिमला का मानसिक और भावनात्मक संघर्ष

एक पाठक के रूप में, सबसे अधिक आकर्षक और जटिल चरित्र बिमला का है। वह इस उपन्यास की नायिका है, लेकिन यह उसकी कमजोरियाँ और गलतियाँ ही हैं जो उसे वास्तविक बनाती हैं। उसकी यात्रा सिर्फ एक व्यक्तिगत परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह पूरे भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति और उनकी मानसिकता में बदलाव का प्रतिबिंब है।

शुरुआत में, बिमला एक पारंपरिक गृहिणी के रूप में दिखती है, जो अपने पति निखिल के स्नेह और देखभाल में एक सुरक्षित जीवन जी रही होती है। निखिल उसे केवल एक पत्नी के रूप में नहीं देखता, बल्कि वह चाहता है कि वह स्वतंत्र रूप से सोच सके

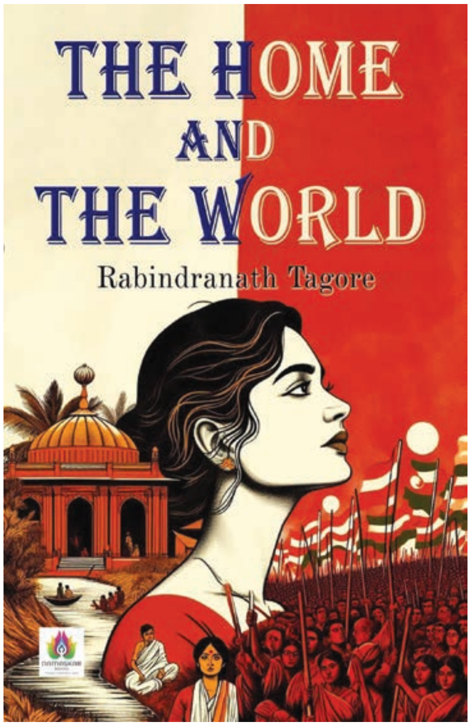

और अपनी पसंद से जीवन जिए। यह उस समय के लिए एक बहुत ही प्रगतिशील विचार था, क्योंकि तब महिलाओं को केवल पुरुषों की छाया में ही देखा जाता था।

लेकिन जब संदीप उसके जीवन में प्रवेश करता है, तो वह पहली बार महसूस करती है कि दुनिया केवल घर तक सीमित नहीं है। संदीप का क्रांतिकारी दृष्टिकोण और जोशीला व्यक्तित्व उसे आकर्षित करने लगता है। वह सोचने लगती है कि शायद निखिल का आदर्शवाद कमजोरी है और संदीप का कट्टरपन सच्ची शक्ति।

यह बदलाव धीरे-धीरे होता है और बहुत स्वाभाविक लगता है। एक पाठक के रूप में, मैं बिमला की भावनाओं को समझ सकता था। कई बार जब हम किसी नई विचारधारा से परिचित होते हैं, तो वह हमें अधिक सही लगती है, भले ही वह वास्तव में गलत ही क्यों न हो। बिमला भी इसी स्थिति से गुजरती है।

लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, उसे एहसास होता है कि संदीप का राष्ट्रवाद केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति का एक माध्यम है। संदीप केवल अपने उद्देश्य के लिए बिमला को इस्तेमाल कर रहा होता है, और

जब उसका स्वार्थ पूरा हो जाता है, तो वह उसे छोड़ देता है।

यह क्षण अत्यधिक मार्मिक और शक्तिशाली है। यह दर्शाता है कि भावनाओं में बहकर लिए गए निर्णय हमेशा सही नहीं होते और जब हम बिना सोचे-समझे किसी विचारधारा को अपनाते हैं, तो अंततः हमें पछताना पड़ता है।

संदीप और निखिल – दो विपरीत विचारधाराएँ

संदीप और निखिल इस उपन्यास के दो सबसे महत्वपूर्ण पुरुष पात्र हैं। ये दोनों एक-दूसरे के पूर्ण विरोधी हैं और दो अलग-अलग राष्ट्रवादी विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

निखिल का विचार यह है कि किसी भी उद्देश्य की पूर्ति के लिए नैतिकता का त्याग नहीं किया जाना चाहिए। वह मानता है कि सच्ची देशभक्ति लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में है, न कि अराजकता और हिंसा फैलाने में।

संदीप, इसके विपरीत, यह मानता है कि किसी भी कीमत पर लक्ष्य को प्राप्त करना आवश्यक है, भले ही इसके लिए धोखा, छल या हिंसा का सहारा क्यों न लेना पड़े।

संदीप के चरित्र को पढ़ते समय, मुझे एहसास हुआ कि वह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपने स्वार्थ को राष्ट्रवाद की आड़ में छिपाते हैं, वह जनता को भड़काता है, लेकिन उसका असली उद्देश्य केवल अपनी शक्ति को बढ़ाना है।

निखिल का चरित्र अधिक शांत और सहिष्णु है, लेकिन कई बार वह इतना अधिक शांत प्रतीत होता है कि पाठक को लगता है कि वह अपनी पत्नी और समाज के प्रति अधिक निष्क्रिय हो रहा है। यह एक दिलचस्प दार्शनिक प्रश्न उठाता है—"क्या नैतिकता और आदर्शों को बनाए रखना अधिक महत्वपूर्ण है, या फिर किसी भी कीमत पर लक्ष्य को प्राप्त करना?"

उपन्यास का संदेश और इसकी प्रासंगिकता यह उपन्यास केवल 20वीं सदी ही नहीं आज के समय में भी उतना ही प्रासंगिक है।

1. **राजनीति और व्यक्तिगत जीवन का टकराव –** यह दिखाता है कि जब राजनीति हमारे निजी जीवन में प्रवेश करती है, तो यह हमारे रिश्तों और मूल्यों को प्रभावित करती है।

2. **सच्चा राष्ट्रवाद क्या है? –** उपन्यास यह प्रश्न उठाता है कि क्या सच्चा देशभक्त वह है, जो हिंसा के माध्यम से अपनी बात मनवाने की कोशिश करता है, या वह जो नैतिकता और प्रेम से देश की सेवा करता है?

3. **महिलाओं की स्वतंत्रता और आत्म-खोज –** बिमला का संघर्ष हर उस महिला का संघर्ष है, जो अपनी पहचान को खोजने के लिए परंपराओं और आधुनिकता के बीच झूल रही होती है।

"घर और संसार" केवल एक कहानी नहीं है, यह एक दार्शनिक बहस है। यह सवाल उठाता है कि सच्चा राष्ट्रवाद क्या होता है? क्या यह भावनाओं में बहकर कट्टरता की ओर जाने में है, या फिर यह शांतिपूर्ण और नैतिक रूप से सही रास्ता अपनाने में है?

एक पाठक के रूप में, मैंने इस उपन्यास से कई महत्वपूर्ण बातें सीखी:

- केवल भावनाओं और जोश के आधार पर लिए गए निर्णय अक्सर गलत साबित होते हैं।
- सहिष्णुता और धैर्य कमजोरियों के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि यह सच्ची शक्ति के संकेत हैं।
- जो लोग कट्टर राष्ट्रवाद के नाम पर हिंसा को बढ़ावा देते हैं, वे अक्सर अपने स्वार्थ के लिए ऐसा करते हैं।

यह उपन्यास हमें यह भी सिखाता है कि समाज और राजनीति केवल बाहरी दुनिया तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे हमारे व्यक्तिगत जीवन को भी प्रभावित करते हैं। जब राजनीति घर में प्रवेश करती है, तो यह केवल समाज में ही नहीं, बल्कि रिश्तों में भी उथल-पुथल मचा देती है।

निष्कर्ष

"घर और संसार" केवल एक कथा नहीं है, बल्कि यह एक दार्शनिक यात्रा है, जो पाठक को गहराई से सोचने पर मजबूर कर देती है। यह प्रेम, नैतिकता, राजनीति और आत्म-खोज की एक उत्कृष्ट कहानी है, जो हमें यह सिखाती है कि सही और गलत के बीच निर्णय लेना हमेशा आसान नहीं होता।

इस उपन्यास का अंत दुखद और मार्मिक है, लेकिन यह हमें सिखाता है कि कोई भी बदलाव बिना संघर्ष और त्याग के संभव नहीं है। यह उपन्यास न केवल एक ऐतिहासिक कथा है, बल्कि यह आज के समय में भी प्रासंगिक है।

क्या घर और संसार के बीच कोई संतुलन संभव है? क्या कट्टरता और आदर्शवाद साथ-साथ चल सकते हैं? यही प्रश्न इस उपन्यास की आत्मा है, और इन्हीं सवालों के उत्तर हमें स्वयं खोजने होगे।

इस उपन्यास को पढ़ने के बाद मेरे मन में कई प्रश्न उठे—

- क्या निखिल का आदर्शवाद सही था?
- क्या संदीप का राष्ट्रवाद केवल एक छलावा था?
- क्या बिमला ने अपनी स्वतंत्रता की खोज में स्वयं को ठगा हुआ पाया?
- क्या घर और संसार के बीच कोई संतुलन संभव है?
- क्या कट्टरता और आदर्शवाद साथ-साथ चल सकते हैं?

यही प्रश्न इस उपन्यास की आत्मा है, और इन्हीं सवालों के उत्तर हमें स्वयं खोजनें होंगे।

मनप्रीत सिंह
क्षे. का., जालंधर

डायरी

आज बरसों बाद मैंने अपनी पुरानी टिन की पेटी खोली। हाथों में अब वो पहले जैसी ताकत नहीं रही, पर फिर भी बड़ी हिम्मत जुटाकर उसे खोला। पेटी के एक कोने में मुझे वो फटा-पुराना, किताब जैसा कुछ मिला। उसे धीरे-धीरे उठाया, जैसे कोई अनमोल ख़ज़ाना हो। बड़े प्यार से उस पर जमी धूल को झाड़ा, और जैसे ही उसके पन्ने पलटने लगा, मेरे चेहरे पर खुद-ब-खुद एक ताज़गी भरी मुस्कान आ गई।

कुछ पन्ने पलटे ही थे कि अचानक मेरा हाथ थम गया। न जाने क्यों, उस पल मेरी आँखें बस उसी पन्ने पर टिक गईं। कुछ ही देर में एक मीठी सी मुस्कान मेरे होंठों पर तैरने लगी, और होठों से मेरे बेटे के नाम सहसा ही प्रेम की मिठास के साथ निकलने लगा। वो पन्ना... मेरे जिगर के टुकड़े के बारे में था। मेरा नन्हा बच्चा... जो अब नौकरी के कारण मुझसे मिलने नहीं आ पाता। कितने दिन हो गए उसे देखे हुए। उस वक़्त उसकी उम्र बस ग्यारह महीने थी।

मुझे आज भी याद है, जब मैं पहली बार उसके लिए एक प्यारा सा खिलौना खरीदकर लाया था। घर में सबके खाने के बाद, मैंने वो तोहफा उसके सामने रखा। उसके नन्हें से चेहरे पर जो मुस्कान उभरी थी, वो नज़ारा आज भी मेरी आंखों में बसा है। उसकी आंखें मानो पूर्णिमा के चाँद की तरह चमक उठी थीं।

रात के तीन बजे तक वो नन्हा सा बच्चा उसी खिलौने से खेलता रहा, उसे पहनने की कोशिश करता रहा। और जब भी हम उसे सुलाने की कोशिश करते, तो वो आंखों में आँसू लिए ऐसे देखता, मानो पूछ रहा हो – "क्यों दूर कर रहे हो मुझे मेरे नए दोस्त से?" उस मासूमियत को देख कर किसका दिल न पिघले? फिर क्या था, ऑफिस की चिंता छोड़, मैं भी उसके साथ खेल में शामिल हो गया।

आज ये पन्ना पढ़ते हुए दिल फिर उसी पल में चला गया। लगता है जैसे किसी ने मेरे दिल का सबसे हसीन हिस्सा फिर से मेरे सामने रख दिया हो। ये सब कुछ... एक बच्चे की अधीरता, एक पिता का नर्म-सा प्यार और नए खिलौने का उत्साह – इन सबका चित्रण इससे बेहतर शायद हो ही नहीं सकता था।

और ये सब मुझे फिर से जीने को मिला, बस उस डायरी के एक पन्ने के ज़रिए।

डायरी क्या होती है?

सुनने में तो सिर्फ एक पन्नों की गुथी हुई किताब । लेकिन इसके अंदर कितने सपने, कितने दर्द, कितने एहसास, कितनी मजबूरियां, कितनी गलतियां, कितनी खुशियाँ, कितने उल्लास और न जाने क्या क्या ....रहता है इन पन्नों के बीच । डायरी लेखन एक कलात्मक क्रिया है । दायरी को हम अपना एक- विश्वस्त मित्र मान सकते हैं, जहां हम अपने दुख-सुख, विचार, विमर्श और अनुभव को संरक्षित कर सकते हैं. जब भी हमें किसी की डायरी मिलती है तो हमारे मन में कई प्रश्न आते हैं, जैसे कि इसे खोलू की नहीं? पता नहीं इसमें क्या लिखा होगा? ये गलत है या सही? वगैरह वगैरह ....

सही मायनों में डायरी आखिर है क्या ; इसे लिखना कहीं समय की बर्बादी तो नहीं ? आखिर इसमें क्या लिखूँ ? क्या कभी यह डायरी हमारे काम आएगी ?

किसी ने कभी बहुत अच्छी बात कही है कि आप एक अपनी लिखी हुई डायरी संभाल के रखिए और किसी दिन यह डायरी आपको उस समय संभालेगी जब शायद आपको इसकी सख़्त जरूरत होगी ।

डायरी लिखना एक कला है इसमें नियमितता होना अनिवार्य ही नहीं बल्कि इसके रीढ़ की हड्डी भी मानी गयी है भले ही वह अंतराल एक दिवसीय या साप्ताहिक हो, परंतु नियमितता बनी रहनी चाहिए। इसे आत्म अभिव्यक्ति की साधना भी माना जाता है। यह ऐसी नितांत निजी लेखन है जहां आप अपने विचारों, भावनाओं,अनुभवों को अपने शब्दों में एक पन्नें पर उतार सकते हैं। इसे लिखते हुए हम अपने विचारों को अच्छे तरीके से पारदर्शिता के साथ उतार सकते हैं। इससे अपने जीवन के प्रति गहरी समझ विकसित होती है। मनोवैज्ञानिकों ने इसको मानसिक उपचारात्मक तथ्य का दर्जा दिया है क्योंकि खुलकर अपने विचारों को व्यक्त करने से तनाव कम होता है और इससे मानसिक स्वास्थ ठीक होता है, एकाग्रता बढ़ती है ।

डायरी लिखना वाकई एक अजीब अनुभव हो सकता है अपने दिल की बात सामने पन्नें रूपी हमदोस्त से जाहीर करने का इससे अच्छा तरीका शायद ही कोई हो।

सचमुच एक छोटी सी डायरी कमाल की होती है जो कि लिखने वाले के साथ साथ पढ़ने वाले का जीवन तक बदलने की ताकत रखती है ।

डायरी लेखन के तरीके:-

क) लिखने की जगह शांत होनी चाहिए ।

ख) इसको लिखने की कोई शैली नहीं होती है।

ग) लिखने में कोई भी डर या संकोच नहीं होनी चाहिए ।

घ) सबसे पहले ऊपर दिन, समय और जगह का नाम लिखें।

ङ) लिखने का सही समय रात को सोने से पहले होता है ताकि पूरी दिनचर्या के बारे में लिखा जा सके।

च) जब भी लिखें, इसमें दिनचर्या के साथ-साथ अपने मन की हर बात जो किसी से कही न जा सके उसे जरूर लिखें, जैसे आपसे कोई गलती हो गयी हो या आपको किसी पर ज्यादा गुस्सा आ गया हो, या किसी बात को लेकर आपको बहुत ही अफसोस हो रहा हो, ऐसा करने से मन हल्का भी होता है और तनाव मुक्त महसूस करेंगे।

छ) लिखने की भाषा सरल होनी चाहिए।

ज) लिखने में अपने विचार एवं भावनओं को व्यक्त करें। जो भी लिखें खुल कर लिखें यह आपके मानसिक तनाव को कम करने में मदद करेगा।

झ) आपका दिन कैसा रहा, कोई नया दोस्त बना हो, कोई नई योग्यता हासिल की हो, कहीं आपके जीवन में कुछ ऐसा हुआ हो जिसका आपको बहुत ही इंतजर था .... वगैरह वगैरह

ञ) डायरी लेखन को आप रोचक बनाने के लिए कुछ बीच-बीच में शायरी भी लिख सकते हैं या कुछ ऐसे शब्द या वाक्य का प्रयोग करें जिसको पढ़ने से आपको खुद आनंद आ जाए।

ट) उस दिन बीते हुए दिनचर्या के आधार पर चाहे तो अपने मन पसंद शीर्षक भी लिख सकते हैं।

डायरी लिखने के कई फायदे होते हैं, जैसे कि तनाव कम होना, आत्मविश्वास बढ़ना, और लेखन कौशल में सुधार होना । डायरी लिखने की आदत डालने से आप अपने विचारों को व्यवस्थित करने लगते हैं और अपने मन की बातों को दूसरों से साझा भी करने लगते हैं। हम इससे अपनी आत्म-जागरूकता में सुधार भी ला सकते हैं।आज कल के जमाने में इसी डायरी का डिजिटल रूप ब्लॉग के रूप में सबके सामने आ खड़ा हुआ है । जहां पहले डायरी को लिख कर छुपाते थे वहीं आज ब्लॉग को पब्लिश कर लोगों से उस पर सुझाव मांगे जाते हैं. इसलिए चाहे ज़माना पुराना हो या नया एहसास तो हमेशा से सहेजे जाएँगे बस उनको रखने का तरीका भले ही अलग हो जाए ।

अगर आपने आज तक अपने एहसासों को कभी कागज पर नहीं उतारा है तो उसको जरूर एक बार लिख कर देखिये, यकीन मानिए आप भी अचरज से भर जाएँगे और इस नयी आदत को हमेशा के लिए अपनाना चाहेंगे ।

आशिष रंजन
सयाजीगंज शाखा,
बड़ौदा

फिर से बचपन..........

जब मैं छोटा बच्चा था,
तब यौवन का लोभ लुभाता था,

लेकिन अब जब बड़ा हुआ,
तो बचपन को फिर से जीना चाहता हूँ,

तब चार यार ही बहुत थे,
अब भीड़ में भी खुद को अकेला पता हूँ,

निश्छल, निस्वार्थ यारों के लिए बचपन को फिर से जीना
चाहता हूँ,

अब शब्द-तीर भी पैने घाव से उतरते हैं, तब
जूतमपैजार भी हृदय न छूती थी,

वो सागर से दिल में सामने को बचपन को फिर से जीना
चाहता हूँ,

थक चुका हूँ उत्तरदायित्व निभाते-निभाते, रोबोट जैसा
खुद को बनाते-बनाते,

बेफिक्र, उत्सुक, उमंगो भरे बचपन को फिर से जीना
चाहता हूँ,

सर्दियों में मूँगफली पाने का हर्ष,
रविवार को टीवी देखने-दिखाने का हर्ष,

किराए की साइकिल चलाने का हर्ष,
पेड़ों से फल तोड़ खाने का हर्ष,

छुट्टियों में नानी के घर जाने का हर्ष, ट्यूब-वैल के पानी
में नहाने का हर्ष,

नुमाइश में झूलों में झूम जाने का हर्ष, सर्कस के रोमांच
उठाने का हर्ष,

ये हर्षातिरेक उल्हास पाने को बचपन को फिर से जीना
चाहता हूँ ।

कुलदीप पाठक
एमएसएमई विभाग,
कें.का., मुंबई

मैराथन

आधुनिक दौर की तेज़ रफ्तार ज़िंदगी में हर कोई मशीन सा बन गया है. हर दिन नई ऊँचाइयों को छूने की लालसा और आगे बढ़ने की होड़ ने हमें इस कदर जकड़ लिया है कि हम यह भूल ही गए हैं कि असली धन हमारा स्वास्थ्य है. सच कहूँ तो मैं भी इससे अलग नहीं था. लेकिन जब तक मुझे इसका एहसास होता, तब तक बहुत देर हो चुकी थी. यानी, मैंने वह कीमती समय गंवा दिया था, जिसे मुझे अपने स्वास्थ्य की देखभाल में लगाना चाहिए था. लगातार अनदेखी करने के कारण मेरी रीढ़ की हड्डी में तेज़ दर्द और कुछ अन्य शारीरिक जटिलताएं बढ़ने लगीं, जिससे मेरी हालत गंभीर हो गई. स्थिति इतनी खराब हो गई कि उठना-बैठना भी मुश्किल हो गया. कई बार तो दफ्तर में कुर्सी से उठने के लिए भी मुझे सहकर्मियों की मदद लेनी पड़ती थी. धीरे-धीरे हालात और बिगड़ते चले गए और आखिरकार, एक दिन मुझे अस्पताल में भर्ती होना पड़ा. वहाँ डॉक्टरों ने कई प्रकार की जाँचें, एक्स-रे, एमआरआई स्कैन आदि करवाकर विभिन्न विशेषज्ञों से सलाह ली. सभी का एक ही निष्कर्ष था- मेरी रीढ़ की हड्डी और सर्वाइकल स्पॉन्डिलाइटिस में जटिलताएँ हैं. कुछ विशेषज्ञों ने सर्जरी की सलाह दी, वहीं कुछ अन्य ने जीवनशैली में बदलाव और लंबे समय तक आराम करने की सलाह दी.

नया नजरिया, नई ऊर्जा: मेरी शारीरिक जटिलताओं ने मुझे जीवन को एक नई दृष्टि से देखने का अवसर दिया. इस कठिन दौर ने मुझे सिखाया कि जीवन सिर्फ काम और भागदौड़ तक सीमित नहीं है, बल्कि खुद का ख्याल रखना भी उतना ही ज़रूरी है. इसी एहसास के साथ मैंने अपनी जीवनशैली में बदलाव लाने का संकल्प लिया और कुछ सरल शारीरिक व्यायाम तुरंत शुरू कर दिए. दरअसल, अस्पताल में भर्ती होने से लगभग आठ महीने पहले ही मैंने फिजियोथेरेपी का सहारा लेना शुरू कर दिया था, जिससे मेरी रीढ़ की हड्डी के दर्द में काफी राहत मिली थी. सब कुछ धीरे-धीरे सामान्य हो रहा था, लेकिन इसी बीच मेरा चयन बैंक के ज्ञानार्जन केंद्र में संकाय सदस्य के रूप में हो गया. शुरुआती प्रशिक्षण के बाद मेरी पदस्थी मुंबई में हो गई.

मुंबई की तेज़ रफ्तार ज़िंदगी ने मेरी नई आदतों पर अचानक विराम लगा दिया. व्यस्त दिनचर्या और भागदौड़ में मैं खुद को फिर से उसी चक्र में फंसा हुआ महसूस करने लगा. यहाँ तक कि फिजियोथेरेपी तक शुरू नहीं कर पाया. शरीर की ज़रूरतें फिर से पीछे छूटने लगीं, लेकिन मुझे अंदाजा नहीं था कि आगे कुछ ऐसा होगा जो मेरी ज़िंदगी को एक नया मोड़ देगा.

एक दिन, हमारे केंद्र प्रभारी ने मुंबई में ही प्रस्तावित एक मैराथन दौड़ के बारे में चर्चा की और मुझे भी इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित किया. पहले तो मैंने साफ मना कर दिया- चूँकि मेरी शारीरिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि मैं दौड़ने के बारे में सोच भी सकूँ! लेकिन उनके उत्साह और सकारात्मकता भरे अभिप्रेरण के समक्ष मेरी असमर्थता नतमस्तक हो गई. हिचकिचाहट के बावजूद मैंने पहली बार मैराथन में दौड़ने का फैसला किया.

और फिर, कुछ ऐसा हुआ जो मैंने कभी सोचा भी नहीं था. बिना किसी जटिलता के, मैंने मुंबई आने के बाद अपनी पहली मैराथन पूरी कर ली! उस एक दौड़ ने मेरे भीतर एक नई ऊर्जा भर दी, एक ऐसा जोश जो पहले कभी महसूस नहीं हुआ था. मैं रुका नहीं- पहली दौड़ के बाद दूसरी, फिर तीसरी... और देखते ही देखते इस सीजन में मैं 6 मैराथन पूरी कर चुका था! यह सिर्फ एक दौड़ नहीं थी, यह मेरी ज़िंदगी का नया अध्याय था- एक ऐसी शुरुआत जिसने मुझे खुद से फिर से जोड़ दिया.

7वां मैराथन: एक नई सूर्योदय: इस बार एसबीआई ग्रीन मैराथन दौड़ में भाग लेने का प्रस्ताव आया, और बिना किसी हिचकिचाहट के मैंने इसे स्वीकार कर लिया. पूरी लगन के साथ मैंने 10 किमी दौड़ की तैयारियां शुरू कर दीं. 23 फरवरी 2025, यह दिन मेरे लिए सिर्फ एक और मैराथन दौड़ का हिस्सा बनने का नहीं, बल्कि एक यादगार अनुभव का प्रतीक बन गया.

दौड़ की शुरुआत– ऊर्जा और उमंग: उस सुबह मैं एक नई ऊर्जा और आत्मविश्वास के साथ उठा और अपनी पूरी तैयारी के साथ मिशन पर निकल पड़ा. तय समय पर गंतव्य पर पहुँचा, जहाँ अन्य धावकों के साथ वार्म-अप किया. वहाँ का पूरा माहौल जोश और उत्साह से सराबोर था. जैसे ही विशिष्ट अतिथि ने हरी झंडी दिखाई, हजारों धावकों के साथ मैंने भी प्रारम्भ रेखा पार कर अपनी गति पकड़ ली.

ऊषा-काल का समय था, आसमान में रात की हल्की अंधियारी अब भी मौजूद थी, लेकिन सूर्योदय की लालिमा धीरे-धीरे उस अंधेरे को पीछे छोड़ते हुए एक नई चमक

बिखेर रही थी. मंद पवन के ठंडे झोंकें दौड़ को और भी आनंददायक बना रहे थे. मैं अपनी मध्यम गति से दौड़ते हुए आनंद के इस पल को महसूस कर रहा था.

एक अनपेक्षित मोड़: अबतक मेरे कदमों ने सड़क पर करीब 7 किमी की दूरी को तय कर लिया था, मेरा पूरा शरीर पसीने से तर-बतर था. तभी, मेरी नज़र सामने वापसी वाली लेन से दौड़कर आ रहे एक व्यक्ति पर पड़ी. हमारे बीच का फांसला बमुश्किल कुछ हीं कदम को हो, देखते-देखते अगले ही क्षण वे एक तिनके के समान ज़मीन पर गिर पड़े. जब तक मैं कुछ समझ पाता, मेरे कदम स्वतः ही उनकी ओर बढ़ गए. जब मैं उनके पास पहुँचा, तो देखा कि वे पूरी तरह बेहोश थे.

मेरी प्राथमिक चिकित्सा (फर्स्ट-एड) की जानकारी काम आई. मैंने तुरंत उनका एबीसी चेक किया, एबीसी का मतलब होता है, श्वसन तंत्र Airway, श्वास Breathing और रक्तसंचार Circulation; इसे किसी भी प्राथमिक उपचार की शुरुआत कहा जाता है. उनका श्वसन मार्ग खुला था, लेकिन मुँह जकड़ा हुआ था. सांसें हल्की-हल्की आ रही थीं, सबसे महत्वपूर्ण, सर्कुलेशन भी सामान्य था, मैं उनकी धड़कनों को बड़ी सहजता से अनुभव कर पा रहा था लेकिन शरीर बर्फ की तरह ठंडा था मानो अभी बर्फ वाले पानी से नहाकर आए हों. इन संकेतों से मैंने अंदाज़ा लगाया कि वे डिहाइड्रेशन और लो ब्लड प्रेशर के कारण बेहोश हुए हैं और तत्काल उन्हे सीपीआर (कार्डियो पल्मनरी रिससिटेशन) की आवश्यकता नहीं है.

तत्काल बचाव कार्य: मैंने बिना देर किए उनके जूते और मोज़े खोल दिया, कपड़ों को ढीला किया ताकि वे आराम महसूस कर सकें. इस बीच, कुछ और धावक भी मदद के लिए रुक गए. मैंने उन्हें रिकवरी पोजीशन में लिटाया और उनके हाथों और तलवों को रगड़ने लगा ताकि शरीर में गर्माहट बनी रहे. हालाकि, वो हमारे द्वारा पूछे गए प्रश्नों (नाम, पता आदि) का कुछ प्रतिक्रिया (Respond) नहीं कर रहे थे, लेकिन मन में एक विश्वास था कि कुछ अनहोनी न हो. दौड़ रहे धावकों से पानी की बोतल और ORS माँगा, चेहरे पर पानी के छींटे मारे और धीरे-धीरे उन्हें ORS पिलाना शुरू किया.

पहले कुछ मिनटों तक तो कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली, लेकिन फिर हल्की हरकत हुई. मैंने दोबारा नाम और पता पूछा, इस बार उनकी लड़खड़ाती आवाज़ से जवाब आया- "महादेव", जो उनके बिब पर लिखा नाम महादेव पिचाई से मेल खा रहा था, मैं भी आश्वस्त हो चला कि अब खतरे की कोई बात नहीं है. हमने तुरंत मैराथन आयोजकों और मेडिकल टीम को घटना की सूचना दी और उनसे एम्बुलेंस की व्यवस्था करने का आग्रह किया.

संवेदनाओं से भरा क्षण: जब तक एम्बुलेंस आती, मैं महादेव पिचाई सर के पास ही बैठा रहा और उनसे बातें करता रहा ताकि उन्हें अकेलापन महसूस न हो. बातचीत के दौरान पता चला कि वे सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के ट्रेजरी विभाग में उप महाप्रबंधक हैं और मुंबई के नेरुल में रहते हैं. जब मैंने बताया कि मैं भी एक बैंकर हूँ और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में कार्यरत हूँ, तो उनके चेहरे पर एक अपनत्व भरी मुस्कान उभर आई. मैंने भी एक मधुर मुस्कान के साथ उनका स्वागत किया.

कुछ ही मिनटों में एम्बुलेंस का सायरन गूंजा, और मेडिकल टीम उन्हें स्ट्रेचर पर ले जाने लगी, मैंने महादेव पिचाई सर के निजी सामान को एम्बुलेंस में डालकर उन्हें विदा किया. जाते-जाते भी उनकी आँखों में कृतज्ञता झलक रही थी. उनकी मुस्कान और संतोष भरी निगाहों ने मेरे दिल को एक अद्भुत सुखद संतुष्टि से भर दिया.

इस पूरे घटनाक्रम में शायद 15 मिनट बीत चुके थे, लेकिन मुझे समय का बिल्कुल भी एहसास नहीं हुआ. मेरी दुनिया उस पल के लिए बस महादेव पिचाई सर की ओर केंद्रित थी. मैं अपनी मैराथन दौड़ को पूरी तरह भूल चुका था. तभी एक धावक ने पास आकर पूछा, "यहाँ क्या हुआ था?" मैंने एक ही सांस में उन्हें सारी घटना बता दी. उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "बहुत बढ़िया! चलो, अब सिर्फ 1.5 किमी दौड़ बाकी है." मैं भी उनके साथ हो लिया.

अगले कुछ हीं मिनटों में मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली. लेकिन, जैसे हीं मैंने अंतिम रेखा पार की मुझे कुछ अहसास हुआ.... वास्तव में मैं अपनी 10 कि.मी. की दौड़ पूरी नहीं कर पाया. मैंने पीछे मुड़कर सोचा, तो याद आया कि जब महादेव पिचाई सर बेहोश होकर गिरे थे, तब मैं 7वें किलोमीटर बिंदु पर था. उनको मदद करने के क्रम में विपरीत दिशा में चला गया था, और उन्हें एम्बुलेंस में बैठाने के बाद वहीं से सीधे अंतिम रेखा की ओर बढ़ गया था. तकनीकी रूप से देखा जाए तो मैंने 10 किमी की यह दौड़ पूरी नहीं की थी.

लेकिन जो पूरी हुई, वह थी एक और बड़ी दौड़...

हालाँकि, मेरे पैरों ने 10 किमी का पूरा सफर तय नहीं किया, लेकिन मेरे दिल ने एक बड़ी दौड़ पूरी की थी- किसी के जीवन की दौड़ को जारी रखने में एक छोटा सा योगदान देने की दौड़.

मेरे मन-मस्तिष्क में एक ही विचार कौंध रहा था कि यह सिर्फ एक मैराथन दौड़ नहीं थी, बल्कि आत्मिक सेवा-भाव के साथ यह मैराथन- **जीवन की डोर** भी थी. मैंने ऊपर देखा, सूरज अपनी पूरी चमक के साथ आसमान में था, जैसे परमेश्वर मुस्कुराकर मुझे इस अद्भुत सफर के लिए आशीर्वाद दे रहे हों. मन ही मन मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया और सोचा-

"आज की यह दौड़ मेरे जीवन की सबसे बड़ी दौड़ थी!"

शांतनु कुमार
ज़ेडएलसी, पवई

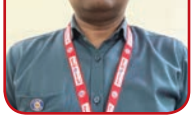

गर्मियों में स्वास्थ्य और सुरक्षात्मक उपाय

मौसम विभाग के अनुसार, इस साल की फरवरी अब तक की सबसे गर्म फरवरी थी। फरवरी में रिकॉर्ड किया गया पूरे भारत का औसत मासिक तापमान 22.04 डिग्री सेल्सियस था, जो सामान्य से 1.34 डिग्री सेल्सियस ज्यादा था। पूरे भारत का औसत मासिक अधिकतम तापमान के हिसाब से यह 2023 के बाद दूसरी सबसे गर्म फरवरी थी। केंद्रीय और दक्षिण प्रायद्वीपीय भारत के क्षेत्रों के लिए यह 124 वर्षों में सबसे गर्म फरवरी थी। मौसम विभाग के अनुसार, आगे बढ़ते हुए, अगले तीन महीनों के दौरान गर्म परिस्थितियों से राहत मिलने की संभावना कम है।

ऋतु परिवर्तन स्वाभाविक है और इसके साथ आने वाली विभिन्न बीमारियाँ और कठिनाइयाँ भी स्वाभाविक हैं। आज के मांग और थकान भरे समय में, अपने आप और अपने प्रियजनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सतर्क रहना बहुत आवश्यक है ताकि हम भीषण गर्मी के कठिन दौर से सुरक्षित निकल सकें।

इस अवधि के दौरान सुरक्षा और उत्पादकता बनाए रखने के लिए अतिरिक्त सावधानी और एहतियाती उपाय अपनाना आवश्यक है। इस दिशा में कुछ व्यावहारिक टिप्स / नुसख़ों का पालन कर सकते हैं:

1. **पानी का सेवन :** निर्जलीकरण (dehydration) से बचने के लिए पानी की मात्रा बढ़ाएं। हमेशा एक पानी की बोतल साथ रखें और नियमित अंतराल पर पानी पिएं। इलेक्ट्रोलाइट्स युक्त पेय पदार्थों के साथ हाइड्रेट करने पर विचार करें। रोजाना कम से कम 3 लीटर पानी पिएं और फलों का जूस, शेक और स्मूदी का सेवन बढ़ाएं.

2. **पहनावा:** ठंडा रहने के लिए हल्के, हल्के रंग के और ढीले कपड़े पहनें। कपास और लिनन के कपड़े आपकी त्वचा के लिए आदर्श हैं। ऐसा करके आप अपनी त्वचा को कई प्रकार के त्वचा जनित समस्याओं से मुक्त रख सकते हैं।
3. **बाहरी गतिविधियों को सीमित रखें:** दिन के ठंडे समय में बाहरी गतिविधियों की योजना बनाएं, जैसे प्रातः सूर्योदय के आस-पास सुबह या शाम सूरज ढलने के बाद। अधिकतम गर्मी के घंटों के दौरान श्रमसाध्य गतिविधियों से बचें। जब भी संभव हो, दिन के सबसे गर्म समय के दौरान अंदर रहें। एक आरामदायक इनडोर तापमान बनाए रखने के लिए पंखे, एयर कंडीशनिंग या कूलर का उपयोग करें। बहुत जरूरी होने पर ही घर से बाहर निकलें। धूप और गर्म हवाओं के बीच कम समय बिताएं
4. **यूवी सुरक्षा क्रीम का उपयोग करें:** बाहर जाने से पहले उच्च एसपीएफ के साथ एक ब्रॉड-स्पेक्ट्रम सनस्क्रीन लगाएं। टोपी, धूप का चश्मा पहनना और छतरियों का उपयोग करना भी सूर्य से अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान कर सकता है।
5. **स्वास्थ्य की निगरानी करें:** अत्यधिक गरमी से संबंधित बीमारियों जैसे गर्मी से थकावट और लू लगने के लक्षणों से अवगत रहें। अगर आपको चक्कर आना, मितली, तेज धड़कन या भ्रम जैसे लक्षण दिखाई देते हैं, तो तुरंत चिकित्सा सहायता प्राप्त करें।
6. **हल्का और पौष्टिक भोजन करें:** हल्का और आसानी से पचने वाला भोजन करें। भारी, तैलीय और मसालेदार खाद्य पदार्थों से बचें क्योंकि वे आपके शरीर के तापमान को असामान्य तौर पर बढ़ा सकते हैं। मौसमी फलों और सब्जियों का सेवन करें।
7. **नियमित ब्रेक लें:** अगर आप काम कर रहे हैं, विशेषकर गैर-एयर-कंडीशन वाले वातावरण में, आराम करने और ठंडा रहने के लिए नियमित ब्रेक लें। छोटे ब्रेक उत्पादकता बनाए रखने और गर्मी से संबंधित थकान को रोकने में

मदद कर सकते हैं।

8. **जानकार बनें:** मौसम के पूर्वानुमान और हीटवेव अलर्ट पर नजर रखें। मौसम की स्थिति के बारे में जानकारी होना आपकी गतिविधियों की योजना बनाने में मदद कर सकता है।

9. **भरपूर नींद लें:** कम से कम 6 घंटे की नींद जरूर लें। नींद आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने का काम करती है।

10. **नियमित व्यायाम करें:** रोजाना व्यायाम की आदत बनाएं। योग और प्राणायाम भी आपको मौसमी रोगों से बचाने में मदद कर सकते हैं।

11. **शराब और कैफीन से बचें:** ये दोनों चीजें आपके शरीर को डीहाइड्रेट कर सकती हैं। इसलिए जितना हो सके इनसे बचने का प्रयास करें।

12. **घर की छत को ठंडा रखें:** घर की छत को ठंडा रखने के लिए पानी का छिड़काव करें, जिससे आपके घर के अंदर का तापमान थोड़ा कम रहेगा।

इसके साथ साथ, गर्मियों के मौसम में, ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन करना सबसे अच्छा है जो हाइड्रेटिंग, हल्के और पचने में आसान हों। कुछ ऐसे खाद्य पदार्थों की सूची नीचे दी गई हैं:

1. **तरबूज एवं खरबूजा:** ये रसीले फल न केवल स्वादिष्ट होते हैं बल्कि इनमें उच्च जल तत्व के कारण अत्यधिक हाइड्रेटिंग भी होते हैं।

2. **खीरे:** खीरे ताजगी देने वाले होते हैं और शरीर को ठंडक पहुंचाते हैं। ये सलाद और स्नैक्स के लिए उत्तम होते हैं।

3. **दही:** दही प्रोबायोटिक्स का एक अच्छा स्रोत है और पाचन में मदद करता है। इसे सादा, फलों के साथ या स्मूदी में मिश्रित किया जा सकता है।

4. **सिट्रस फल:** संतरे, नींबू, और अंगूर विटामिन सी से भरपूर होते हैं और आपको तरोताजा रखते हैं।

5. **हरी पत्तेदार सब्जियां:** पालक, लाल साग, और अन्य हरी पत्तेदार सब्जियां पोषक तत्वों से भरपूर होती हैं और इन्हें सलाद और स्मूदी में शामिल किया जा सकता है।

6. **नारियल पानी:** नारियल पानी प्राकृतिक इलेक्ट्रोलाइट्स का स्रोत होता है और हाइड्रेटेड रहने में मदद करता है।

7. **बेरीज:** स्ट्रॉबेरी, ब्लूबेरी, और रास्पबेरी एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होते हैं और मीठा, ताजगी भरा अनुभव प्रदान करते हैं।

8. **पुदीना:** पुदीने की पत्तियों को पेय, सलाद, और व्यंजनों में शामिल किया जा सकता है ठंडक पहुंचाने के लिए।

इन खाद्य पदार्थों को अपने आहार में शामिल करके, आप गर्मियों में ठंडे, तरोताजा और स्वस्थ रह सकते हैं।

जलवायु संबंधी कठिनाइयों का मुकाबला करने और पृथ्वी की हरियाली बढ़ाने के लिए हमें साथ मिलकर काम करना चाहिए। बारिश के मौसम में जितने हो सके उतने पेड़ लगाकर अगली गर्मी को इस साल से कम गर्म बना सकते हैं।

अभिमन्यु रथ
जेड एल सी, भुवनेश्वर

जीवन

जीवन है, सब चलता है
ये कहना बेकार नहीं.
गिरना है खा कर ठोकर,
न उठना उपचार नहीं.
होती है नजर मंजिल पर,
बसा है दिल में अनजाना डर.
होने देना हावी डर को,
यह मन को स्वीकार नहीं.
डर मत जाना मन के डर से,
मन है कोई बीमार नहीं.
चल कर थकना,
थक कर चलना,
यह जीवन की रीत है.
देख स्वपन को आगे बढ़ना,
ही मधुर संगीत है.
है जीवन की अलग अहमियत.
इसमें एक आकर्षण है.
जीने में यह कभी सरल
तो कभी जटिल यह दर्शन है.
गिरते भी हैं वही इस रण में
जो चलने को आतुर हैं.
उनका क्या है जो खुद व्याकुल
और जीवन में भयातुर हैं.
गिरना है खा कर ठोकर,
न उठना उपचार नहीं.
जीवन है सब चलता है
ये कहना बेकार नहीं.

कुणाल कुमार सिंह
क्षे. का., मुंबई, अंधेरी

दिनांक 29.01.2025 को नराकास, मडिकेरी की छमाही बैठक आयोजित की गई. जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर श्री अनिर्बान कुमार बिश्वास, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का. (दक्षिण), बेंगलूरु उपस्थित रहे.

दिनांक 28.01.2025 क्षे. का., समस्तीपुर द्वारा नराकास , समस्तीपुर की 7वीं बैठक का आयोजन श्री राजेश कुमार, अध्यक्ष, नराकास सह क्षेत्र प्रमुख की अध्यक्षता में किया गया.

दिनांक 5.02.2025 को नराकास, राजन्ना सिरसिल्ला की अर्धवार्षिक बैठक श्री टी एन मल्लिकार्जुन राव, अध्यक्ष, नराकास सह एलडीएम की अध्यक्षता में आयोजित की गई. इस बैठक में श्री अनिर्बान कुमार बिश्वास, उप निदेशक(का.) क्षे.का.का.(दक्षिण) वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उपस्थित रहे.

दिनांक 01.02.2025 को नराकास (बैंक), चंडीगढ़ के तत्वावधान में अं. का., चंडीगढ़ द्वारा "कार्यपालकों हेतु तकनीक आधारित राजभाषा संगोष्ठी," का आयोजन किया गया. मंचासीन हैं श्री मनोज कुमार, अंचल प्रमुख, डॉ. राजेश प्रसाद, अध्यक्ष, नराकास तथा मुख्य अतिथि श्री बालेंदु शर्मा दाधीच, निदेशक माइक्रोसॉफ़्ट - भारतीय भाषाएँ और सुगमता.

दिनांक 10.01.2025 को विश्व हिंदी के अवसर पर नराकास भोपाल के सभी सदस्य कार्यालयों हेतु "भारत @ 2047:भारतीय भाषाएँ एवं हिंदी की भूमिका" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में श्री हरीश सिंह चौहान,सहायक निदेशक,गृह मंत्रालय, भारत सरकार की गरिमामयी उपस्थिति रही ।

दिनांक 08.01.2025 को नराकास, बालेश्वर के तत्वधान में क्षे. का., बालेश्वर में सेमिनार सह संयुक्त कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला का उद्घाटन श्री गजेन्द्र नाथ दास, उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया.

10 जनवरी विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक दिनांक 13.01.2025 को नराकास(बैंक), नागपुर के तत्वाधान में क्षे. का., नागपुर द्वारा राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया. मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में डॉ मनोज पांडे, हिन्दी विभाग प्रमुख, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज विश्वविद्यालय, नागपुर का स्वागत करते हुए श्री एस शिवकुमारत, उप क्षेत्र प्रमुख, नागपुर.

दिनांक 10.01.2025 को अं. का., विशाखपट्टणम द्वारा श्री शंकरा राव देवर, उप अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में कार्यपालकों हेतु राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया.

दिनांक 21.03.2025 को अं. का. राँची द्वारा श्री बैजनाथ सिंह,अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में कार्यपालकों हेतु राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया. अतिथि वक्ता के रूप में श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.) ऑनलाइन उपस्थित रहे.

दिनांक 07.02.2025 को अं. का., हैदराबाद द्वारा "कार्यपालकों" के लिए "ग्राहक शिकायत निवारण" विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया. इस अवसर पर मुख्य वक्ता श्री चिन्मय कुमार, मुख्य महाप्रबंधक एवं लोकपाल, भारतीय रिजर्व बैंक, हैदराबाद का स्वागत करते हुए श्री कारे भास्कर राव, अंचल प्रमुख. इस अवसर पर श्री अजय कुमार, महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख, श्री वीएसवी नागेश, उप महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख तथा श्री एम अरुण कुमार, उप महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख उपस्थित रहे.

दिनांक 20.02.2025 को अं. का. पुणे द्वारा श्री नवीन जैन, अंचल प्रमुख, अध्यक्षता में "कार्यपालकों" हेतु "विकसित भारत की संकल्पना में भारतीय भाषाओं की भूमिका" विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया. मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में डॉ. राजेंद्र प्रसाद वर्मा, हिंदी शिक्षण योजना उपस्थित रहे.

दिनांक 29.01.2025 को अंचल कार्यालय, बेंगलूरु द्वारा कार्यपालकों के लिए "राजभाषा कार्यान्वयन में कार्यपालकों की भूमिका" विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन श्री सुधीर सी वी, उप अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में किया गया. इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में श्री अमरनाथ, सहायक महाप्रबंधक(राभा), भारतीय रिज़र्व बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु उपस्थित रहे.

दिनांक 13.03.2025 को क्षे. का., बेंगलूरु (उत्तर) द्वारा श्रीमती एम. सरिता, उप क्षेत्र प्रमुख की अध्यक्षता में पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय,मल्लेश्वरम के शिक्षकों हेतु हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया.

दिनांक 09.01.2025 को क्षे. का., कोल्लम में राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन श्री सत्यनाराय रेड्डी तथा जे सुब्रमणियम, उप क्षेत्र प्रमुख की अध्यक्षता में किया गया.

दिनांक 10.01.2025 को क्षे. का., पटना के स्टाफ सदस्यों हेतु संगोष्ठी का आयोजन श्री रंजित सिंह, क्षेत्र प्रमुख की अध्यक्षता में किया गया.

दिनांक 15.03.2025 को अं. का., पुणे द्वारा श्री नवीन जैन अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में 'राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में आने वाली समस्याएं एवं इनके समाधान' विषय पर श्री बिरेंद्र कुमार यादव, सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति के वक्तव्य का आयोजन किया गया.

दिनांक 22.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, बालेश्वर में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित संगोष्ठी में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री आशुतोष पटनायक, क्षेत्र प्रमुख.

दिनांक 10.02.2025 को अं. का., राँची द्वारा श्री विजय कुमार राय , उप अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में अर्धवार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया.

दिनांक 08.01.2025 को अं. का., भोपाल द्वारा श्री बिरजा प्रसाद दास, अंचल प्रमुख की अध्यक्षता एवं श्री अरविंद कुमार सुसरला, उप अंचल प्रमुख की उपस्थिति में अर्ध-वार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया.

दिनांक 20.02.2025 को अं. का., मंगलूरु द्वारा श्रीमती रेणु के. नायर, अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में अर्धवार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया.

दिनांक 06.02.2025 को श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.) द्वारा अं. का., दिल्ली का राजभाषाई निरीक्षण किया गया.

दिनांक 22.01.2025 को श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक (का.), क्षे. का. का., कोच्चि द्वारा क्षे. का., तृश्शूर की मलप्पुरम शाखा का राजभाषाई निरीक्षण किया गया.

दिनांक 17.03.2025 को श्री छबिल कुमार मेहेर, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का. (उत्तर-2) द्वारा क्षे. का. वाराणसी का राजभाषाई निरीक्षण किया गया.

दिनांक 07.02.2025 को श्री अनिर्बान कुमार बिश्वास, उप निदेशक (का.), क्षे. का.का (दक्षिण) द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुचिरापल्ली का राजभाषाई निरीक्षण किया गया.

दिनांक 24.01.2025 को अं. का., हैदराबाद द्वारा यूनियन भाषा सौहार्द इंद्रधनुष कार्यक्रम में श्री कारे भास्कर राव, मुख्य महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, श्री वीएसवी नागेश, उप महाप्रबंधक व उप अंचल प्रमुख तथा हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा से प्रो.चंद्रदेव कवडे, अध्यक्ष तथा अन्य उपस्थित रहे.

दिनांक 20.03.2025 को अं. का. विजयवाडा द्वारा यूनियन भाषा सौहार्द इंद्रधनुष कार्यक्रम का आयोजन श्री. सी वी एन भास्कर राव, अंचल प्रमुख,की अध्यक्षता में किया गया. साथ है श्रीमती. ए शारदा मूर्ती, उप अंचल प्रमुख, श्री. गिरिधर, कोषाधिकारी, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद.

दिनांक 13.02.2025 को क्षे. का., बड़ौदा में आयोजित हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री जुगल किशोर रस्तोगी, उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया.

दिनांक 21.03.2025 को क्षे. का., कड़पा में आयोजित हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्रीमती ए लक्ष्मी तुलसी, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया.

दिनांक 07.02.2025 को क्षे. का., पटना में आयोजित हिंदी कार्यशाला का उद्घटान श्री चन्दन वर्मा ,उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया.

दिनांक 15.03.2025 को क्षे. का. तिरुपुर में आयोजित हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री एम चेल्लदुरै, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया.

दिनांक 01.03.2025 को क्षे. का., जालंधर में आयोजित हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री गुरदीप सिंह, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया.

संसदीय राजभाषा समिति के माननीय सदस्यों द्वारा विमोचन

दिनांक 16.01.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई (दक्षिण) के निरीक्षण के दौरान केंद्रीय कार्यालय द्वारा प्रकाशित "राजभाषा नीति" पुस्तिका का विमोचन

दिनांक 16.01.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई (दक्षिण) के निरीक्षण के दौरान अं. का. एवं क्षे. का., मुंबई दक्षिण की संयुक्त क्षेत्रीय गृह पत्रिका "यूनियन क्षितिज" का विमोचन

दिनांक 04.03.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर के निरीक्षण के दौरान केंद्रीय कार्यालय द्वारा प्रकाशित कार्टून पुस्तिका "बैंक मित्र (बी.सी.) - सबका मित्र" का विमोचन

दिनांक 04.03.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर के निरीक्षण के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर द्वारा प्रकाशित संदर्भ साहित्य "भारत में एटीएम का भविष्य" का विमोचन

दिनांक 06.03.2025 को अंचल कार्यालय, जयपुर के निरीक्षण के दौरान केंद्रीय कार्यालय द्वारा प्रकाशित "ग्राहक सेवा के विविध आयाम" पुस्तक का विमोचन

दिनांक 06.03.2025 को अंचल कार्यालय, जयपुर के निरीक्षण के दौरान अंचल कार्यालय, जयपुर द्वारा प्रकाशित संदर्भ साहित्य "बैंक में ऋण वसूली के उचित न्यायसंगत माध्यम' का विमोचन

दिनांक 06.03.2025 को अंचल कार्यालय, जयपुर के निरीक्षण के दौरान केंद्रीय कार्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक "यूनियन स्वर्ण धारा" का विमोचन

आपके प्रधान कार्यालय की तिमाही गृह पत्रिका "यूनियन सृजन" के जुलाई-सितंबर 2024 अंक की प्रति ईमेल से प्राप्त हुई। इस पत्रिका का आकर्षक मुख पृष्ठ साज-सज्जा प्रभावशाली एवं भाषा संपादन अच्छा है। हिंदी भाषा पर अच्छे और स्तरीय लेख है। हिंदी भाषा तथा साहित्य के लेखों के साथ क्षेत्रीय भाषाओं एवं बोलियों पर भी लेख हैं और आधुनिकता के साथ भाषा एवं तकनीक में आ रहे बदलावों पर भी चर्चा है।

देश में फैले यूनियन बैंक के विभिन्न कार्यालयों में आयोजित कार्यक्रमों की छवियों के साथ भारत सरकार, राजभाषा विभाग के नराकास की बैठकों की छवियों को भी स्थान दिया गया है। अन्य सभी छवियों के विवरणों के साथ यथास्थान अच्छा समायोजन किया गया है। कुल मिलाकर यह पत्रिका बहुत अच्छी एवं स्तरीय है।

शुभकामनाओं संहित,

डॉ. रीता त्रिवेदी

डी.आर.एम कार्यालय परिसर, विशाखापट्टणम

"यूनियन सृजन" का यह नवीनतम अंक, अपनी विषयवस्तु एवं प्रस्तुति दोनों ही दृष्टियों से अत्यंत सराहनीय है। हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रकाशित यह तिमाही गृह-पत्रिका, न केवल बैंकिंग से संबंधित तकनीकी और व्यावसायिक पहलुओं को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करती है, बल्कि साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए भी एक सशक्त मंच प्रदान करती है।

इस अंक में वित्तीय समावेशन को केंद्र में रखते हुए स्वयं सहायता समूहों, जनधन योजना, आधार सेवा केंद्र, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना तथा एफ.एल.सी. जैसे महत्वपूर्ण विषयों को सम्मिलित किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पत्रिका का फोकस समाज के अंतिम व्यक्ति तक बैंकिंग सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित करने की दिशा में है। कृषि कारोबार एवं रुसू बैंकिंग विभाग से जुड़ी शब्दावलियों को भी पत्रिका में स्थान देकर हिंदी में तकनीकी शब्दों के प्रचार-प्रसार का प्रयास सराहनीय है।

साहित्यिक पक्ष की बात करें तो काव्य सृजन, व्यंग्य लेख, परसाई जी पर विशेष लेख और प्राकृतिक स्थलों पर आधारित रचनाएँ पाठकों को न केवल आनंदित करती हैं, बल्कि एक सृजनात्मक सोच को भी प्रेरित करती हैं। डॉ. शैलेश श्रीवास्तव का साक्षात्कार और हिंदी दिवस समारोहों की झलकियाँ पत्रिका में विविधता और संतुलन का समावेश करते हैं।

कुल मिलाकर, "यूनियन सृजन" का यह अंक विषयवस्तु की प्रासंगिकता, भाषा की प्रामाणिकता और प्रस्तुति की रचनात्मकता के कारण अत्यंत सफल और प्रशंसनीय है। यह पत्रिका न केवल पाठकों को जानकारी प्रदान करती है, बल्कि उन्हें जोड़े रखने में भी सक्षम है। इस प्रयास के लिए सम्पादकीय टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

निपुण जैन

इंडियन बैंक, रायपुर

यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया की पत्रिका "यूनियन सृजन" के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

यह पत्रिका न केवल बैंक के विविध गतिविधियों, उपलब्धियों एवं नवाचारों को साझा करने का एक सशक्त माध्यम है, बल्कि यह कर्मचारियों की रचनात्मकता, विचारशीलता एवं अभिव्यक्ति को भी एक मंच प्रदान करती है। हमें विश्वास है कि "यूनियन धारा" और "यूनियन सृजन" ज्ञान, प्रेरणा और संवाद का एक समृद्ध स्रोत सिद्ध होगी तथा यूनियन परिवार के सभी सदस्यों को जोड़ने का कार्य करेगी।

इस महत्वपूर्ण पहल के लिए सम्पादकीय टीम एवं सभी सहयोगियों को साधुवाद।

ईशू चन्द्रा

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

आपकी पत्रिका "यूनियन सृजन "का अंक -4 प्राप्त हुआ । भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की दिशा में यह रचनात्मक प्रयास प्रशंसनीय है ।पत्रिका में प्रकाशित लेख व रचनाएँ अच्छे एवं ज्ञानवर्धक हैं और पाठकों के मन को मोहने के साथ उनके ज्ञान में वृद्धि कर उनको जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

वन्दना देवी

क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना, केनरा बैंक

हमें यह अवगत कराते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका "यूनियन सृजन" का अक्टूबर-दिसंबर 2024 अंक, जो कि रूसो बैंकिंग विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है, प्राप्त हुआ।

यह विशेषांक न केवल विषयवस्तु की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है, बल्कि इसकी प्रस्तुति, भाषा-शैली एवं तथ्यात्मक संतुलन भी अत्यधिक प्रभावशाली है। रूसो बैंकिंग जैसे समसामयिक और महत्त्वपूर्ण विषय पर गहन जानकारी देने हेतु संपादकीय टीम का प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

हमारी ओर से इस उत्कृष्ट कार्य के लिए आपको एवं आपकी संपूर्ण टीम को हार्दिक शुभकामनाएं एवं धन्यवाद। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यूनियन सृजन भविष्य में भी इसी प्रकार प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक सामग्री के साथ पाठकों को लाभान्वित करता रहेगा।

हमारी ओर से आपको और आपकी टीम को इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए शुभकामनाएं।

रामू तिवारी

सदस्य सचिव, नराकास (बैंक) जालंधर

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

दिनांक 16.01.2025 को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई दक्षिण के सफल निरीक्षण के उपरांत श्री भर्तृहरि महताब, उपाध्यक्ष से प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए श्री के. श्रीधर बाबु, क्षेत्र प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई दक्षिण. साथ हैं श्री अभिजीत बसाक, अंचल प्रमुख, मुंबई, श्री गिरीश चंद्र जोशी, महाप्रबंधक (मा.सं एवं रा.भा), श्री अम्बरीष कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक (मा.सं एवं रा.भा), श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक (रा.भा), श्री संजय प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा), और श्री आदर्श कुमार सिंह, सहायक प्रबंधक (रा.भा).

दिनांक 28.02.2025 को माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा क्षे. का., भुवनेश्वर का राजभाषाई निरीक्षण किया गया. श्री भर्तृहरि महताब, उपाध्यक्ष से राजभाषा नीति पुस्तिका प्राप्त करते हुए श्री निरंजन बारिक, क्षेत्र प्रमुख, भुवनेश्वर.

दिनांक 14.02.2025 को माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा सोनीपत हुडा शाखा का निरीक्षण किया गया. श्री भर्तृहरि महताब, उपाध्यक्ष का स्वागत करते हुए श्री सुभाष कुमार, उपक्षेत्र प्रमुख तथा श्री मनोज कुमार, शाखा प्रमुख,सोनीपत हुड्डा.

RNI No. MAH HIN/2016/68433

निःशुल्क वितरण हेतु

डबल डेकर रूट ब्रिज, मेघालय
नुपुर तिवारी
कें. का., मुंबई